GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0710**

Classification:

Original File No: 27

Title

B.E.L.
Projector, Equipments, Films etc.

Volume:

Running **from year: 1982** **till year: 1983**

Content:

- Equipments on Projector
- Study guide on Biblical matters
- Disputes in the G.E.L.Church
- Estimates and expenditures Concerning Udaipur, Pathalgaon Mission field.
-

Commander

1982-83

OFFICE FILE

Triple Ex-Thick

27

File No. 27.

ame B. E. L

bject Projector, Equipments, Films etc

rial Nos. ______ *to* ______

om (Month) January 1970 *to* ______

NORTH WESTERN
GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH

Bishop :
Rev. Dr. Nirmal Minz
Arch Decon :
Rev. Niranjan Ekka

Secretary :
Shri Zehabenus Lakra
Treasurer :
~~**Shri Christ Anand Tirkey**~~
Shri. P. D. Panna.

N. W. G. E. L. Church Compound
Main Road
Ranchi-834 001
Bihar India

Ref. No. 87/83/F47

Date 11.2.83

Members of the Executive Committee :

Parish Chairman of :

1 Ranchi
2 ...hapani
3 ...gangpur
4 L...ars
5 Gumla
6 Chainpur

★

Lay Members :

7 Hazaribagh
M. D. Munzni
8 Jamshedpur
Sri P. D. Panna
9 Kinkel—
Sri Elias Kujur
10 Ichkela—
Sri Jagdish Tirkey
11 Simdega –
Sri Godwin Ekka
12 Lohardaga -
Sri Falwant Kujur
13 Chatti —
Sri Monoher Minz
14 Rourkela —
Sri Belas Tigga

Rev. Dr. M. Bage,
Pramukh Adhyaksha,
So-Called K.S.S.

Dear Sir,

Yishusahay,

From reliable source we have come to know that Mr. Basant Kumar Mahto is likely to be ordained by you as a Pastor of your Minis-terium.

I would how-ever like to point out that Sri. Mahto has not passed Matriculation Examination and he has obtained a false certificate on the basis of which he was admitted in the Gossner Theological College. This fact is also known to your deputy Rev. Surender Mohan M.G. who had recommended him for admission in the Theological College from Hatia Pastorate with the knowledge of Rev. M. Tete who was then the Principal of the College.

This matter was enquired by us before posting Sri. Mahto within our Church and the same was found to be true. This fact was also admitted by Sri. Mahto in writting in presence of our Committee members and on its basis a suitable decision regarding him was taken.

2/.......

A copy of the said resolution is being sent to you for favour of your information and necessary guidance.

Thanking You,

Yours Sincerely,

Encl: As above.

(Z. B. Lakra)
Secretary,
NW - GEL Church.

Copy forwarded to Rev. Dr. C.K. Paul Singh, Acting Principal, Gossner Theological College for information.

I.

जी० ई० एल० चर्च उदयपुर मिशन क्षेत्र पत्थलगाँव

दिनांक १८।२।८३

प्रति,

डाइरेक्टर - बी० ई० एल - राँची।
- उत्तरी पश्चिमी अंचल अध्यक्ष!

महाशय!

आपको हम उदयपुर मिशन क्षेत्र के सन 1983 का भवन निर्माण एवं जमीन खरीदी आदि कामों के विषय जानकारी देते हुये उन पर अनुमानित लागत की भी प्रतिलिपि भेज रहे हैं। जो लगभग कुल मोटा लागत 43,150 रु० (तैंतालीस हजार एक सौ पचास रुपये) है।

अतः श्री मान से विनय है कि मिशन-क्षेत्र के काम को सफल बनाने हेतु ऊपर दर्शाये गये अनुमानित लागत रकम को मंजूरी देते हुये अतिशीघ्र देने की कृपा करेंगे। ताकि हम [illegible] का कार्य रूप से कर सकेंगे।

इस दया हेतु कार्य के लिये हम सदा आपके धन्यवादी बने रहेंगे।

Forwarded for need ful.
S. [illegible]
23.2.83

Recommended for payment of the balance in construction grant 1981/82
C K Paul Sah
Diffik [illegible]

निवेदक
Rev [illegible]
Supervisor
UDAYPUR MISSION FIELD
G. E. L. CHURCH, PATHALGAON
Distt-Raigarh (M.P.)

Recd
[illegible] 25/2/83

Consolidated construction and Land-Purchasing-Bill- of - Udaipur - M/F -
1983

S. N.	Particular	Amount	
1	worship house construction of - Ambapali	4,000	00
2	worship house construction of - Baigabahar	4,500	00
3	Quaters - const - of Pracharakkas - 1- Burhadand - 3,000=00 2 Piprahi - 3000=00 3, Birimdega - 3,000=00	9,000	00
4	Land Purchasing - 1 Birimdega - 2500=00 2 - Pilama - 2,500=00 3, Baigabahar - 2500=00 4 Sahayapara - 2500=00	1,0,000	00
5	House Repairing Bill - —	500	00
6	worship house Construction of - Raigarh -	15,150	00
	Total -	43,150	00

(Fourty three thousend one hundred fifty)

मीली - घर - आमकापाली - मंडली

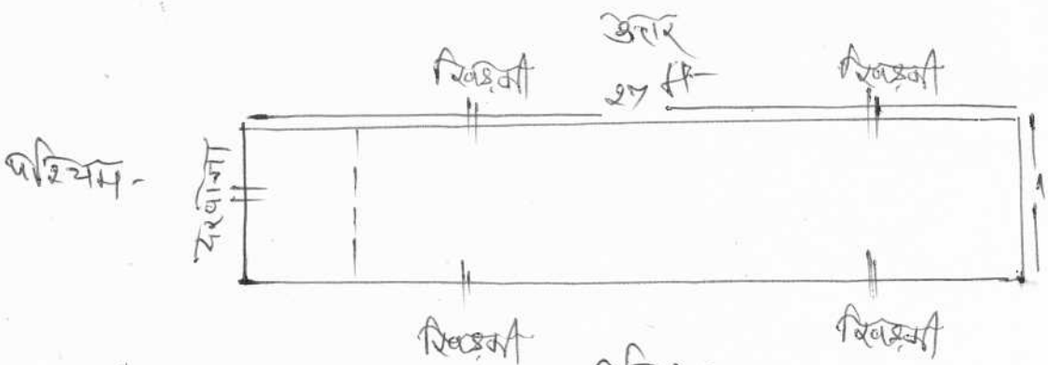

नोट - दरवाजा - 6 फि. ऊँ.
3 फि. चौ.
खिड़की - $2\frac{1}{2}$ फि. ऊँ.
2 फि. चौड़ाई

क्र.	खर्च - विवरण	रकम -	
1	ईंट - 40 नग - प्रति नग दर - 30 रु.	1,200	00
2	कोनी कोड़ - 4 नग - प्रति नग दर - 40 रु. -	160	00
3,	धरनी - 2 नग - प्रति नग दर - 250 रु. -	500	00
4	पाटी - 1 नग - दर - 150 रु. -	150	00
5	दरवाजा - 1 - चौखट सहित - —	150	00
6	खिड़की - 4 - प्रति खिड़की - 50 रु. —	200	00
7,	चूना - 10 मन - प्रति मन दर - 30 रु. - -	300	00
8,	बढ़ई खर्च - — — — —	200	00
9	- मिस्त्री - दीवाल में - — — — —	500	00
10	- कोरी - कलमा — — — — —	50	00
11	- खपरी - 7 हजार प्रति हजार दर - 50=00 रु. -	350	00
12	- अन्य मजदूरी — - —	240	00
	कुल योग -	4,000	00

कुल - 4,000=00 (चार हजार रुपये)

निर्माण - मोर - बैगाबिहार - मंडली

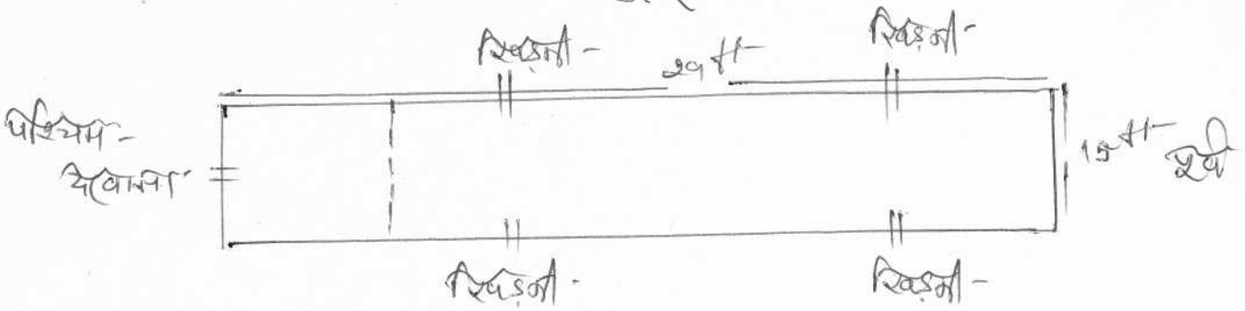

मोर - दीवाल - 6' ऊँ०
3' चौ०
खिड़की - 2½' ऊँ०
2' चौड़ाई

क्र॰	खर्च — विवरण	रकम	
1	[illegible]ड़ - 45 नग - दर प्रति नग 30 रु. — —	1,350	00
2	[illegible]ली कोंड़ - 2 नग दर प्रति नग 80 रु. —	160	00
3	दीवाल - - चारबर सहित - —	150	00
4	खिड़की - - 4 - प्रति खिड़की खर्च दर - 50/रु. -	200	00
5	बाती 12 नग - प्रति नग दर - 30 रु. - —	360	00
6	धरना 3 नग - प्रति नग दर - 250 रु. —	750	00
7	पोस्ट - 2 नग - - प्रति नग दर 125 रु. — —	250	00
8	बेड़ी - खर्च - - - - - - -	200	00
9	मजदूरी - लेवल - बनवाने में - — —	500	00
10	कांटी - किल्ला - - - - —	60	00
11	खपड़ा - 7 हजार प्रति हजार दर - 50 रु. — —	350	00
12	अन्य मजदूरी - — —	170	00
	कुल - योग -	4,500	00

कुल - 4500.00 (चार हजार पाँच सौ रुपये)

प्रचारक - घर

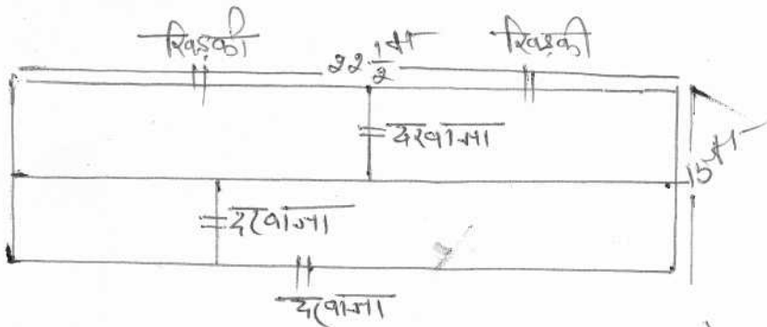

नोट — दरवाजा - 6 मी॰ लं॰
3 मी॰ चौड़ाई
खिड़की - 2 मी॰ लं॰
1¾ मी॰ चौड़ाई।

क्र॰	खर्च विवरण -	रकम	
1	ईंटें — 34 नग, दर प्रति नग - 30 रु० —	1020	00
2	पाटी — 2 नग; दर, प्रति नग, 150 रु० —	300	00
3	खिड़की — 2, प्रति खिड़की — 50=00 रु० —	100	00
4	दरवाजा — 2, — प्रति - दरवाजा — 150=00 रु०	300	00
5	मजदूरी — दीवाल के लिये — —	300	00
6	बढ़ई — मजदूरी खर्च — —	250	00
7	कोंटी - कब्जा — — — —	50	00
8	बाला - 8 मन - प्रति मन दर — 30=00 —	240	00
9	खपड़ा — 6 हजार, प्रति हजार - 50=00 —	300	00
10	अन्य — मजदूरी — —	140	00
	योग -	3,000	00
1	- बुड़हाडीह — मंडली — — —	3,000	00
2	- पीजराही — मंडली — — —	3,000	00
3	- बिरमडेगा — मंडली — — — —	3,000	00
	कुल योग —	9,000	00

(कुल नौ हजार रुपये)

जमीन - खरीदी

क्र०	मंडल - खर्च विवरण -	रकम	
1	बिरिमडेगा — — —	2,500	00
2	पीठाआमा — — — — —	2,500	00
3	बैगाबहार — — — — —	2,500	00
4	सेमरापारा — — — —	2,500	00
		10,000	00

कुल - 10,000-00 (दस हजार रुपये)

शेयर - मजिस्ट्रेट -

शेयर - मजिस्ट्रेट - बिल - ———— 500=00

500=00

कुल - 500=00 (पाँच सौ रुपये)

डिमरापुर मंडली (रायगढ़) निर्माणाधीन निर्माण —
पूर्ण करने हेतु और होने वाली खर्च (अनुमानित)

क्र०	खर्च - विवरण —	रकम —	
1	सीमेंट — 40 बोरा — —	2,600	00
2	बालू — 6 ट्रक - —	1,200	00
3	गिट्टी — 5-ट्रक —	1,500	00
4	ईंट — 5000 नग —	1,250	00
	पानी + Rod + लकड़ी — —	3,000	00
5	मिस्त्री — — — —	3,000	00
6 -	अन्य श्रम — — — —	2,500	00
	कुल - योग —	15,150	00

कुल 15,150=00 (पन्द्रह हजार एक सौ पचास रुपये)

Receipt and Payment on Account of Construction Grant for udaipur M/F year of - 1981. By. B.E.L

S.N.	Particular (Receipt)	Amount		S.N.	Particular (Payment)	Amount	
1	8 6/81 Construction grant for udaipur M/F. By. B.E.L. Chalan No - 897	3,000	00	1	Construction of worship house congrigation of - Burhadand -	754	00
				2	Land Purchaging - "	202	00
				3	Land Purchaging. Congrigation of - Piprahi -	713	00
					Closing Balance -	1,333	00
	Total	3,000	00			3,000	00

Receipt and Payment on Account of construction grant for udaipur M/F year - 1982 - By B.E.L

S.N.	Particular (Receipt)	Amount		S.N.	Particular (Payment)	Amount	
1	opening Balance -	1333	00	1	Pastors quaters const. of - Piprahi -	6,320	00
2	4 3/82 const. Grant for udaipur M/F. Chalan No - 1069 -	3,000	00	2	church - const. of - Chillanipani -	2,615	00
				3	Annual Bible class -	300	00
3	3 5/82 const. Grant Chalan No - 1083 -	6,000	00	4	worship house - const. of Raigarh -	1000	00
				5	Land Purchaging -	422	00
4	7 7/82 const - grant chalan No - 607 -	3,000	00	6	Medical Aid -	500	00
				7	Furniture -	250	00
5	Furniture grant for udaipur M/F Chalan No - 1002, -	250	00	8	Repairing of Pastors quaters of Pathalgaon -	1174	75
					Closing. Balance -	961	25
	Total	13583	00		Total	13583	00

Checked
[illegible] 24/2
Ofsecy

Rev [illegible]
Supervisor
UDAYPUR MISSION FIELD
G. E. L. CHURCH, PATHALGAON
Distt.-Raigarh (M.P.)

कुड़ाडोड़ - मंडली - गिर्जा घर निर्माण के खर्च - विवरण।

क्रमांक	विवरण	रकम	
१	१२ जोड़ा चौड़ का कीमत	६०	00
२	खिड़की लकड़ी	४०	00
३	४ मन चूना का कीमत	१००	00
४	३ हजार खपड़ा का कीमत	६०	00
५	२ किलो कांटी	१४	00
	किवाड़ तख्ता	४०	00
	बढ़ई खर्च	१५०	00
	किवाड़ लकड़ी	१२०	00
९	खिड़की लकड़ी	३०	00
१०	कब्जा कांटी	३०	00
११	किवाड़ कब्जा	१०	00
	योग	६५४	00

कुल ६५४ रु० (सात सौ चौवन रुपये) खर्च हुये।

Rev. [illegible] 4/1/83
[illegible] MISSION FIELD
G. E. L. CHURCH, PATHALGAON
Distt.-Raigarh (M.P.)

पिपराही पादरी क्वटर

	खर्च का विवरण	रु०	पैसा
१	दीवाल में खर्च — —	१५२६	००
२	लकड़ी में — — —	१२३५	००
३	खपरा में — — —	६६२	००
४	बत्ता में — — —	४५०	००
५	छड़ कब्जा कांटी में —	२६६	००
६	बढ़ई खर्च — — —	६००	००
	लिपाई पुताई — — —	२५०	००
	कुली खर्च — — -	४००	००
		६३२०	००

कुल खर्च ६३२० रुपया
छै हजार तीन सौ बीस
रुपया पाया

Parish Chairman
G. E. L. CHURCH
Piprahi (M.P.)

[signature]
6-7-82

[signature]
Supervisor
UDAYPUR MISSION FIELD
G. E. L. CHURCH, PATHALGAON
Distt.-Raigarh (M.P.)

गिर्जा घर एवं प्रचारक - क्वार्टर - निर्माण -

खर्च - विवरण - मंडली - चिकलीपानी -

सन - १९८१ - ८२ -

क्रमांक	विवरण	रकम	
१	ईमारत लकड़ी —	२६५	००
२	खपड़ा पकाने हेतु जलाऊ लकड़ी —	१००	००
३	एक भाग कांटी —	३०	००
४	बांस —	२०	००
५	[illegible] कांटी —	२९	००
६	छड़ खिड़की का	६०	००
[illegible]	[illegible]ड़ी खर्च	१२६	००
[illegible]	[illegible]ढ़री + छवाई लिपाई खर्च —	४६०	००
[illegible]	[illegible]राना मकान खरीदे —	१२००	००
[illegible]	[illegible]ार भाड़ा + मजदूरी	३१५	००
	योग —	२६१५	००

कुल २६१५ रु० खर्च हुये।

[illegible]
Supervisor 4/1/83

UDAYPUR MISSION FIELD
G. E. L. CHURCH, PATHALGAON
Distt.-Raigarh (M.P.)

उदयपुर-मिशन-क्षेत्र वार्षिक बैबल क्लास का
खर्च-विवरण - सन-1982 सितम्बर

	विवरण -	रकम	
१.	१८ किलो चावल २.५० प्रति कि. दर —	४५	००
२	२ किलो शक्कर ६ रुपये प्रति कि. दर —	१२	००
३	१० किलो दाल ३.५० रु. प्रति कि. दर से —	३५	००
४	गाड़ी किराया —	५६	००
५	पम्पलेट छपाई —	३०	००
६	४२ सामग्री खरीदी —	४२	००
७	१ किलो सरसों तेल —	१५	००
८	१ किलो मूँगफली तेल —	१८	००
९	५ ल मिट्टी तेल —	१०	००
१०	गो —	२१	००
११	१ " भाड़ा - मजदूरी —	१६	००
	योग	३००	००

(कुल तीन सौ रुपये) खर्च हुआ

Supervisor
UDAYPUR MISSION FIELD
G. E. L. CHURCH, PATHALGAON
Distt.-Raigarh (M. P.)

निर्माण - घर निर्माण - में खर्च -
रायगढ़ - मंडली -

रायगढ़ - मंडली - 1000=00

कुल 1000=00 एक हजार रुपये 1000=00
दिया गया।

Rev [illegible]
Supervisor 4/1/83
UDAYPUR MISSION FIELD
G. E. L. CHURCH, PATHALGAON
Distt.- Raigarh (M.P.)

जमीन खरीदी खर्च – विवरण – सन
१९८१ — ८२ — हिसाबवार

क्रमांक	विवरण	मंडली	रकम	
१	जमीन की कीमत —	कुड़ुडाँड़	४००	००
	पटवारी खर्च —		४०	००
	रजिस्ट्री खर्च —		१३६	००
	संशोधन खर्च —		४५	००
२	जमीन की कीमत —		५५०	००
	पटवारी खर्च —		३०	००
	रजिस्ट्री खर्च	पीपराही —	१३३	००
	200-00 713 422 1335			
	योग		१३३५	००

कुल – १३३५ रु० (एक हजार तीन सौ पैंतीस रुपये)

Rev. [signature]
Supervisor 5/11/83
UDAYPUR MISSION FIELD
G. E. L. CHURCH, PATHALGAON
Distt.-Raigarh (M.P.)

मेडिकल एड का खर्च विवरण — सन

१९८१–८२ —

क्रमांक	विवरण —	रकम	
1	जीवन ठाकुर	120	00 ✓
2	समुवेल टोप्पो —	180	00 ✓
3	गेब्री — खेस्स —	200	00 ✓
	योग	500	00 ✓

कुल 500=00 (पाँच सौ रुपये) खर्च हुआ

Rev [illegible] Lugga
5/1/82

Supervisor
UDAYPUR MISSION FIELD
G. E. L. CHURCH, PATHALGAON
Distt.-Raigarh (M.P.)

फर्नीचर- एकाउन्ट का खर्च विवरण

सन - १९८१-८२

क्रमांक	विवरण	रकम	
1	4 नग कुर्सी - प्रतिदर - ५०/	२००	००
२	1 नग टेबल -	६०	००
	योगफल	२६०	००

कुल २६०.०० (दो सौ साठ रुपये) स्वीकृत

[illegible]
Supervisor ५/१/८३

UDAYPUR MISSION FIELD
G. E. L. CHURCH, PATHALGAON
Distt.-Raigarh (M. P.)

प्राथमिक गोव पादरी कुंवार का दौरा - कुतालाते के खर्च हुवे का विवरण -

क्रमांक	खर्च विवरण	रकम	
१	छः हजार खपरा —	२६०	००
२	ढुलाई खपरा —	१२०	००
३	१ कि. कांटी -	६	००
४	१ हजार बांसा —	३३०	००
५	३० कोड़ी -	४४०	००
६	[illegible] कांटी	८	६५
	योग	१,१६४	६५

कुल - १,१६४=६५ (एक हजार एक सौ चौंसठ रुपये पैंसठ पैसे) खर्च हुये।

Supervisor [signature] ५/११/८३

UDAYPUR MISSION FIELD
G. E. L. CHURCH, PATHALGAON
Distt.-Raigarh (M.P.)

To The Director B.E.L.
G.E.L. church compound
Ranchi
Dated the 10th Dec 1982

Sir, I am giving rough estimate of the Project we desire to carry-on for the following Places. kindly consider and sanction please.

1, Rakti Parish center: (A) Remodling Present church Building
Total Rs 76000/-

" detail attached here with { (B) Pastor quarter and latrin. Rs 8500/-
(C) Surrounding the semetree and Tree Palantation Rs 1000/-

Total Rs 85500

Jagnathpur Parish center: -
(A) About Two acres land Purchage West side beyond the church compound Price Rs 5000/-
Registeration etc - - - - Rs 1000/-
(B) 15 feet diamater digging of a Well - - - - Rs 6000/-
(C) Surrounding the area with Burbed wire Rs 2000/-

total Rs 14000/-

3, Jampur Parish center: -
(A) about 25 decemal land Purchage. Price with Registeration Rs 2000/-
(B) construction of a Pacca Building church and Pastor quarter - - Rs 10000/-
(C) Surrounding the area - - - - Rs 2000/-

Total Rs 14000

Consolidated expence of the above
(1) for Rakti Parish center - - - Rs 85500/-
(2) Jagnathpur Parish center - - - Rs 14000/-
(3) Jampur Parish center - - - Rs 14000/-

113500/.

(Rupees one lac thirteen thousand five hundred only)

[signature]
Supervisor
S.E. Anchal Mission field
10-12-82

To,
The B.E.L. Director
G.E.L. Church Ranchi.

Through, the Supervisor
S.E. Anchal Mission Field
Chaibasa.

Subject:— About the rebuild the church building at Nakti Parish Centre.

Dear Sir, Humbly we request you to allow us to rebuild the church building and the pastor quarter and the Letrine house at Nakti. We like to give you the following reasons:—

(1) Nakti Parish Mission Field area is growing up in the member of Christian members rapidly.
(2) Now there are twelve Congregations surrounded the Nakti Parish centre.
(3) Nakti Centre is by the near of Ranchi to Chaibasa main Road after the Tebo Ghat in the plain area and the place is beautiful.
(4) This one is the first Mission Parish of S.E. Anchal Mission and nearest Mission Field from Ranchi. So, our former Guests visit Nakti time to time.
(5) In future Nakti is the suitable place for Pastoral and Mission work of the Congregations autonomously.
(6) Nakti Congregation is growing up as well other Congregations. Now there 30 christian Families at Nakti.
(7) Present church house is small and made of clay bricks and the wall is Cracked down up to bottom many places and the wall is washing down every year and wood of the roof have eaten white by insects.

Therefore we all congregations of the Parish and specially, the Nakti Congregation request you to help us to rebuild the church building newly strongly and the big one and the Pastor quarter with Litrine house and grant us the ~~m~~ money help from G.E.L. and so we are sending you our plan and bugg..t of new church building and the t...r quarter with Letrin.

We shall be ever gratful to you for this help.

yours Obedientily
Rev. Hemant Hansda
Parish Chairman
Nakti
G.E.L. Church

3rd Dec., 1982,

सेवा में,

बी० ई० एल० डाइरेक्टर
जी० ई० एल० चर्च रांची।

द्वारा – सुपरवाइजर
पश्चिम – पूर्वी आंचल सिसानिकेड
– पाईबासा।

विषय :– नकटी पेरिश केन्द्र में एक स्थायी मजबूत पक्का गिरजा घर बनाने के संबंध में।

महाशय,

नकटी पेरिश में मसीहियों की संख्या दिनों दिन बढ़ रही है। इसलिये नकटी पेरिश केन्द्र भविष्य में भी बना रहेगा और बढ़ता जायगा। अभी जो गिरजा घर बना है मिट्टी का है और अभी दीवालों में कईजगह दरारें पड़ गई हैं। इसको गिराये बिना मरम्मत असम्भव है और फिर छत का लकड़ी भी बरबाद हो गया है। इस साल इसी तरह रहने से गिरने की भी सम्भावना है। मण्डली द्वारा प्रति साल मरम्मत का काम तो होता है लेकिन अभी तो मरम्मत में अधिक खर्च की बात है।

अतः आप से नम्र निवेदन है कि इस गिरजे घर को नये सिरे से पक्का, मजबूत बनाने के लिये हमें आर्थिक योगदान देने की महान कृपा करें। हम ने मण्डली में इस गिरजा घर बनाने के संबंध में इस प्रकार की योजना और अनुमानित खर्च ब्योरा तैयार किया है जिसका विवरणी साथ में संलग्न है।

आप के विश्वासी गण

1 मण्डली सचिव [signature] 6.12.82
2 मण्डली चेयरमैन
(3) मण्डली पंच
4 " "

नकटी पेरिश केन्द्र का गिरजा घर की योजना

(१) वर्तमान गिरजा घर के चारों ओर (बाहर से) नींव डाला जाएगा।
(२) नींव सीमेंट ढलाई होगा १' (एक फीट)
(३) जमीन से नींव का गहराई करीब ३' (तीन फीट)
चौड़ाई " २½' (अढ़ाई फीट)
(४) गिरजा घर का लम्बाई - ५५' (पचपन फीट) बाहर-बाहर।
चौड़ाई २८" (सत्ताइस फीट) " "
दीवाल का मोटाई २' (दो फीट)
" " ऊंचाई १०' (दस फीट) अगल-बगल।
(५) सम्पूर्ण दीवाल पत्थर का होगा और सीमेंट जोड़ाई होगा।
(६) चखना लोहा का, जंगी भी लोहा का ही रहेगा। जिसपर चार धरना
(७) धरना के बीच में बहरी दीवाल में पीलर होगा। ~~चार~~ रहेगा।
(८) बत्ता लकड़ी का।
(९) छत चदरा टीना का और उसके उपर खपरा होगा।
(१०) मुर्दुन में छत दोनों तरफ दीवाल के साथ पराफिट होगा।
(११) मूल दरवाजा के उपर मुर्दुन में (पश्चिम में) लोहा का बड़ा क्रूस होगा।
(१२) मूल दरवाजा के सामने बरन्दाह के समान पोर्च होगा जो आधा दीवाल से घेरा रहेगा। अगल-बगल में दरवाजा होगा।
(१३) बेदी (पूर्व की ओर) पाँच फीट लम्बाई अढ़ाई फीट चौड़ा होगा।
(१४) पीछे की ओर अलमीराह का रूप होगा दीवाल में एक क्रूस रहेगा।
उपदेश मंच रहेगा जिसका ऊंचाई ४' (चार फीट) उसके उपर लकड़ी का घेराओ रहेगा।
(१५) एक बप्तीस्मा दानी रहेगा जिसका ऊंचाई २½' (अढ़ाई फीट) सीमेंट का रहेगा।
(१६) मूल दरवाजा के अलावे बेदी तरफ उत्तर की ओर और एक दरवाजा होगा। जो मूल दरवाजा से कुछ छोटा रहेगा।
(१७) खिड़की अगल बगल आठ ~~सात~~ ~~७~~ नौ, बेदी में पूर्वी दीवाल में (क्रूस के अगल बगल) दो खिड़कियाँ रहेंगी। कुल
(१८) ग्यारह खिड़कियाँ ३½' ऊंचाई २½' चौड़ाई।

जी० ई० एल० चर्च नक्शा

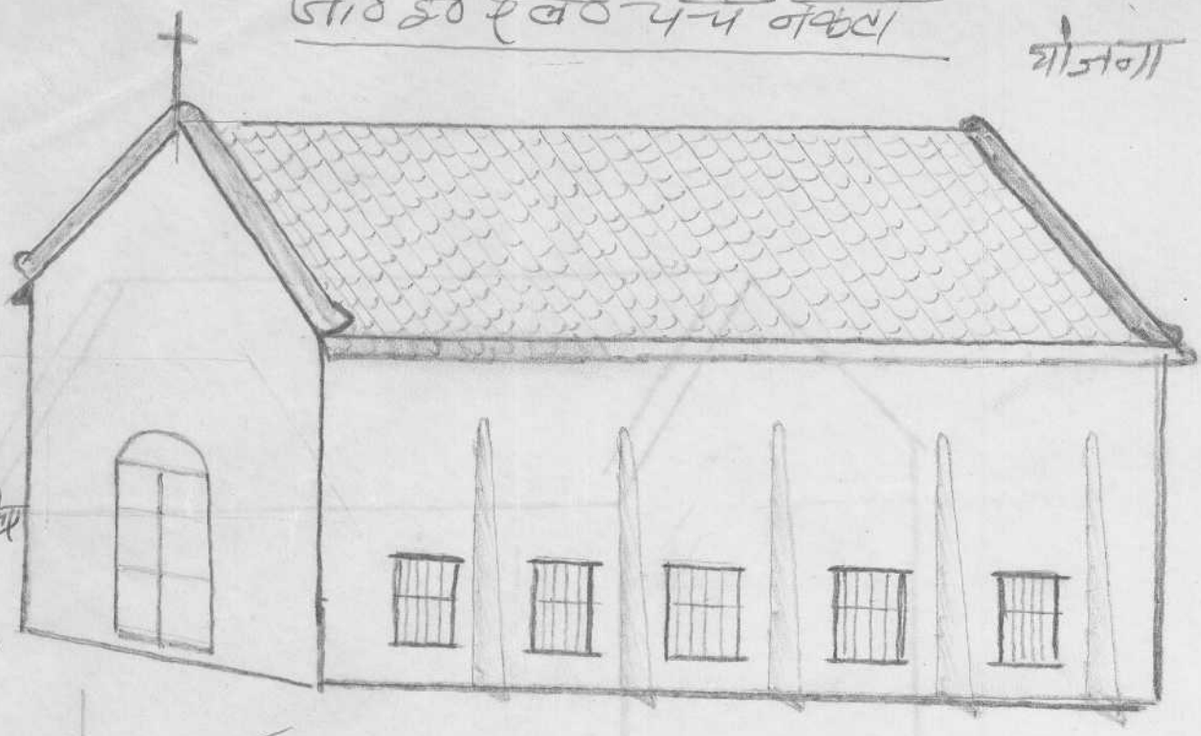

योजना

पोर्च

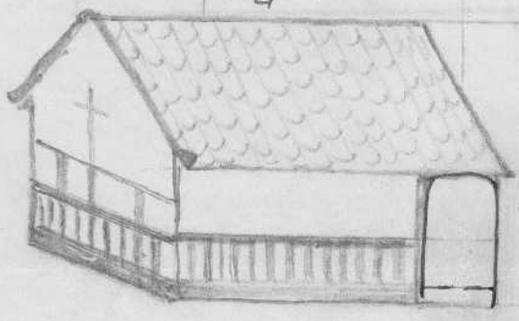

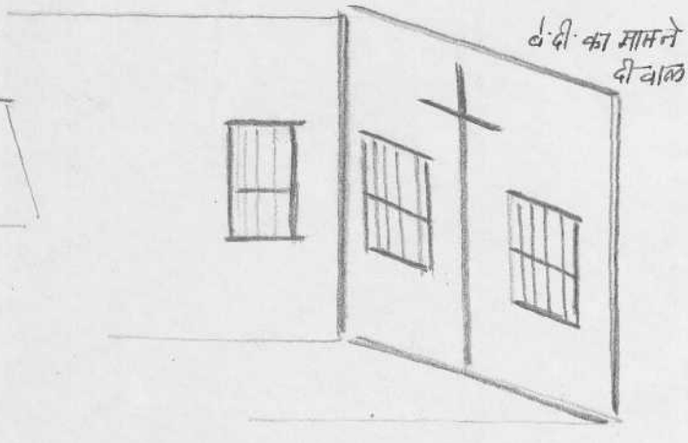

वेदी का सामने भाग

वेदी का सामने दीवाल

वेदी का पीछे भाग, जो सेल्फ के समान होगा।

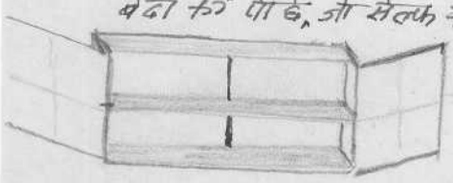

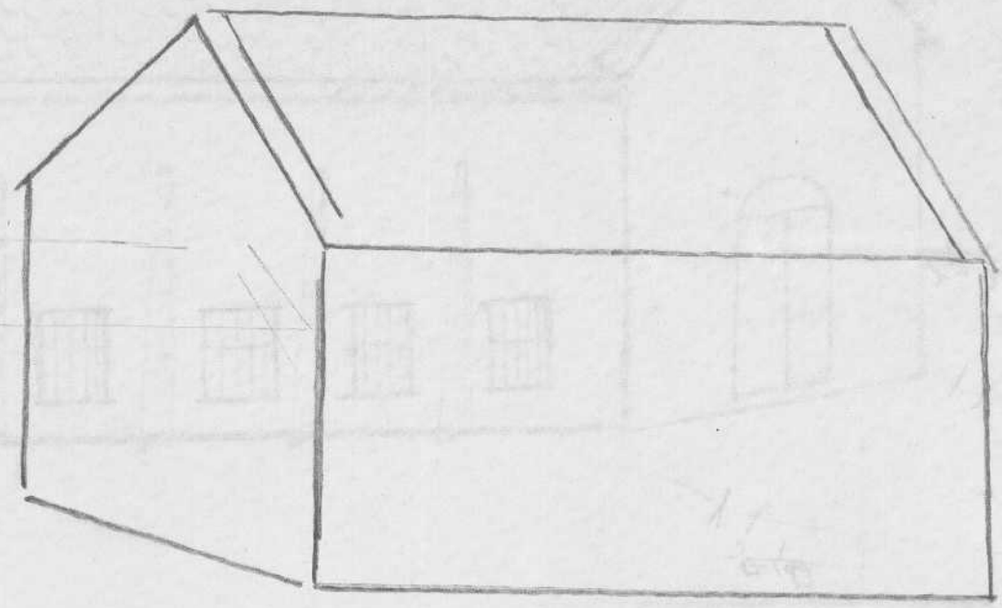

नकटी में नया पक्का गिरजा घर बनाने में
अनुमानित खर्च ब्यौरा।

1, गिरजा घर 55 फीट लम्बा और 27 फीट चौड़ा कंकरीट सिमेंट ढलाई में खर्च — Rs. 5,000/-

2, पत्थर तोड़वाने में मजदूरी खर्च — Rs. 5,000/-

3, पत्थर लाने में मजदूरी खर्च — Rs. 5,000/-

4, सिमेंट और बालू खरीद लाने में — Rs. 10,000/-

5, दीवाल जोड़ाई मजदूरी खर्च — Rs. 5,000/-

6, 4 गो लोहा चैनल जोगी तथा अन्य लोहा सामान खरीद लाने में — Rs. 5,000/-

7, चदरा टीन छत के लिए खरीद लाने में — Rs. 25,000/-

8, टीन के ऊपर छाने के लिए कपड़ा बनवाने में — Rs. 2000/-

9, 2 दरवाजा और 11 खिड़कियाँ जड़वाने में खर्च — Rs. 2000/-

10, वेदी, फुलपिट और स्नान पात्र बनवाने में खर्च — Rs. 5,000/-

11, दीवाल, फर्श पलस्तर पोताई आदि में खर्च — Rs. 5000/-

12, अन्य खर्च — Rs. 2000/-

Rs. 76,000/-
(Rupees Seventy Six thousand only)

Geo. Hansda,
Nakti,
3-12-82

20 x 2
40 x 3
120 x 250
25000

Recomended and forwarded to the Director B. E. L for needful

[illegible]
Supervisor
10/12/82

2, पादरी डेरा और पैखाना घर

वर्तमान पादरी डेरा और प्रचारक डेरा को कुछ ऊँचा किया जाय। घर का फर्श बरसात में नमी होता है. अतः नमी से बचाने के लिए फर्श में पत्थर बिछाया जाय, खिड़की दरवाजा में आवश्यक परिवर्तन किया जाय। और उसी लगातार में गेस्ट रूम और आफिस रूम बनाया जाय। और कम्पाउण्ड के अन्दर एक पैखाना घर बनाया जाय। गिरजा घर और पादरी डेरा के बीच एक बैठकखाना बनाया जाय जिसमें एक ओर समय-समय पर पेरिश का मेस भी चले। कम्पाउन्ड को कांटेदार झाड़ियाँ रोपकर घेरा किया जाय और पश्चिम ओर नदी तरफ साग सब्जी का सुन्दर बगान लगाया जाय और कम्पाउड में फलदायी गाछ वृक्ष रोपा जाय।

अनुमानित खर्च :-

1, पादरी डेरा और प्रचारक डेरा रिपेयर्स एवं मरम्मत में —— Rs. 2,000/-

2. आफिस और गेस्ट रूम बनाने में —— Rs. 3,000/-

3, बैठकखाना और बावर्चीखाना बनाने में — Rs. 1,000/-

4, पैखाना घर बनाने में Rs. 2,000/-

5 मिशन कम्पाउन्ड के घेरा गाछ वृक्ष लगाने में — Rs. 500/-

Rs 8,500/-

Eight thousand Five hundred Rupees only

Rev. H Hansda.

3rd Dec. 1982

Recommended and forwarded to the Director B.E.L. to meet R[illegible]

Supervisor

10/12/82

3. कब्रस्थान जमीन बांस रोपन

नकटी में कब्रस्थान के नाम से ८५ डीसमिल गोड़ा जमीन खरीदा गया है। बहुत बड़ा जमीन है। हम उसमें बांस रोपना चाहते है, क्योंकि उस गोड़ा में बांस अच्छा होगा और भविष्य में बांस से कलीसिया को अच्छी आमदनी होगी। एक ओर कब्रस्थान के लिए थोड़ा जमीन छोड़ देंगे। कॉंटेदार झाड़ी रोपकर उस गोड़ा का घेरा किया जाय।

अनुमानित पूंजी —

1. गढ्ढा ~~खोड़ने में और~~ घेरा लगाने में — Rs. 500/—
2. जंगल से बांस पौधा कोड़ लाने रोपने और कुछ महीनों तक हिफाजत करने में — Rs. 500/—

Rs. 1,000/—
(One thousand only)

Recommended and forwarded to the director B.E.L for needful
[signature]
Supervisor

Rev. H. Hansda.

G. E. L. Church. Karbi Anglong.
Plan + Estimate of Fishery Farm, Rangagora.

Discription of Fishery Farm

Source of Finance

Length - 400'
Breadth - 50'

(1) From KSS (B.E.L.) grant - Rs. 15000.00

Expenditure -

1. Construction of dam 50' Rs. 9000.00
2. Cleaning of Tank - Rs. 3000.00
3. Fencing Expenses - Rs. 6000.00
4. 5000 Fish Seedling - + Rs 2000.00
Total - Rs. 20,000.00

(2) donation raised from Public by Kind or Labour - Rs 5000.00

Total Rs 20,000.00

Income expected by Sales Proceeds of 3000 Fish Rs 15000.00 Per year.

R Timung 15/12/82
Rev. R Timung
RANGAGORA G. E. L. CHURCH
P.O. JAPRAJAN.
Dist. Karbi Anglong (Assam)

The site plan was inspected by the Anchal officers along with me. It is a natural long pond suitable for fishery farming. A dam is to be constructed. It may be an easy income yealding project. The plan is recommended for favour of approval and necessary action by the KSS (BEL)

Kerlepreo
15/12/82

G.E.L. CHURCH ASSAM ANCHAL
Adhyaksh
TEZPUR-ASSAM

Statement of A/c for Hostel varanda, pucca Ring Well and pucca Latrine of Rangagora Karbi Anglong (Assam)

Receipt

(I) From K.S.S. Ranchi for varanda — Rs 5500.00

(II) Do — — Rs 5000.00

Rs 10500.00

(III) Do for Latrine & Ring Well — Rs 16100.00

Rs 26600.00

Expenses

(1) Latrine:-

(I) Cement — Rs 1080.00

(II) C.I. Sheet Rs 508.00

(III) Brick — Rs 1695.00

(IV) Sand — Rs 240.00

(V) Meterial + Rod — Rs 1564.71

(VI) Timber — Rs 150.00

(VII) Making charge — Rs 1750.00

Total — Rs 6987.71

(2) Ring Well:-

(I) Cement — Rs 1172.00

(II) Rod & Meterials — Rs 460.00

(III) Sand — Rs 250.00

(IV) Brick — Rs 375.00

(V) Making charge — Rs 2000.00

Total Rs 4257.00 Rs 4257.00

(3) Hostel varanda —

(I) cement — Rs 925.00

(II) Sand — Rs 240.00

(III) Brick — Rs 1800.00

(IV) C.I. Sheet Rs 2396.00

(V) Timber — Rs 1500.00

(VI) Hostel door repairing — Rs 216.00

Rs 8634.50

Total Rs 19879.21

(4) Miscl Exp. 3 times up-down to Diphu for cement — Rs 300.00

Rs 20179.21

Balance with General A/c 6420.79

Rs 26600.00

Rectified
3/12/82
Rev. K. Jimuny
RANGAGORA G. E. L. CHURCH
P.O. JAPRAJAN.
Dist. Karbi Anglong (Assam)

This statements of a/c regarding construction works, were verified with the cash book and found correct.

Sd/-
14/12/82

G.E.L. CHURCH ASSAM KACHAR
Adhyaksh
TEZPUR—ASSAM

GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR
& ASSAM
North western Anchal

Office: Khorhatoly
Old H.B.Road
P.O.Bariyatu
Ranchi -834-009

To,

The Director
Gossner Mission
Berlin.

Dear Sir,

Yishusahay. Please find enclosed a copy of the letter given to you at our request by our Hon'ry Director, Rev. Dr.J.J.P.Tiga on 11.3.1980. We the Officers of the Anchal Sabha do endorse the same and request you to kindly keep us in your heart and mind.

Yours in the Lord.

Jiwan Lakra.
12.4.80.
(Jiwan Lakra).

Secretary
NORTH WESTERN ANCHAL
G. E. L. CHURCH.

GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH IN
CHOTANAGPUR & ASSAM

NORTH WESTERN ANCHAL,

Khobhatoly
Old H.B.Road
P.O. Bariyatu
Ranchi-834 009.

The 10th March '1980.

The Director,
Gossner Mission
Camp at Ranchi.

Dear Sir,

The Office of the K.S.S. did not inform us but from the most reliable sources we have come to know that you are arriving here tomorrow along with Dr. Grotthaus. As we welcomed you in November 1978 we do so now most heartily welcome you this time, and we wish you all the best.

We know that Rev. P.D.Soreng has completely ignored us and we shall have no opportunity to have a look at you not to speak af a time to have conversations with you, we are all the more compelled to place before you what we feel you must know. The so-called North West G.E.L.Church have been making a propaganda that you are coming to divide your possessions between the two brothers, the older and the younger. We believe Rev. P.D. Soreng and his associates are preparing to make you believe and declare that what they say and do are all proper, valid and well and that you may once for all accept and approve Rev. Soreng to be the Pramugh Adhyaksh beyond question, forgetting your hesitations and doubts about it some months ago.

We are here to express to you our deep concern for the well being of the G.E.L.Church, as a whole, the well being of the Oraons and of their Anchal in particular.

contd. 2.

I. The Present Condition of the G.E.L. Church:

We think that this can be seen through a mirror known as Court Cases which will, when enumerated, show us (1) Relationship between the members of Church, (2) Relationship between Officers and Employees, (3) Relationship between the members of the K.S.S.

1. Rev. Dr. N. Ekka, Dr. N. Minz and others against Rev. S. Barla (now Rev. P.D. Soreng) and others of the K.S.S. cases started in about July 1977 at Ranchi Court.
2. Rev. Dr. N. Minz against the Pramukh Adhyaksh and the Members of the Governing Body of the Gossner College-case started in about October 1978 at Ranchi Court.
3. Rev. N. Ekka through his representatives against Rev. P.D. Sorng through his representative regarding Church at Karandih-case started in about December 1979 at Simdega Court.
4. Rev. N. Ekka through his agents against Rev. P.D. Sorng through his agents regarding hostel at Gumla- N. Ekka won in the lower court and now the appeal is in the High Court at Ranchi.
5. Secretary North Western Anchal against Rev. P.D. Soreng and 5 others in the court at Ranchi.
6. The Headmaster, Lutheran Boy's Middle School against Rev. P.D. Soreng and his Managing Committee.
7. The Headmistress Lutheran Girl's Middle School, Ranchi against the Rev. P.D. Soreng and his Managing Committee.
8. Case regarding lease of a property at Chaibasa in the court between two parties one supported by Rev. P.D. Soreng and the opposite party supported by Mr. Paulus Topno. The case is likely to go up to the supreme Court Rev. Soreng and Mr. Topno are involved in this Court case against one another and the parties concerned are being supported by these two officers of the G.E.L. Church the One against the other.

contd. 3.

Besides these there are many cases here and there in the local Police stations.

II. The so-called North West G.E.L.Church:

It is reliably learnt that Rev. Dr. N.Minz has been nominated to be the bishop. They have passed a new Constitution for themselves and it is available in the printed form. People say that their number is dwindling but in their words and actions they show that they are strong and active. They were for a time rejoicing to hear that the Gossner Mission was going to send the Mission Field Money to them but this has perhaps been a mistake on their part, rather they are now at a loss that after staying with them until about October 1980, Rev. Obed and Rev. Dharmdas Tiga along with their subordinates surrendered themselves, to Rev. P.D.Soreng after suffering non-payment of their salaries for several months and after it became clear that America was debarred from paying them on the ground of organisational technicalities. One however cannot but feel the loss of goodwill and long standing friendship between the Gossner Church and the United Evangelical Lutheran Church in America. This whole matter is not immune from politics.

III Disappointments and shocks in more than half of the Church.

a. Madhya Anchal: There were several complaints filed to Rev.P.D.Soreng against the election of the Madhya Anchal held in October,1978 and in subsequent elections but they were all suppressed. The grievance is that one Ilaka out of two Ilakas namely the Panisani Ilaka and one member of the Anchal Sabha from Simdega were completely kept out in the elections and therefore they boldly repudiate the elections held and down not

contd. 4.

accept Mr. A.Lakra as Secretary, Rev. Martin Tete as its Adhyaksh and other representatives to the K.S.S. and the Central Boards. According to Panisani Ilaka they are all illegal and hence they refuse to accept Mr. A.[illegible]ra as the Secretary of the K.S.S. It is also [illegible]retted that all their representatives made in writing have been dishonoured by Rev.P.D.Soreng and cast into the waste-paper basket.

b. Assam Anchal: Reports have been heard that at least one retired paster of over 65 years of age was allowed to take part in the Anchal Elections held in 1978. The whole electoral body became illegal and therefore all elections illegal making the election of Rev. J. Topno as Adhyaksh illegal and his membership in the K.S.S. illegal. Similarly all other representatives elected by that illegal body to K.S.S. and central Boards are illegal. It is shocking that this was done deliberately overriding the rules. Letters from Panisani Ilaka and from the member of Simdega may be seen in our files.

c. South Eastern Anchal: Reports have been given that at least two retired pastors of over 65 years of age were allowed to participate in the Anchal elections held in October 1978. Hence elections were illegal and therefore the election of Rev. Dr.Bage is illegal and all the rest. Their being members of the K.S.S. and the Central Boards are all illegal. This was done deliberately overriding the rules.

d. The Headquarters Congregation: As soon as Rev.P.D. Soreng assumed office at Ranchi, against the rules of the Church and its constitution but he dissolved the duly elected Mandly Panch and nominated members

contd. 5.

according to his own choice. This was altogether unconstitutional and un-democratic, directly striking the whole system of the Autonomous Church at its very root. He has established an arbitrary, highhanded and un Lutheran system. He has ruled out all rooms for conscience and conscientious thoughts and actions. It is the duty of the President of the Church to safeguard and its constitution and autonomy of the Church. In this case he has broken the autonomy of the Headquarters Congregation (which is considered to be the mother Church (MATA MANDLI) of the whole Gossner Church).

The North Western Anchal is organically related to this Headquarters Congregation because several Manlies e.g. Pathalkudwa, Kokar, Bariatu, Hatma are in intimate connection with it, the schools are common, the cemetry is common. Therefore we have a right to speak out when something wrong like this (dissolution and nomination of members of the Mandli Panch) takes place.

It is now about a year and a half since the duly and constitutionally formed Mandli Panch was dissolved by Rev.P.D.Soreng and he has not cared to form a duly elected Mandli Panch. The present Mandli Panch is illigal and unconstitutional and therefore all its actions are to be treated as null and void. It has no legal right to function.

IV, The Kendriye Salahkari Sabha:

As pointed out above all representatives from Madhya Anchal, South Eastern Anchal and the Assam Anchal have no legal status. Hence out of 20 elected members from 5 Anchals 12 are illegal, only 8 may be (the cases of some of these are also under question mark) said to be members of the K.S.S. and of the 5 Anchal 3 Anchals are without representation. And out of these 8 the Adhyaksh of the N.W. Anchal has never found place in the K.S.S.

contd. 6.

Thus only 7 remains. How can these 7 claim to be a legal K.S.S. and how can their decisions stand as legal and valid ? ~~xxx~~ Can these ~~x~~ 7 speak authoritatively on behalf of the whole G.E.L.Church ? We humbly and fervently bring it to the notice of all who have anything to do with the G.E.L.Church.

As far as we are concerned we have to state that as early as 26.6.1979 we brought this matter to the notice of the ~~x~~ Pramukh Adhyaksh. Until now he has not sent any reply to us. In the same letter we said "We assure you that we shall obey all constitutional, legal and just orders of the authorities but not otherwise and we have the right to question whether an order is thus or not".

It must not be forgotton that we belong to the North Western Anchal of the G.E.L.Church. Without us no Officer of the Church can be elected or appointed and without us no K.S.S. or its Central Boards can be constituted. It has been noticed that some meetings have been held without inviting our Secretary and the members of the Boards have not been invited for some of the meetings. All these meetings were only private meetings of Rev. P.D.Soreng having no legal status. We unhesitatingly affirm that we want one K.S.S. of all the five Anchals and in doing so the freedom and choice to form the Anchal Sabha remains with the Anchals. Mr. J.Lakra is the duly elected Secretary and without him there can be neither a North Western Aanahal Sabha nor any representation from the N.W.Anchal to the K.S.S. and the central Boards and without Mr. Jiwan Lakra there is no K.S.S. We deplore all the actions of Rev. P.D.Soreng ignoring us and our Anchal Office. We have always respected him as our Pramukh Adhyaksh but he has not given us the honour due ~~xx~~ to our Anchal. We retain our right of citizenship to question his actions ~~x~~ in the Church and if necessary in the court of law.

contd. 7.

V THE NORTH WESTERN ANCHAL: On 13.3.77 Rev. Niranjan Ekka claimed that the whole of the North western Anchal of the G.E.L.Church declared to become a new born independent Church Dr. J.J.P.Tiga and others opposed this as soon as they came to know about it. After taking legal advice a meeting was convened on 27.9.1977 a new N.W.Anchal Sabha of the G.E.L. Church was reconstituted with Dr.J.J.P.Tiga as Adhyaksh, Mr. Jiwan Lakra as Secretary, Rev. C.H.Tirkey as Up-Adhyakshand Mr. Paulus Topno as Treasurer. They functioned steadily and successfully making progress after progress. But during the regime of Rev. P.D.Soreng ever since he came to office a move started to divide this newly organised Anchal Sabha. Finally He succeeded in winning Rev. C.H.Tirkey and Paulus Topno on his side and prompted them to start forming a new Anchal Sabha Of the four officers of the Anchal Sabha as stated above two belong to the Majority Community who dominate and dictate the affairs of the G.E.L.Church.It was very natural and alluring for Rev. C.H.Tirkey up-Adhyaksh and Mr. Paulus Topno Treasurer of the N.W.Anchal to at once join that great majority Community in the K.S.S. they themselves being members of that Comunity. They left the two officers of the Anchal Dr. J.J.P. Tiga/and Mr. Jiwan Lakra Secretary - both of the minority Community. Thus Rev. Soreng took away the two Munda Officers to work out his plan of dividing the Oraon Anchal. These two Munda Officers started holding meetings in the home of one of them (Mr. P.Topno's house). The two Oraon Officers who were deserted by them continued to function as before in the Anchal Sabha organised on 27.9.1977 and confirmed on 11.10.1978. Rev P.D.Soreng gave all support to these two Munda officers and did everything to weaken and reduce to nothing the two Oraon officers of the Constitutionally and duly organised North Western Anchal. He talks about a Tribunal whose members are still unknown to us and to the whole minority community. It is

contd. 8.

also doubtful if there is any member in that Tribunal from the Minority Community. The behaviour of this so-called Tribunal has been most ~~xxxxxx~~ unsympathetic, unconstitutional and unChristian. The Executive was compelled to pass a resolution to file a case in th[illegible]rt seeking justice and equity because the very organiz[illegible] expected to do justice did injustice and injury to the [illegible]rth Western Anchal in general and to Mr. Jiwan Lakra and Rev. M.P.Ekka in particular. The matter of the North Western Anchal is now under consideration of the Court.

After taking away the two Munda Officers from the Anchal Sabha Rev. P.D. Soreng began to misguide and take away other members of the Anchal Sabha. He used the pen, paisa and power of the Church to divide the Ilakas also. He found it very convenient because the Oraons in the newly organised N.W. Anchal wanted to be most liberal and non-tribal in their attitude, behaviour and elections. But Rev. P.D. Soreng and his associates took an advantage of this and succeeded in dividing the Anchal. There are four Mission fields in the N.W. Anchal area/ viz; Surguja, Udaipur, [illegible]uria & Ichkella The four superintendents have joined Rev. P.D. Soreng because he gives them money from the Evengelistic funds. Of the ~~11~~ 13 Ilakas Chairmen ~~xxx~~ 4 belong to the majority community (Rev. N.M. Surin Rev. S. Mundu, Rev. C.H. Tirkey, ~~Rev. S. Mohan M.S.~~ and Rev. P. Hansdak) 2 belong to the community of Rev. P.D. Soreng (Rev H. Kullu and Rev. I. Kiro) Rev. P.D. Soreng has succeeded in winning over these 6 Ilakas chairmen, not the people, - thus out of 13 there remain 7 Ilakas. Of these 7 Ilakas 2 (Chainpur and Kondra) are entirely with Rev. Niranjan Ekka. Thus only 5 Ilakas remain with the 2 Oraon leaders (Rev Dr. J.J.P. Tiga and Mr. J. Lakra) All the rest of those who had joined the newly reorganised N.W.A. have been swallowed by the Majority community, and to annihilate the N.W. Anchal.

Although these 4 Suprintendents of Mission Fields and 6 Ilaka Chairmen in all 11 ~~xxxx~~ have seemingly joined Rev. P.D.

Soreng because he has pen, paisa and Power, the North Eastern Anchal claims its identity and autonomous existence as offered by the Church's constitution. All the activities of Rev. Soreng have been directed to Divide and weaken us. The hearts of the thousands and ten thousands of members of these 4 Mission fields and 13 Ilakas are groaning under Rev P.D.Soreng. In conclusion we beg to state that under the regime of Rev. P.D.Soreng the North Western Anchal has suffered bitterly and has been severely wounded. In the practicing and applying of the church's Constitution its rules and regulations the K.S.S. headed by Rev. P.D.Soreng has done injustice after injustice to the North Western Anchal while undue, unauthorised and un-intelligible favours have been shown to the Assam, South-Eastern and Madhya Anchal violating the Church's Constitution clause after clause. Rev. Soreng has also debarred you and Dr. Grothhaus from visiting our North Western Anchal and has made you skip us altogether He has made you discriminate against the whole Oraon area. Dabadih has never been with us. Surguja and Udaipur are Mission Fields taken out of our hands. Democracy has come to an end and directorship and highhandedness has become the rule of conduct and administration. If the Gossner Church has to be used for the Glory of God and for the extension of His Kingdom, all the lowlessness, atrocities and communal exploitations must be brought to an end.

Our Stand

Our stand in the situation created by Rev. Niranjan Ekka and other friends is made absolutely clear as published in the Jan-Feb. 1980 Gharbandhu pp. 19-21. From the tour programme of Director Kriebel and Dr. Grotthause published in the same issue of the Ghar Bandhu it is quite evident that a whole discrimination has been made against the whole Oraon Community of the Gossner Church. If the Gossner Mission has left the Oraons as it appears from the programme of the Director

contd.

we Oraons are not responsible for this separation of the Gossner Mission from us Oraons. Our love and respect for the Gossner Mission is as firm and permanent as we have declared it to be as the mother of its daughter, the Gossner Church. Last time we received the Director of the Gossner Mission and its Vice President with deep sense of love and respect on their arrival at the aerodrome, at Tiga and Bataikela in Madhya Pradesh. We have always welcomed friends and group of friends from Germany whenever we got an information. We sent our response to the Gossner Mission to its pastoral letter on the eve of our Autonomy celebration last July addressed to ten leaders of the Gossner Church. We believe we have kept up our cordial relationship with the Gossner Mission as best as possible. If the Gossner Mission has chosen to leave us we can do nothing else but to feel that our mother has left us as orphans. But on our part we shall always remain grateful and indebted to the Gossner Mission for the ~~xxx~~ heritage we have got from ~~xxxx~~ Gossner Mission.

We still believe firmly and ardently that our Risen Lord has not left us. He is with us according to his precious promise., "And lo. I am with you always, even unto the end of the World. Amen."

Fraternally Yours

J. J. Tiga 10.3.80

(Rev. Dr. J.J.P. Tiga)
Hon'ry Director
At the request of the Officers and Members of the North Western Anchal.

CC. 1. President Gossner Mission Berlin.
2. President, G.E.L. Church Ranchi
3. Secretary, North Western Anchal
4 Rev. Mukti Prakash Ekka Adhyaksh, N.W. Anchal
5. Sd/- Rev. A.M. Tigga
6. Sd/- Marshal Kulla
7. Jiwan Lakra
Secretary
NORTH WESTERN ANCHAL
G.E.L. CHURCH

Endorsed
1. C. D. Kujur Treasurer.
2. L. Kerketta
3. [illegible] (Rev.) Rev. Up-Adhyaksh.

Gossner Evangelical Lutheran Church

in Chotanagpur & Assam

NORTH WESTERN ANCHAL

ADHYAKSH :
Rev. Mukti Prakash Ekka

UP-ADH[illegible]AKSH :
Rev. D[illegible]el Minz

TREASURER :
Mr. C. Dawles Kujur

HONY. DIRECTOR :
Rev. Dr. J. J. P. Tiga
M. A., S. T. M., Ph. D.

OFFI[illegible]ETARY:
Mr. J[illegible]m Tiga

SECRETARY :
Mr. Jiwan Lakra B. A.
Khorhatoly, O. H. B. Road
P. O. Bariatu, Ranchi-834009

UNDER CERTIFICATE OF POSTING

Ref. ____________ Date 7.10.80

The Pramukh Adhyaksh,
G.E.L.Church.

Dear Sir,

No notices for meetings of the Kendriye Salahkari Sabha has been sent to me after the meeting of the Kalisha Sangh held in October, 1979. It means that no meetings have been held. If, however meetings have been held without a notice to me they were secret and private meetings without any legal status.

Please note that I protest against them. We have been taught that we are not under any Pope. We are a Protestant Church, a Registered Society. We are not governed by a Pope but by the Constitution adopted by the Mahasabha of our Church. We think, live and work as members of the G.E.L.Church according to this Constitution.

By not sending notices to me for the meetings of the K.S.S. you have made the K.S.S. an illegal body and therefore all your actions are illegal by your own fault.

Until 1919 our forefathers were under the Gossner Mission. On 10.7.1919 we became an autonomously organised Church. Our Church then created a Church Council. After an experience of fifteen years the Church dissolved the Church Council in 1935 and reconstituted an entirely new Church Council with late Rev. Daud Kujur as President. In 1937-38 the Church found it necessary to change the President before the expiry of his term and to invide late Rev.J.Stosch to be the President.

Then after another 15 years the Church decided to adopt a new constitution and change the entire old Church Council and instead of 13 there were 28 members of the Church Council. This happened in 1950. Then after another 10 years again the Constitution was changed, all the officers and members of the Church had to make room for representatives from the Anchals instead of from the Synods and the Church

contd.

Council had to make room for the Kendriye Salahkari Sabha.

Then after about 13 years the Church fount it necessa-ry to dissolve the Kendriye Salahkari Sabha and adopt one ma administration for the whole Church. This happened in 1973.

On Dec. 4to 9, 1974 i.e. after another 14 years the Church accepted a new Constitution, a 44 paged printed NEW CONSTI-TUTION. On 31.10.1975 this Constitution was to be implemen-ted but what happened we do not exactly know. We hear that the North Western Anchal blames the South Eastern Anchal and the South Eastern Anchal blames the North Western Anchal. Briefly speaking the period from 31.10.75 to date the members of the Church are in confusion and lost. On 31.10.1976 it seems there was a resurrection of a new K.S.S. which the North Western Anchal refused to accept and in March 1977, as it is claimed, a new Church was given birth to mean to be for all the Oraons of the G.E.L.Church and called it North West G.E.L.Church. For some time the K.S.S. was that of only four Anchals and, by [as we] understanding, all the Oraons were out of it and the whole K.S.S. remained non-Oraon K.S.S.except for one or who who came from Orissa and Madhya Anchal, still none from the North Western Anchal.

A handful of us met together and reorganised the North Western Anchal in September 1977 and in November 1978 sent our representatives to the K.S.S.

Unfortunately you, Rev.Soreng have taken pleasure to scatter what we had gathered and have also taken pleasure to keep me out of the K.S.S., who am the Secretary of the North Western Anchal and a representative to the K.S.S.

Without me there is no K.S.S. and without the North Western Anchal you have made the Church crippled. The whole ~~tradition is altogeth~~ Church has been torn into pieces by you and the administration is altogether illegal. Instead of gathering you are scattering. We are told that there are four

contd.

cases against you in the Court, all connected with administration and two cases connected with the Church in general.

This is a desperate situation, A Babul Ka Garbar, as ordinary people are describing.

Finally, I have to ask you, on what authority you deputed Sri Robin Horo, a Munda young man to carry on a signature campaign against the peaceful working and worshipping of Kharsidag Mandli where both Mundas and Oraons have lived and worshipped together as one congregation from both Munda and Oraon tribes.

Rejoice that you have succeded in planting a bitch, a friction, an unrest and a fight among the members of this congregation, and leave us lamenting for the most horrible thing you have started to do through your agent on 5.10.80., in Kharsidag. You have divided Ranchi, Sarhapani and other Ilakas of the N.W. Anchal and you have divided the North Western Anchal Sabha and we can tell your agents by name.

Do you expect that we must accept and follow your wrong and illegal decisions ? I have sent several letters to you pointing out all the irregularities and illegalities and you had no replies to give.

Yours faithfully,

J Lakra
7.10.80.

Copy to:
1. Director, Gossner Mission.
2. Director Lutheran World Federation
3. to 7. Adhyakshes of the five Anchal
8. The Up-Pramukh Adhyaksh
9. The Secretary G.E.L.C.
10. The Up Adhyaksh, N.W.A.
11. The Treasurer N.W.A.
12. The Secretary Head Qrs. Congregation, G.E.L. Church, Ranchi.
13. Secretary, U.E.L.C.I.

छोटानागपुर दर्शन

प्रमुख हिन्दी साप्ताहिक

RGD. NO. RNC—39

[वर्ष दो, अंक ७६] ६ अक्तुबर, १९८० [मूल्य—१० पैसे PRICE—PAISE 10

छोटानागपुर क्षेत्र में पुनः बिजली संकट लघु उद्योग बन्दी के कगार पर

राँची । विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त जानकारी के मुताबिक छोटानागपुर खासकर राँची क्षेत्र में बिजली की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है।

बिजली कब आयगी, जितना अनिश्चित है, बिजली का चला जाना इससे कहीं अधिक अनिश्चित बन गया है।

राँची के भीतर एवं बाहर औद्योगिक ईकाईयाँ बिजली संकट के कारण आर्थिक तौर पर खोखली होती जा रही है। इसलिए बिजली की स्थिति में यदि सुधार नहीं हुआ तो अधिकांश औद्योगिक ईकाईयों का बन्द हो जाना प्रायः निश्चित सा है। भी इस क्षेत्र ने बिजली का रोना दुर्भाग्य की ही बात कही जा सकती है।

रांची की तुलना में पटना शहरी क्षेत्र में बिजली की अधिक सुबिधा उपलब्ध है। यह भी अपने आप में एक विचित्र बात ही कही जा सकती है।

एक ओर सरकार बेरोजगारों को रोजगार देने की बात करती रही है दूसरी ओर स्थिति यह है जिन्हें रोजगार मिला है उन्हें वेरोजगारी लीलने को तैयार है किन्तु समस्या का निदान कैसे हो—कोई भी सोचने,

राज्य बस लूटी

राँची। प्राप्त समाचार के मुताबिक गत रविवार की रात में एक राज्य बस शहर से कुछेक किलो मीटर दूर गाड़ी होटवार के निकट सशस्त्र डकैतों द्वारा लूट ली गयी।

राँची से यह बस भागलपुर जा रही थी। लूटेरों का गिरोह टिकट लेकर स्टैन्ड से ही बस में सवार हुए थे। ज्योंही शहरी क्षेत्र समाप्त हुआ लूटेरों ने यात्रियों को आतंकित करके लूटपाट आरम्भ कर दिया। महिलायों के आभूषण, घड़ियां एवं नगद रुपए लूट कर अपराधकर्मी बस से उतर कर भाग निकले। इस सम्बन्ध में किसी के पकड़े जाने की सूचना नहीं मिली।

आर्थिक अनुदान

सामूहिक पूजा अपना आकर्षण खोती जा रही है ?

रांची। चीनी, मैदा सूजी का अभाव, दूसरी ओर आसमान छूती मंहगाई के कारण लगता है दशहरा पर्व फीका रहेगा।

यो इस पर्व का अपना महत्व है और इसे शक्ति पूजा के रूप में मनाया भी जाता है किन्तु अब सादगी, पवित्रता एवं भक्ति की जगह चमक-दमक, राजनीति एवं पेंच बाजी के कारण सामूहिक पूजा का स्वरुप कुछ और होता जा रहा है। हां, घरेलू पूजा का महत्व आज भी बरकरार है।

चाहे पटना हो, कलकत्ता या राँची—सामूहिक पूजा में वैसे लोगों का बोलबाला बढ़ता जा रहा है जो समाज में अपने को सामूहिक पूजा के प्रति लोगों में उदासीनता समाती जा रही है।

जहां ऐसी सामूहिक पूजा होती है प्रशासन के लिए भी सर दर्द बढ़ जाता है।

लोगों का ख्याल है कि शक्ति, भक्ति एवं सद्भावना के प्रतीक इस पूजा को अपने स्वाभाविक रूप में ही मनाया जाना चाहिए।

विज्ञान मेला

बुण्डू। विज्ञान पर्यवेक्षक श्री अचिमुनि शर्मा के निदेशन में प्रारंभिक एवं मध्य विद्यालयों द्वारा बाजार टांड प्राथमिक विद्यालय में एक विज्ञान मेला का आयोजन किया गया। विचार

औद्योगिक ईकाईयाँ बिजली संकट के कारण आर्थिक तौर पर खोखली होती जा रही है। इसलिए बिजली की स्थिति में यदि सुधार नहीं हुआ तो अधिकांश औद्योगिक ईकाईयों का बन्द हो जाना प्राय: निश्चित सा है।

बिहार के मुख्य मंत्री एवं स्वत: विद्युत बोर्ड के चेअरमेन ने यहा राँची में छोटानागपुर क्षेत्र हेतु विद्युत आपूर्ति में सुधार का आश्वासन दिया था किन्तु सुधार के बजाय स्थिति बिगड़ती जा रही है!

पतरातु थर्मल पावर स्टेशन तथा सिकीदीरी पन बिजली योजना के अलावा डी०वी०सी० के ५ बिजली उत्पादन केन्द्र छोटानागपुर क्षेत्र में है। फिर

समाज सेवी का निधन

तमाड़। श्री अमरेन्द्र नाथ शाहदेव, भूतपूर्व तमाड़ प्रखण्ड के प्रमुख एवं भूतपूर्व विधान परिषद सदस्य का गत २९ सितम्बर को ४२ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे अपने पीछे तीन लड़के और विधवा पत्नी छोड़ गए। बुण्डू और तमाड़ के शिक्षक संस्थाओं और कार्यालयों के सदस्यों द्वारा दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गयी। —नि० सं०

गारों को रोजगार देने की बात करती रही है दूसरी ओर स्थिति यह है जिन्हें रोजगार मिला है उन्हें बेरोजगारी लीलने को तैयार है किन्तु समस्या का निदान कैसे हो—कोई भी सोचने, समझने एवं उचित कदम उठाने मात्र भाषण चल रहा है।

बिजली संकट एवं कुछ अन्य अपरिहार्य कारणों से गत ६ सितम्बर से २६ सितम्बर तक प्रकाशन बन्द रहा।

पाठकों की सुविधा के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की जा रही हैं।

—व्यवस्थापक

आरम्भ कर दिया। महिलायों के आभूषण, घड़ियां एवं नगद रुपए लूट कर अपराधकर्मी बस से उतर कर भाग निकले। इस सम्बन्ध में किसी के पकड़े जाने की सूचना नहीं मिली।

आर्थिक अनुदान लम्बित

(कार्यालय सम्वाददाता)

राँची। बताया जाता है कि स्थानीय कोकर (जतरा टांड) स्थित प्राथमिक विद्यालय के छात्रों की छात्रवृत्ति गत कई महीनों से भुगतान नहीं की गयी है।

छात्र एवं अभिभावक के मुताबिक सम्बन्धित विभागीय अधिकारी की गैरजवाबदेही एवं लापरवाही के कारण भुगतान लम्बित बताया गया।

जनता सावधान !

जी० ई० एल० चर्च के चल-अचल सम्पत्तियों को भाड़े में या ठीका में देना अथवा बिक्री करना सारी कलीसिया के स्थानीय कमीटी, प्रोपर्टी बोर्ड, के० एस० एस० और अंचल सभाओं की स्वीकृति के बिना नहीं हो सकता है। सारी कलीसिया के ठहराये हुए तरीकों के विरुद्ध कारबार होने से इसका घोर विरोध किया जायगा।

सहीं/श्री जीवन लकड़ा
सेक्रेटरी, नोर्थ वेस्टन अंचल
और मेम्बर के०एस०एस०
जी०ई०एल० चर्च

सही/पा० डाक्टर जे०जे०पी० तिगा
मेम्बर, प्रोपर्टी बोर्ड,
जी०ई०एल० चर्च

Advt.

स्वरुप कुछ और होता जा रहा है। हां, घरेलू पूजा का महत्व आज भी बरकरार है।

चाहे पटना हो, कलकत्ता या राँची—सामूहिक पूजा में वैसे लोगों का बोलबाला बढ़ता जा रहा है जो समाज में अपने को स्वाभाविक तौर पर स्थापित करने में असमर्थ रहे हैं। यही कारण है सामूहिक पूजा में स्थापित व्यक्तित्व की दिलचस्पी घटती जा रही है।

अलावा इसके जबरन चन्दा वसूली, पूजा के सन्दर्भ में अभद्र प्रदर्शन, दिन रात फिल्मी गानों की टांय-टांय की वजह से भी

विज्ञान मेला

बुण्डू। विज्ञान पर्यवेक्षक श्री अचिमुनि शर्मा के निदेशन में प्रारंभिक एवं मध्य विद्यालयों द्वारा बाजार टांड प्राथमिक विद्यालय में एक विज्ञान मेला का आयोजन किया गया। विचार गोष्ठी में प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, सहायक शल्य चिकित्सा पदाधिकारी एवं प्रधानाध्यापक उच्च विद्यालय, बुण्डू ने अपने-अपने विचार प्रकट कियें। श्री सिधेश्वर गंराई की मेहनत ने अपना रंग जमाया और इस मेले को काफी सफलता मिली।

—नि० सं०

रांची नगर आरक्षी का स्थानान्तरण स्थगित !

(नगर सम्शाददाता)

राँची। राँची नगर आरक्षी अधीक्षक श्री आनन्द शंकर का स्थानान्तरण, प्राप्त जानकारी के मुताबिक, फिलहाल स्थगित कर कर दिया गया है।

ज्ञातव्य है कि श्री आनन्द शंकर मात्र कुछ माह पूर्व स्थानान्तरित होकर राँची आए जबकि सीवान अधीक्षक के रुप में उनका स्थानान्तरण कर दियो गया।

उल्लेखनीय है कि श्री शंकर ने जब राँची में पदभार ग्रहण किया था उस दौरान शहरी एवं इसके निकटवर्ती क्षेत्रों में चोरी, सड़क, डकैती एवं बैंक डकैती की घटनाएं काफी बढ़ गयी थीं।

किन्तु नए वरीय पुलीस अधीक्षक एवं नगर पुलीस अधीक्षक के निदेशन में ठोस उपायो द्वारा जल्द ही अपराध एवं अपराधकर्मियो पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया गया। यहां विभिन्न क्षेत्रो में ऐसी चर्चा है कि अपराधकर्मी श्री शंकर से काफी घबरा उठे हैं तथा एक वर्ग विशेष के लोग उनसे प्रसन्न नहीं हैं।

अतएव श्री शंकर के स्थानान्तरण के पीछे निहित स्वार्थ एवं विशेष उद्येष्य का होना तर्क से अधिक निकट जंचता है।

छोटानागपुर दर्शन

राँची, ६ अक्तुबर, १९८०

जो राजा लोभादि के कारण अधर्म कार्यों को करता है, उस दुरात्मा राजा को शत्रु लोग शीघ्र ही बस में कर लेते हैं।

—मनुस्मृति

गांधी जयन्ती

सम्पूर्ण देश में २ अक्तुबर को गांधी जयन्ती मनायी गयी। अपनी समस्त श्रद्धा के साथ देशवासियों ने राष्ट्र पिता को स्मरण किया एवं श्रद्धांजलियाँ अर्पित की।

"सर्वे भवन्तु सुखिन:" बापू की कल्पना थी। इस कल्पना को साकार करने में अपना सहयोग देना प्रत्येक देशवासी का कर्त्तव्य होना चाहिए। महान आत्मा के प्रति यही सच्ची श्रद्धांजली होगी।

रोग की दवा

बाजार से उपभोक्ता वस्तुओं का अचानक गायब हो जाना जैसे आम बात हो गयी है। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर अब आश्चर्य नहीं होता। अफसोस होता है एवं चर्चा जरूर होती है।

कभी प्याज, कभी डीजल, कभी मिट्टी तेल, इसी तरह कभी

लाइन में कौन ख[illegible] ?

हमारे सामने एक गम्भीर समस्या पैदा हो गई है। आप जरुर जानना चाहेंगे, क्या?

बात ऐसी हुई कि सुबह तैयार होकर जब हम दफ्तर की ओर पग बढ़ाने लगे तो श्रीमती जी ने हमारा रास्ता रोक लिया। थैला हाथ में पकड़ाते हुए बोली—पड़ोसिन ने खबर भिजवाई है सुपर बाजार में छ: रुपए किलोवाली चीनी आ गई है। उसे लाकर घर रख जाओ, फिर दफ्तर चले जाना। आज कुछ देर ही सही।

यत्र - तत्र - सर्वत्र

सच मानिए, यह तानाशाही आदेश सुन कर बेहद क्रोध आया। मन विद्रोह कर उठा। जी में आया, तत्काल घर-गृहस्थी से इस्तीफा देकर संन्यास ले ले। भला हम जैसा आदमी कलम छोड़ चीनी की लाइन में खड़ा होगा तो दस अड़ोसी-पड़ोसी क्या सोचेंगे?

फिर टालने की दृष्टि से कहा —बरखुरदार को क्यों नहीं भेजती? वह भी तो इसी घर

बनाकर उनसे अधिक-से-अधिक सुविधाए एंठी जाएं। और, यह बात उनसे कह मत दीजिए। नहीं तो हमारी समस्या में तो इजाफा होगा ही, नए जमाने की हवा आपके घर तक पहुँचे बिना भी नहीं रहेगी।

बोलीं—सबसे ज्यादा चाय की जरुरत तुम्हीं को होती है। सुबह उठकर राम का नाम लेना तो अलग, सबसे पहले ये ही शब्द बोलते हो: चाय बनाओ! कल चम्पतलाल के सामने मुझे बदनाम कर दिया। कह दिया कि मैं तुमको बिना चीनी की चाय पिला रही हूं। और, उनसे कहा तो कोई बात नहीं। नहीं तो सौ दो सौ ग्राम उनके चीनी संकट कोष में देनी पड़ती। लेकिन साफ-साफ कहे देतीं हूं, अगर आज चीनी नहीं आई तो कल से तुम्हें सचमुच बिना चीनी की चाय पीनी पड़ेगी।

यह धमकी तो हमें पहले भी कई बार मिल चुकी है इसलिए उस पर विशेष ध्यान न देकर

नहीं आज हमको जल्दी दफ्तर पहुंचना है। फोरमेन साहब उर्फ हमारे हैडमास्टर साहब वहां हमारे नाम की माला जप रहे होंगे।

जैसे सारा छप्पर तुम्हारे ही कन्धों पर खड़ा है। मैं खूब जानती हूं, तुम वहां क्या करते हो? काम का तो बहाना है।

मतलब यह कि हमारे काम की कीमत को श्रीमतीजी तक नहीं आँकती। फिर भी हमने अंतिम अस्त्र छोड़ा—आज सच-मुच हमको बहुत काम है। ऐसा करो कि तुम्हीं जाकर चीनी ले आओ। अगली बार हम चले जाएगे।

श्रीमती जी ने कुछ आश्चर्य से कहा—मैं-मैं! मैं जाकर खड़ी हूंगा वहां मर्दों की लाइन में? देखी है कितनी बड़ी होती है? और तो कुछ लाते नहीं, अब लाइन में भी मुझे ही खड़ी करोगे।

आप समझ गए न, हमारे सामने कौन-सी गम्भीर समस्या है? चीनी की लाइन में जाकर कौन खड़ा हो? हमारी मज-बूरी है। बरखुरदार पकड़ाई में नहीं आते। श्रीमतीजी ने इस कहा-सुनी के बाद मुंह फूला

होगा।

रोग की दवा

बाजार से उपभोक्ता वस्तुओं का अचानक गायब हो जाना जैसे आम बात हो गयी है। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर अब आश्चर्य नहीं होता। अफसोस होता है एवं चर्चा जरूर होती है।

कभी प्याज, कभी डीजल, कभी मिट्टी तेल, इसी तरह कभी चीनी, कभी नमक बाजार से गायब होते रहे हैं।

गायब वस्तुओं का मूल्य से यदि सम्बन्ध नहीं होता उतनी परेशानी नहीं होती। जब कभी कोई वस्तु बाजार से उड़न छू होती है—मुनाफाखोरों की बन आती है। न केवल अभाव के नाम पर ऐसी वस्तुओं की मनमानी कीमत वसूल की जाती है बल्कि बाजार में सामान्य ढंग से वस्तु या वस्तुओं के उपलब्ध होने तक उनका मूल्य कुछ का कुछ हो गया रहता है।

उत्पादन में कमी किसी वस्तु के अभाव का प्राकृतिक कारण होता है किन्तु अबतक यह साबित हो चुका है कि हमारे यहां पूंजीपति, जमाखोर एवं कालाबाजारी में दिलचस्पी रखने वाले व्यक्तियों का समूह काफी ढीठ हो चुका है। इस वर्ग का मूल मंत्र मात्र नफा कमाना है। कानून को अंगूठा दिखाने की दलील अब कौन स्वीकार करेगा? आपात्-काल के दौरान इनकी हेकड़ी, इनके पैसे धरे रह गए और इनकी मिट्टी पलीद हो गयी।

स्पष्ट है, यह वर्ग क्या चाहता है? तब हमारी सरकार को भी अनुभव के आधार पर कदम उठाने में हिचक नहीं होनी चाहिए। मतलब रोग के अनुरूप दवा से ही निदान सम्भव है।

अभाव, मंहगाई से त्रस्त जनता अपनी सरकार से ऐसी अपेक्षा करती है कि शीघ्र सक्षम उपाय किए जाएंगे।

जहां कृत्रिम अभाव एवं मंहगाई पर नियंत्रण के लिए सक्षम उपाय किया जाना चाहिए, सरकारी राशन दूकानों को नियंत्रित वस्तुओं की आपूर्ति में नियमितता एवं दूकानों द्वारा वितरण के सम्बन्ध में सतत् निगरानी की भी आवश्यकता है।

से इस्तीफा देकर संन्यास ले ले। भला हम जैसा आदमी कलम छोड़ चीनी की लाइन में खड़ा होगा तो दस अड़ोसी-पड़ोसी क्या सोचेंगे?

फिर टालने की दृष्टि से कहा—बरखुरदार को क्यों नहीं भेजती? वह भी तो इसी घर में रहता है।

सुबह से ही उसका कुछ पता नहीं है। घर में होता तो भी क्या वह चीनी लेने जाता? आखिर बेटा तो तुम्हारा ही है। वह जाकर खड़ा होगा वहां लाइन में?

हमने कहा—देखोजी, हर बात में हमको ही दोष मत दिया करो। सच पुछो तो तुम्हारे लाड़-प्यार ने ही उसको बिगाड़ा है। इतना बड़ा हो गया, उसे भी तो घर के काम धंधे में कुछ दिलचस्पी लेनी चाहिए।

श्रीमतीजी भीं कहां दबने वाली थी? एक तो वैसे ही वह पंडित जी के बोले मंत्रों का कुछ गलत अर्थ लगा बैठी है। समझती है कि अच्छा पति बनने के लिए अच्छा कुली बनना सब से जरुरी योग्यता है। फिर आज कल महिलाओं के अधिकारों के बारे में अखबारों में जो कुछ छप रहा है उसका भी वह बड़े मनायोग से पारायण करती हैं। उनकी क्लब में भी सदस्याएं प्रायः यही चर्चा करती नजर आती है कि पतियों को कैसे मूर्ख चीनी संकट कोष में देनी पड़ती। लेकिन साफ-साफ कहे देतीं हूं, अगर आज चीनी नहीं आई तो कल से तुम्हें सचमुच बिना चीनी की चाय पीनी पड़ेगी।

यह धमकी तो हमें पहले भी कई बार मिल चुकी है इसलिए उस पर विशेष ध्यान न देकर हमने कहा—तुम समझती क्यों करोगी।

आप समझ गए न, हमारे सामने कौन-सी गम्भीर समस्या है? चीनी की लाइन में जाकर कौन खड़ा हो? हमारी मजबूरी है। बरखुरदार पकड़ाई में नहीं आते। श्रीमतीजी ने इस कहा—सुनी के बाद मुंह फूला लिया है।

(द० हिन्दुस्तान से सभार)

आपका मंच

[इस स्तम्भ के अन्तर्गत व्यक्त विचार सम्पादक के विचार से मिलते हों, यह आवश्यक नहीं है।]

कोकर में थाना?

गत सप्ताह कोकर औद्योगिक क्षेत्र स्थित एक कारखाने पर अपराधियों ने रात के समय हमला किया। हालांकि अपने प्रयास में वे असफल रहे किन्तु अपराधी तत्वों की सक्रियता के कारण कोकर क्षेत्र के आम लोगों एवं कारखाना संचालकों की चिन्ता बढ़ गयी है।

इसके पूर्व भी गत वर्ष कोकर चौक पर एक ही घर में दो दफा डकैती हो चुकी है। लूट के साथ डकैतों द्वारा गृह स्वामी को काफी मारा पीटा भी गया।

कई वर्षों से सदर थाने को कोकर क्षेत्र में स्थानान्तरित किए जाने की चर्चा चल रही है किन्तु यह कब होगा, नहीं कहा जा सकता। ऐसा लगता है कि जानबूझ कर इस विषय को टाला जा रहा है।

वैसे जिन क्षेत्रों की देख-भाल सदर थाना करता है उनकी दूरी को देखते हुए सदर थाना को वर्तमान स्थान में टिकाए रखने का कोई भी तूक या तर्क नहीं हो सकता है।

अतएव पुलिस अधिकारियों से अपेक्षा की जाती है कि जितना जल्द हो सके सदर थाना को कोकर क्षेत्र में स्थानान्तरित किए जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

—चन्द्रहास
कोकर, राँची

प्रोपर्टी बोर्ड का अत्याचार काम और अन्याय

1- राजा बंगला में कितना मकान बना किसके परमिसन से और क्या कारवाई किया गया है ।
2- कच्च रोड में मुनसोद टोपनो का नाम से रजिस्ट्री जमीन में दूसरा मिसन का आदमी कैसे कोयला दुकान खोला है और प्रोपर्टी बोर्ड क्या कारवाई किया है ।
3- तलाव में पैखना क्यों होता है क्यों रोका नहीं जाता है और भैस चराना को रोका नहीं जाता है
4- लाल बंगला के पश्चिम में एक मकान बहुत दिन से बना है कैसे बना है क्या कारवाई किया गया
5- बाबू लाईन में कितना नया मकान बना है किसके परमिसन से बना है और बनहो रहा है ।
6- बाहर का आदमी मिसन हाता में पैखाना के लिए आते हैं क्यों नहीं रोके जाता है ।
7- सुरीन पादरी मकान क्यों खाली [illegible] कर रहा है । क्या कार्रवाई किया गया है ।
8- जीवन मसीह पादरी जोहन [illegible] पादरी मकान क्यों खाली नहीं कर रहा है ।
9- मिस मिसेस बरला हेड मास्टर [illegible] क्यों खाली नहीं कर रही है क्या कारवाई किया गया है
10- समूस बाड़ा पादरी मकान खाली [illegible] नहीं किया है । भाड़ा भी नहीं देता है ।
11- समूएल कुजा पादरी मकान खाली क्यों नहीं किया है ।
12- एन०ई०होरो मकान खाली क्यों नहीं किया है और भाड़ा भी नहीं देता है ।
13- जो पादरी घर रख गया है उसमें विजय ओईन्द पादरी को कैसे रखा गया है ।
14- गिरजा से समरक पथ्थर तक रास्ता क्यों सुधरा नहीं जा रहा है ।
15- यह निर्णय हुआ था कि तलाव से मछली का कारवार डीपामेन्ट से किया जायगा और अभी तक क्यों नहीं हुआ है ।
16- हेड क्वाटर के जमीन खेती वाला सलाना अमदनी का हिसाब दिया जाय ।
17- मिसन हाता का जितना गाछ कटा गया उसका हिसाब कितना हुआ हेड क्वाटर को दिया जाय ।
18- मिसन वरकर नहीं है और मिसन का मकान में रहता है । कैसे रहता है और दो मकान को कब्जा किया है । ये कैसे हुआ है ।
19- एक्टींग हेड मास्टर एमं टोपनो कमेटी के बिना परमिसन् का मनमानी घर बना रहा है ।
20- गोसनर हाई स्कूल का हालत क्यों खराब है । डोनेसन पैसा कहाँ जाता है ।
21- पिलगर लाईन रोड के मिसन का जमीन इनक्रोच है और घरो बन गया है ।
22- फ्रैंकलोन तिर्की कैसे उतना बड़ा घर को कब्जा किया है । भाड़ा भी नहीं देता है ।
23- बेथेसदा हाई स्कूल होल अब तक पलस्तर और जमीन क्यों पक्का नहीं हुआ और खिड़की दरवाजा क्यों नहीं बना है ।साल-साल मकान डोनेसन लिया जाता है उस पैसा को क्या करते हैं ।
24- बेथेसदा ^गर्ल्स^ स्कूल एक्टींग हेड मिस्ट्रेस ने कमेटी के बिना अनुमति मनमानी काम कर रही है । मनमानी पैसा खर्च कर रही है ।
25- एफ०टी०टी०फुली डाईरेक्टर विजय आनन्द ने अभी साठ 65 वर्ष से अधिक हो जाने पर भी वह अभी पद में बने हुए है ।

आपका विश्वस्त मंडली पंच
हेड क्वाटर कांग्रीगेशन , रांची ।

सेवा में,

प्रमुख अध्यक्ष,
केन्द्रीय सलाहकारी सभा,
जी० ई० एल० चर्च इन छोटानागपुर एवं असम,
रांची ।

द्वारा:- अध्यक्ष,
हेड क्वाटर कांग्रीगेशन,
जी० ई० एल० चर्च , रांची ।

विषय:- रांची हेड क्वाटर जी० ई० एल० सी० के सम्पति के संबंध में ।

महोदय,

उपर्युक्त विषय के संदर्भ में खेद के साथ कहना पड़ता है कि रांची हेड-क्वाटर के संपति की स्थिति दिन प्रति दिन बद से बदतर होते जा रही है । चहूं ओर अनियमितता एवं दुरूपयोग का बोल- बाला है । इससे ऐसा मालूम पड़ता है कि या तो प्रशासन में दुर्बलता है या तो शासन में भ्रष्टता । यदि शासन हो भ्रष्ट हो तो अनुशासन कैसे आए सो भी धार्मिक संस्था में । जो वचन हमारे प्रभु यीशु ने यारुशलेम मंदिर के विषय कहा है कि तुमने उसे डाकुओं का खोह बना लिया है । यही वचन आज हमारे हेड क्वाटर में लागू हो रहा है ।

अतः ऐसे बिंदुओं पर जिनसे कलिसिया को नामधाई एवं ठोकर के कारण हो रही है, आप के आवश्यक कार्रवाई तथा सुधार हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है :-

१- रांची जी०ई० एल० सी० कम्पौंड के अन्तर्गत कितने ऐसे आवास गृह हैं जो अधिकारियों वा कर्मचारियों को उनके कार्यरत अवधि के लिये जिससे उनके कार्य क्षमता में बाधा न हो आवंटित किये थे, वे कार्य मुक्त वा सेवा निवृत हो जाने के बाद और अनेकों बरस बीत जाने के बावजूद आवास गृहों को खाली नहीं किये हैं और अनाधिकृत मकान पर कब्जा किये हुए हैं । उनको मकान खाली कराने के लिये के० एस० एस० एवं प्रोपर्टी बोर्ड ने आज तक कौन सा कार्रवाई की है ? ऐसे अधिकारियों वा कर्मचारियों से कार्य मुक्त वा सेवा निवृति के छः माह के बाद भी मकान खाली नहीं किये हैं , उनसे रांची बाजार भाव से किराया वसूल किया जा रहा है वा नहीं ? यदि नहीं तो क्यों नहीं ? इस घाटे का और नये आये कर्मचारियों के असुविधा का कौन जिम्मेवार है ?

[ब] श्रीमती बारला एवं परिवार जो सी० एन० आई० सदस्य हैं उन्हें गोस्नर हाई स्कूल के प्राचार्य बंगला में रहने देने का क्या औचित्य है ? तथा किस भाव से उस बंगले का किराया उठाया जा रहा है ?

२- मार्च १९८० के घर- बंधु में प्रकाशित प्रोपर्टी बोर्ड आय - व्यय का वार्षिक लेखा [बजट] व्योरा के अनुसार न बढ़ोतरी है न घाटा । इससे बिल्कुल साफ है कि कलिसिया को संपति से कलिसिया को एक पैसे का भी लाभ नहीं है । तो फिर कलिसिया को जमीन को लीज आउट करने वा जमीन में सोपिंग सेन्टर बनाने से क्या लाभ ? और ऐसे मकानों के अस्थिपंजर को खड़ा रखने में क्या लाभ , जिससे मात्र तीन हजार रुपये का वार्षिक राजस्व मिले और मरम्मती में खर्च २३,००० -०० हजार रुपये हो ? अर्थात साल - साल २०,०००-०० हजार बीस हजार रुपये का घाटा सो भी मकानों पर जो अवैध कब्जा में है ।

[पृष्ट -२- पर देखें]

३- रांची आहाते के कई क्षेत्रों में जैसे राजा बंगला कम्पौन्ड, बाब लेन वा अन्य क्षेत्रों में कितने ही अवैध मकान बन कर खड़े हो गये और खड़े होते जा रहे हैं, उनको रोकने या हटाने के लिये प्रोपर्टी बोर्ड ने आज तक कौन सा कारवाई किया है ? जब कि प्रोपर्टी बोर्ड मे- के वार्षिक बजट में व्यय के पक्ष में १०,०००-०० [दस हजार] रुपये कोर्ट का प्रावधान है ।

४- पाद्री सी० बी० आईन्द, टी० टी० सी० फुदी के निर्देशक हैं । उनका मुख्यालय फुदी है । फिर उनको रांची एवं फुदी दोनों ही स्थानों में आवास गृह आवंटित करने का ~~न्यायोचित~~ [क्या औचित्य] है ? उनसे इन दोनों स्थानों के आवास गृह का किराया किस दर से वसूल किया जाता है ? तथा [illegible] में उनके लिये मकान आवंटित करने का क्या प्रयोजन है ? रांची के मकान का [illegible] उनसे रांची बाजार भाव से उसी दिन से जिस दिन उस मकान में प्रवेश [illegible] [वसूल किया जा रहा है अथवा नहीं ? यदि नहीं तो] क्यों नहीं? इस दुरुपयोग का जिम्मेवार कौन है ? क्या पादियों का यही प्रेममय और अर्पित जीवन है ?

५- के० एस० एस० आंगन में कनसीक्रेटेड चेपेल को विश्राम गृह में कैसे और क्यों परिवर्तन किया गया ? क्या अभिषिक्त व्यक्ति साधारण व्यक्ति में परिवर्तन किया जा सकता है ?

६- गोस्नर हाई स्कूल, गोस्नर मिडिल स्कूल, बेथेसदा हाई स्कूल एवं बेथेसदा मिडिल स्कूल में साल साल प्रति छात्र भवन निर्माण वा विकास के नाम २५ से ५० रुपये तक डोनेशन लिया जाता है । फिर भी स्कूल भवनों की स्थिति दो तीन दशक पहले जैसा था वैसा ही अभी भी है, बल्कि उनकी स्थिति दिन प्रति दिन और भी खराब होते जा रहा है । लेकिन मरम्मत, सुधार वा विकास का कोई चिह्न नहीं है ।

अतः ये डोनेशन के पैसे कहां जाते हैं ? के० एस० एस० द्वारा कभी इस मद का अंकेक्षण हुआ है अथवा नहीं । नहीं हुआ है तो क्यों नहीं ? इसका जिम्मेवार कौन है ? जब से इस मद का अंकेक्षण नहीं हुआ है, शीघ्र अंकेक्षण का व्यवस्था किया जाय ।

७- स्लोस होस्टेल के पीछे, होस्टेल कम्पस ही में रांची के मुख्य मार्ग पर प्रोपर्टी द्वारा सोपिंग सेंटर बनाने के कारण होस्टेल प्रकाशहीन एवं बेकार हो गया है । उसके बदले में प्रोपर्टी बोर्ड होस्टेल कब और कहां बना रही है ? और उसका क्षति-पूर्ति कैसे कर रही है ?

८- कलीसिया के नियमावली के अनुसार केन्द्रीय समिति एवं केन्द्रीय लेखा का अंकेक्षण अर्द्ध वार्षिक होना है । इस लिये गत दो साल का अंकेक्षित [१] के० एस० एस० का आय व्यय लेखा, [२] प्रोपर्टी बोर्ड का अवशेष तालिका एवं आय व्यय लेखा और [३] खण्ड मे- ६ में वर्णित चारों स्कूलों के डोनेशन के आय व्यय लेखा माह अक्टोबर ८० के घर बन्धु में कलीसिया के सदस्यों के जानकारी के लिये प्रकाशित किया जाय । E

९- गत वर्ष १९७९ के कलीसिया संघ वा महा ~~सभ~~ सभा में प्रस्ताव रखा गया कि एक पदाधिकारी दो पद धारण न करे । क्या नियमावली में प्रावधान है, कि एक पदाधिकारी दो पद धारण कर सकता है ?

१० - हमारे गोस्नर कलीसिया के कुछ भाई - बहन, कलीसिया से निकल कर अलग एक नये कलीसिया, नोर्थ वेस्टर्न जी० ई० एल० चर्च के नाम से ~~गठित~~ [पारित] कर लिया है । इस सम्बन्ध में गत १९७९ के कलीसिया संघ वा महा सभा में प्रस्ताव [पारित] किया गया है तथाकथित नो० वे० जी० ई० एल० चर्च के सभी स्तरों पर बात चीत कर मेल मिलाप कर लिया जाय ।

इस बिंदु पर के० एल० एस० ने क्या कार्रवाई ~~क्या कार्यवाही~~ की है, तथा इसकी क्या प्रगति है ?

फिर तथाकथित नो० वे० जी० ई० एल० सी० ने अपनी कलीसिया के संचालन के लिये अपना अलग नियमावली भी बना लिया है, जिसके आधार पर उन्होंने विशप का भी अभिषेक कर लिया।

इस तरह उन्होंने जी०ई० एल० सी० इन छोटानागपुर एवं असम से अपनी सदस्यता को समाप्त कर दिया है। और अब वे इस कलीसिया के प्रशासन को अधीन भी नहीं रहे। अतः उनका इस कलीसिया के चल वा अचल सम्पति में कोई हक नहीं रहा। तो फिर के० ए० एस० एवं प्रोपर्टी बोर्ड नो वे० जी० ई० एल० कलीसिया के सदस्यों वा अभि[illegible] ों को अपने गिर्जा घरों में उपासना वा आराधना अब तक क्यों करने दे रह[illegible] फिर कबर स्थानों को भी उनके उपयोग में क्यों लाने दे रहो है ? फिर क[illegible] वा अचल सम्पति को उपभोग में क्यों लाने दे रहो है ? क्या यह कलीसिया के सम्पति का दुरुपयोग नहीं है ?

११- इस नव निर्मित नो० वे० जी० ई० एल० कलीसिया के कारण गोस्नर कलीसिया के अन्तर्गत खास कर उत्तरी पश्चिमी ~~अंल~~ अंचल के अधीन घर घर में भाई भाई में, बहन बहन में इस्टो गुस्टी में, नाते रिश्तेदारों में, इर्षा द्वेष बैर भाव, भिन्प्रेम, भेद भाव एवं अशान्ति की आग लहर रहो है। जिसके कारण उनका आत्मिक जीवन [परमेश्वर और मनुष्य का सम्बन्धित जीवन] बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। साथ ही साथ उनके लौकिक जीवन में भी प्रभाव पड़ रहा है।

गोस्नर कलीसिया के लिये क्या प्रभु की यही आशीष है ? क्या गोस्नर कलीसिया के संचालक [के०एस० एस० एवं प्रोपर्टी बोर्ड] यही चाहते हैं कि कलीसिया के अन्तर्गत भाई बहनों के बीच इर्षा द्वेष, बैर भाव, भिन्प्रेम और अशान्ति जगत के अन्त तक अर्थात प्रभु यीशु मसीह के दूसरी आगमन तक बनी रहे? क्या प्रभु की मसीहियों के लिये यही शिक्षा है ? क्या यह ऐसा नहीं है कि फूट डालों और राज्य करो ?

उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट है कि कलीसिया की सम्पति का दुरुपयोग एवं ~~बर्बादी~~ बरबादी चरम सीमा पर पहुंच गया है।

कलीसिया की चल वा अचल सम्पति, कलीसिया के ३,३६,००० सदस्यों एक एक की सम्पति है। इस सम्पति में कलीसिया के एक एक सदस्य का हक है। प्राधिकार [के० एस० एस० एवं प्रोपर्टी बोर्ड] मात्र इसके संचालक, संरक्षक और भंडारी हैं। प्राधिकार को ३,३६,००० सदस्यों के एक एक हक को ध्यान में रख कर कार्य करना है, न कि किसी व्यक्ति विशेष के स्वार्थ पर।

हमारी कलीसिया रजिस्ट्रार जोइन्ट स्टोक कम्पनी पटना द्वारा १८६० के रजिस्ट्रेशन एक्ट २१ के अनुसार पंजीकृत है / अब देखा जा रहा है कि कलीसिया का सुधार का और कोई विकल्प नहीं रह गया है / अतः निर्देशक एवं रजिस्ट्रार जोइन्ट स्टोक कम्पनी पटना को इन सारी बातों से अवगत क्यों नहीं किया जाय ? तथा उन्हें जांच और आवश्यक कारवाई हेतु क्यों नहीं निमंत्रण दिया जाय ?।

अतः इसे १४ दिनों की सूचना [नोटिस] समझा जाय।

प्रतिलिपि रे०भ०। श्री Dr. C.K. Singh
~~सदस्य के०एस० एस०~~ को
~~मंडली पंच हेड क्वाटर~~
~~कांग्रीगेशन~~, रांची, सूचनार्थ प्रेषित।

भवदीय,

1- [illegible] (J.P. [illegible]) 3/10/80
पंच [illegible]
रांची।

2. [illegible]
[illegible]

3- C.K.[illegible]

4— ______ [illegible]

5— Dyp Jappo myp. Sivam Lale reorth

6— Rinkey

7—

G.E.L.CHURCH IN CHOTANAGPUR & ASSAM
(Regd. under Societies Registration Act XXI 1860)

RANCHI DIOCESE (Formerly N.W. Anchal)

Secretary: Sri Jiwan Lakra

Office: Khorhatoli,
Kokar Old H.B.Rd.
P.O.Bariatu
Ranchi 834009.

October 29, 1981

To,

The Secret[illegible]
G.E.L.Churc[illegible]
Ranchi.

Sub: Central Organization and the Officers of the G.E.L. Church in Ch. N. & Assam.

Dear Sir,

In continuation of my letter sent under registered post dated 16.9.81 with the enclosures I have to state that I called for a meeting of the Ranchi Diocese according to the New Constitution. Representatives came from Ranchi and Rani-Khatanga Ilakas (Parishes according to the New Constitution) The meeting was held under the Chairmanship of Rev. M.P.Ekka in the Church at Khorhatoli, Kokar on the 19th October, 1981. After a brief report on the whole situation of the Church and of the correspondence, it was unanimously agreed to place on record:

1. That the G.E.L.Church of which we the members of this meeting and all those whom we represent are bonafide members, is a society duly registered on July, 30,1921, in the Office of Registrar, Joint Stock Companies, Patna under the societies Registration Act XXI of 1860. The Society is subject to a Constitution which has been accepted by the members.

2. That the duly elected representatives of the Church, some twelve years back, unanimously felt that the 1960 Constitution had become out of date and unsuitable. In 1969 in a printed document the convener of the Constituent Body declared " the Church bids for a new Constitution". In answer to this Committees were appointed, several meetings were held and a new Constitution was produced and presented before the K.S.S. in its meeting represented by the whole Church on December 4.9.1974. The K.S.S. accepted the new Constitution. At the same time the Kendriye Salahkari Sabha was asked to appoint Election Officers with a view to reorganize the whole church according to the new Constitution. Rev. Dr. C.K.P. Singh the then Pramukh Adhyaksh called a meeting of the K.S.S to be held on 30.10.1975 in order to implement the new Constitution. In the meeting held on 4-9. December 1974 it had been decided, " After the new officers duly elected according to the new Constitution have taken over charge of their respective offices , the K.S.S. and all other boards and Committees under the Old Constitution shall stand dissolved."

3. The South Eastern Anchal, (the leading Munda Anchal) boycotted the meeting of 30.10.1975 convened in order to implement the decision of the K.S.S. taken in the meeting held on 4-9 December, 1974. Thus the K.S.S. became crippled in operative and ineffective because the members of the K.S.S set to naught their own decision. Following the leading Munda Anchal, (S.E.A), the leading Oraon Anchal (North Western Anchal declared that they would not take part in the meeting of the K.S.S. until the Major problems of the church were solved. Thus what used to be called Kendriya

contd. 2

Salahkari Sabha became dissolved and defunct. The acceptance of the New Constitution by an undivided K.S.S. stands and no one has erased it. It is there printed in the G.E.L.Church Press in 44 pages.

4. This is an undeniable fact that those who profess to be members and leaders of the secalled K.S.S. defy and violate their own decisious even to the extent of filing cases against one another in the Court e.g.case filed [redacted] Revd. Martin Teto against Dr. C.K.P.Singh, REv. P.D.Soneng a[redacted] Dr.M.Bage. This so-called K.S.S. has been awefully disregarde[redacted] the Pramukh Adhyaksh of the so-called K.S.S as he, without [redacted] decision of this so-called K.S.S. wrote to the authorities [redacted] Banks to stop transactions on the G.E.L.Church accounts. When the members of this body defy its decisions themselves it is a clear fact that their so-called K.S.S. has no authority. They themselves make its decisions null and void. Thus their so-called K.S.S. has no right to exist. The employees and members of the G.E.L.Church do not know who the officers are. The finance Department has also become defunct.

5. We sent dozen of letter-s to the address of the Pramukh Adhyaksh which were neither acknowledged nor there were any replies. Then we sent letters to Rev. C.B.Aind and others whom the Gossner Mission designated as leaders of the Gossner Church (vide their letter dated Berlin July 5, 1979), especially letters dated 20.7.81/16.9.81 and 30.8.81/16.9.81 to ~~x~~ which also there was no ~~x~~ reply, we sent a letter under registered post with enclosures to the Secretary, G.E.L. Church on 16.9.81 which has also been without a reply ewen until today. This is another clear and unfailing proof that the Central Organization of the G.E.L.Church has collapsed.

6. The new constitution does not provide for any Pramukh Adhyaksh and any organization known as K.S.S. Any attempt to make a K.S.S. and a Pramukh Adhyaksh will be illegal,null & void.

7. It was also noted that all the Parishes (formerly Ilaka) viz Chainpur,Kondra, Gumla, Lohardaga,Ranchi, Hazaribagh, Palamau and New Delhi which are members of the Ranchi Diocese have been duly notified about this meeting.

8. It was also noted that many of the members of Ranchi Diocese have been misguided and decbived by Revd. Suresh Toppo and his associates who held an illegal meeting on 9.10.1981.

9. Ever since the South Eastern Anchal beycotted the meeting of the K.S.S. on 30.10.75 the members of the G.E.L.Church are being split up into groups without any stop. Hence there is no sense in talking about a fixed or stable number of members of any group. The North Western Anchal which made an attempt to organize itself in 1978 in six months time got split up into two- the two munda officers Rev. C.H.Tirkey and Sri Paulus Topno separated themselves from two ~~officers~~ Oraon Officers (Adhyaksh and Secretary).

10. The division of the Church on 30.10.75 has had a very severe effect- A vast majority of the Oraons are separated from the Munda members and have remained separated all these full six years. This Munda-Oraon split up cannot be ignored nor overlooked. The new Constitution was accepted just to save the Church from these developments and consequences.

contd.

Under the circumstances it is Resolved that (1) We organise ourselves into the Ranchi Diocese assuming the powers and functions described in the new Constitution.

(2) Rev. M.P.Ekka, Sri Jiwan Lakra, Rev. Daniel Minz and Sri Cyril Kerketta are respectively elected unanimously to be the Dharmadhyaksh and Treasurer of the Ranchi Diocese.

Dharam Adhyaksh Rev. M.P.Ekka, Up-Dharam Adhyaksh, Rev. Daniel Minz, Secretary Sri Jiwan Lakra were unanimously elected to represent the Ranchi Diocese in the Synodical Sabha. Other elections will be made as and when necessary.

(3) All the Parishes within the Ranchi Diocese were given notice for the meeting. These parishes which did not join now are given further invitation to come and join.

Ishu Sahay.

Yours Sincerely

(Jiwan Lakra)
Secretary

Ranchi Diocese

Copy to:

1. Rev. Dr.M.Bage
2. Rev. Martin Tete
3. Rev. C.K.P.Singh
4. Director, Gossner Mission, Berlin

हाकिम का तोहू दोहाई दे रहा है ।

गोस्सनर एवंजेलिकल लुथेरन चर्च इन सो० न० एवं आसम

सेवा में, राँची, जुलाई 20, 1981

1- पादरी ख्रिस्त बिजय आईन्द, 4- पादरी डा० पाल सिंह
डा० 2- पादरी मर्शलन बागे 5- पादरी पी०डी० स्पेरिंग
3- पादरी नथानिएल कुल्लू 6- पादरी मार्टिन टेटे

और

पादरी जुनूल तोपोनो

महाशयगण,

1935 बिशप सैन्डग्रीन कमीशन रिपोर्ट, 1946 लुथेरन वर्ल्ड फेडरेशन के सन रेन साहब के रिपोर्ट, 1960 संविधान, 1965 क्लोसा सेंघ, 1969 श्री सी०ए० तिर्की नियमावली कमीशन, 1978 पादरी सी०बी० आईन्द नियमावली कमीशन, 1979 गोस्सनर मिशन क्युराटोरिम की चिट्ठी दस अगुवों के पास, ये सब दस्तावेज है जिनसे यह प्रमाणित है कि गोस्सनर क्लोसा में मुंडा और उरांव लोगों के बीच जातीय अशान्ति और तनाव 1935 से आजतक चलता आ रहा है। बिशप मानीक्म और बिशप मेयर 1960 की नियमावली में अल्पसंख्यक जातीयों के लिये सुरक्षा को अनिवार्य समझ कर व्यवस्था रख दिया। इनसब बातों को ध्यान में रखकर सारी क्लोशा को एक सिनोडिकल कौंसिल के अन्दर आठ डियोकेश में 1978 के संविधान में आईन्दकमीशन ने रख दिया। आशा की गई थी कि इस संविधान के द्वारा पूर्ण शान्ति और एकता गोस्सनर क्लोसा में स्थायी रुप से आ जायगी। मंजूर करके भी लागू नहीं किया गया, इसके विपरीत बैरता और मारपीट होने लगी है। कचहरियों में जी०ई०एल०चर्च और तथाकथित नोर्थवेस्ट जी०ई०एल०चर्च के बीच अनेक मुकदमा है। यह कहना उपयुक्त और सकारण है कि तथाकथित नोर्थ, नोर्थवेस्ट चर्च हानि सहेगी क्योंकि उनको दी गई वकालती से परामर्श बहुत ही कमजोर है। परन्तु हमारे दृष्टिकोण से हमारा निशान दूसरा ही होना चाहिये। क्लोसा की मंडलियों, संस्थाओं और जायदादों के लिये उन सभों से लड़ना है जो क्लोश की इन सभों से को इन चीजों को लेना चाहते है और हम जीतेंगे ~~नन~~। पर उन ख्रिस्तानों का क्या दशा होगी? 26-3-1977 को पादरी निरंजन एक्का ने दावा किया कि उनके साथ कुल बपतिस्मा पाये हुए लगभग 76,000 प्राणी उनके साथ थे। हम हमलोगों के कठिन परिश्रम से सेप्टेम्बर 1978 तक में 26,960 जी०ई०एल० चर्च चर्च में लौट आये। 26,960 जनों के समझ में जब सच्ची और अच्छी बात आ गई तो और बहुतों को देख-देख कर समझने में आसान हो गया और मई 1979 तक में करीब 10,000 और लौट आये और लगभग 40,000 प्राणी उक्त पादरी एनएक्का

के साथ में है । उनके लिये जमीन जबह,गिजो घर,स्कूल घर औ स्कूल अपना है नहीं तो लूटपाट ही उनका रास्ता और उपाय रहेगा और सब छि तितर बित्तर हो जायगे । इन सब बातों को हमारी क्लोशा को अभी ही सोचना है पर करेगा कौन और कब । आप लोगों ने बनाने के बदले बिगाड़ा आप लोगों पर हमारी कोई आशा नहीं है । निम्नकारणों से हम आप लोगों को इस क्लोशा के पदाधिकारी नहीं मानते हैं और जब तक इन बातों का उपयुक्त समाधान निष्पक्ष न्यायक औ सलाहकारों द्वारा नहीं किया जाय तबतक नहीं मानेंगे तथा । हम अपना सारा काम स्वंय ही सम्भालेंगे ।

अल्पसंख्यक वर्ग के साथ व्य

१- बड़े दुःख की बात है कि 1977 मार्च के तूफान से घायल हम जो लगभग 35,000 आप लोगों के साथ जी0ई0एल0 चर्च में रह गये हैं , हमारे साथ वही व्यवहार है जो पहिले से आ रहा है । आप लोगों के एजेन्ट पाद्री मनसिद्ध समद और श्री रोबिन होरो ने शान्तिपूर्वक मुण्डा ,उरांव एक साथ बरसों से एक मंडली हो उपासना कर रहे हैं उनको दो भाग कर दिये । दामी,खरसोदाग औ टूटोहातू मंडलियों को उरांव पाद्री से छीन करके मुंडा पाद्री को दे दिया । इसमें पाद्री पी0डी0 सोरेंग का बहुत बड़ा हाथ है । उसने वहाँ जातीयता का भेद भाव रोप दिया ।

2- आप लोगों ने हमारे अंचल सेक्रेटरी को जो के एस0एस0 के लिये चुना हुआ प्रतिनिधि है बिना कारण दिये,बिना पूछताछ,बिना दोषारोपण ,बिना न्याय के एस0एस0 से निकाल दिये । आप लोगों का यह अपराध साधारण नहीं पर बहुत भारी अन्याय और अधर्म का काम है ।

3- डाक्टर तीगा ने 25-5-79 को अध्यक्ष पद की इस्तीफा दी । अंचल कार्यकारिणी ने पाद्री मुक्ति प्रकाश एक्का को चुन कर प्रमुख अध्यक्ष को तुरन्त सूचना दे दिया और अंचल की पूरी सभा के सदस्यों से डाक द्वारा स्वीकृति लेकर इसकी भी जानकारी पाद्री पी0डी0 सोरेंग प्र0 अध्यक्ष को देदिया । केन्द्रीय सलाहकारी सभा कक्ष में इनको बुलाना चाहिये था पर इस विषय में आपलोगों ने कुछ बिना लिखे या जबाब दिये इनको बुलातेही नहीं । बहुसंख्यक वर्ग ने जो चाहा वहा वही हो गया ।

4- डाक्टर तीगा प्रोपर्टी बोर्ड के सदस्य और एडुकेशन------3 बोर्ड के केवल सदस्यही नहीं पर चुने हुए चेयरमेन हैं । आप लोगों ने उनको भी बिना दोषारोपण ,बिना न्याय,बिना दोषी पाकर भी इन दोनो बोर्डों से निकाल दिये ।

5- आप लोगों ने करकट्टा पेरिश को उड़ा दिया । यह इलाका और अंचल का काम और अधिकार को आप लोगों ने लूट लिया । आप हमारे ऊपर

अवैधानिक अधिकार जमा रहे हैं क्यो समझ के आप बहुसंख्यक है और हम अल्प-संख्य संख्यक ।

6- आप लोगों ने रानीखटंगा इलाका को [illegible] और हमारे अंचल के अधिकार को छीन लिया । मांडर रानीखटंगा [illegible] के अधीन है [illegible] इलाके के अधिकार को छीनकर आप ने अपना अधिकार [illegible] सुरेश टोप्पो को मांडर का पाद्री बना दिया ।

7- पत[illegible]ा मंडली रांची इलाका के अधीन है जिसका सेक्रेटरी श्री जीवन लकड़ा हैं [illegible] अंचल सभा के अधिकार को लूट कर पाद्री सुरेश टोप्पो को वहाँ का पाद्री बना दिया । आप बहुसंख्यक और हम अल्पसंख्यक । आप ने अल्पसंख्यक को अपने काबू में रखने का काम किया ।

8- सरहापानी इलाका नोर्थ वेस्टर्न अंचल के अधीन है जिसके सेक्रेटरी श्री जीवन लकड़ा । आप ने नो० वे० अंचल के अधिकार को लूटकर पाद्री एम० पी० एक्का को सरहापानी का पाद्री दिखा दिया । आप ने अंचल पर अवैधानिक अधिकार जमायां ।

9- नोर्थ वेस्टर्न अंचल सब अंचलों से अधिक बेथेस्दा कालेज के निकट है । यदि बेथेस्दा वोमेन्स कालेज ~~~~ जी० ई०एल० चर्च का है तो इस अंचल से परामर्श लेना और गवर्निंग बोर्ड में प्रतिनिधि लेना आवश्यक था । आप बहुसंख्यक हैं जो चाहते सो हो कर लेते है पर यदि बेथेस्दा वोमेन्स कालेज बहुसंख्यक दल अर्थात मुण्डा लोगों का साम्प्रदायिक कालेज है तो जी०ई०एल० चर्च कम्पाउन्ड से उसको बाहर निकाल देना चाहिये । यदि जी०ई०एल० चर्च का है तो सिर्फ श्री एन०ई०होरो की इच्छा पर नहीं पर बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक दोनों वर्गों की सामुहिक सलाह और फैसले से इस कालेज का प्रशासन होना अनिवार्य है अन्यथा लूथेरन हाता से निकल जाय ।

10- आप ने हमारे लोगों को अपनी ओर खींचने के लिये सरहापानी इलाका में रिलीफ, कम्बल और साड़ी का लोभ और लालच दिखाया और वहाँ की एकता को छीन भंग किया । वह इलाका नो०वे०अंचल का है । आपने बहुसंख्यक होके अल्पसंख्यक को लुभावा देकर अपनी ओर खींच लिया ।

11- आपने अंचल सेक्रेटरी के बिना अनुमति या परामर्श 25-5-79 को सुरेश टोप्पो पाद्री का अवैधानिक सभा कराया जिससे हमारे अंचल को भारी धक्का पहुंचा । आप बहुसंख्यक होने का नाजायज फायदा उठाने वाले और हमारे

---4

हमारे संविधानिक अधिकार पर हस्तक्षेप किया । इस अपराध के लिये आप को क्षमा मांगना है । अल्पसंख्यक वर्ग क पुनर्उत्थान को देखकर बहुसंख्यक वर्ग का पाद्री सी०बी०आईन्द बड़ा मुगारा लेकर 25-5- 79 के अवैधानिक सभा में अल्पसंख्यक वर्ग को कुचल डालने का प्रयत्न किया । ईश्वर को धन्यवाद हो कि उसने हमारे अंचल सेक्रेटरो को बुद्धी ~~विरुद्ध~~ दो और बहुसंख्यक वर्ग के इस अत्याचार के विरुद्ध कचहरी का शरण लिया । अभी मुकदमा विचाराधीन है ।

11- हेडक्वार्टर्स कंग्रीगेशन सोरेंग [illegible] ी नहीं पर सारा क्लोसिया को एकता का चिन्ह है । वहां की मंडली पंच [illegible] रमैन प्रमुख अध्यक्ष इसीलिये है कि सारी क्लोसिया की एकता का झलक और चमक वहां सारे दुनिया के सामने प्रगट हो परन्तु आप लोगों ने उसका ~~रूप~~ और चेहरा को जातीयता का रंग दे दिया है । रांची मंडली पंच की ओर से आप लोगों ने इस हाता के गाछ वृक्ष ,बंगलों के विषय कई बार लिखा-पढ़ी पाया ,पर आप लोगों ने उन्हें हंसी में उड़ा दिया । रांची मंडली की जनता श्री ने आवाज उठाई पर उसको भी आप लोगों ने धुतकार दिया । रांची मंडली पंच और रांची मंडली सारी क्लोसिया की एकता का प्रतिरूप है । उसकी आवाज पर आप का हंसी उड़ाना आप की नासमझता को दिखाता है ।

12- क्लोसिया श्री एन०ई०होरो और पाद्री सी०बी० आईन्द को क्लोसिया के लिये अगुवा और आदर्श नहीं मान सकते है क्योंकि उन्होंने वहां की सम्पत्ति और बंगलों को अपनी निजी ~~[illegible]~~ आबादी बना रखा है । एक बंगले को नि० एन०ई०होरो को रिश्तेदारों में आबाद कर लिया है । श्री पौलूस तोपनो और पाद्री सोरेंग ने वहां के गाछ-वृक्ष आदि को काट लिये । आप लोग रांची मंडली को इनके विषय जवाब तक नहीं देते हैं । आप जब आफिस में बैठे है तो आफिसियल व्यवहार और काम होना चाहिये था परन्तु नहीं हुआ आप लोगों ने हमारे हेडक्वार्टर्स को बर्बाद कर दिया/याद रखिये कि वह हम सभी का हेडक्वार्टर्स है ।

स्तोश हास्टेल और रांची हाता के अन्य बंगलों के विषय अभी हो या पीछे सुअवसर पर इस समय के संचालकों से सारा क्लोसिया के सामने लेखा होगा , अच्छे कामों के लिये सराहना और बुरे कामों के लिये दण्ड देने का अधिकार क्लोसिया का है । लेखा जब देने का समय आ जायगा तब आप लोगों को लेखा देना होगा । इस समय डेम-केयर और हंसी उड़ाने से काम नहीं बनेगा ।

13- हमारा पेओलो जिक्स कॉलेज को आप लोगों ने डुबा दिया था / धन हो हमारे हेडक्वार्टर्स क पुरुष और महिलाएँ जिन्होंने आप लोगों के विरुद्ध साहस के साथ काम किया ~~करके~~ और कॉलेज को ,कॉलेज स्टाफ को और कालेज

-----5

छात्रों को बचा दिया । तोभी अभी भी भय और आशंका बनी हुई है कि आप लोग उस कालेज को बिगाड़ दीजियेगा ।

14- गोस्सनर कालिज जी0ई0एल0 चर्च का है जिसने जमीन दी, घर दी, पैसा दिया इत्यादि । वहाँ जी0ई0एल0 चर्च को सदस्य का प्रिंसिपल होना चाहिये पर अभी तक इस विषय में आप ने कुछ नहीं किया है । जितना तक हम जानते है श्री जोनाथान होरो इस विषय में कुछ कदम बढ़ाये है । हम उसे सराहते हैं और उसको साथ देने के लि[illegible]ार है । हमारे क्लोशा की संस्थाएँ हमारी बनी रहें जैसा रानीखटंगा का [illegible] जुएल लकड़ा हाई स्कूल हमारे कब्जे में है । याद रहे कि डा0 मिंज के विरुद्ध कुछ कहना नहीं है । उसको खास जी0 ई0एल0 चर्च का अंग होना है ।

- : 1974 का नया संविधान : -

श्री सी0ए0 तिर्की कन्सटीटुवेन्ट बोडी के कनवीनर की कुर्सी से 1969 में लिखते हैं " द चर्च बिडस फोर ए निव कोन्सटीयुशन " अर्थात् क्लीसा एक नये संविधान के लिये आज्ञा देती है । एक दल या हिंसा नहीं पर सारी क्लोसा का अनुभाव हुआ है कि अब पुराने संविधान से कलीसा का काम नहीं चलेगा, एक नये संविधान के लिये सर्वसम्मति से मांग हुई और के0एस0एस0 ने एक कमीटी बनाई कि इस काम को करे / मि0सी0ए0 तिर्की इसके कनवीनर नियुक्त किये गये । तिर्की कमीटि ने क्या किया मालूम नहीं । ऐसा मालूम पड़ता है कि मसौदा बनाया गया पर कचहरी से पाबन्दी का हुकुम होने के कारण अन्त तक काम नहीं हो सका / रेकार्ड से साफ बात है कि 26-3-74 को निम्न महाशयों का एक डाफ्टिंग कमीटी के एस0एस0 द्वारा बनाई गई :-

1- पादी सी0बी0 आईन्द, 2- मि0 जी0 निडु अथवा पादी सी0एस0 बी0 बोरो, 3- पादी डा0 एम0 बागे, 4- प्रो0 पी0डी0 सोरेंग, 5- मि0सी0ए0 तिर्की, 6- मि0 एम0टी0 समद, रांची, 7- मि0 जेड लकड़ा अथवा श्री उरबानुस टोप्पो, 8- प्रमुख अध्यक्ष पद के हेतु, पादी सी0बी0 आईन्द कनवीनर नियुक्त किये गये ।

संविधान तैयार होकर के0एस0 द्वारा मंजूर किया जा जाकर अंग्रेजी में 44 पन्नों की किताब छप गई । 31-10-75 को 4-9 दिसम्बर 1974 के0 एस0 एस0 द्वारा मंजूर की हुई नियमावली को लागू करने के लिये पूर्ण के एस0एस0 को बुलाहट हुई । चार अंचलों से सदस्य हाजिर हो गये परन्तु साउथ ईस्टर्न अंचल से एक भी सदस्य उपस्थित नहीं हुआ । पादी निरंजन एक्का के लेख अनुसार साउथ साउथ ईस्टर्न अंचल का यह व्यवहार के0 एस0एस0 को बायकोट करना समझा गया

--6

और चारों अंचलों के प्रतिनिधियों ने सर्ब्बसम्मति से आपतकालीन अवस्था (एमरजेन्सी) घोषित किया । प्रमुख अध्यक्ष, उप-प्रमुख अध्यक्ष, सेक्रेटरी की खाजानची खत्म माने गये और के०एस०एस० भी भंग समझा जाकर क्लीसिया की सारी जवाबदेही और प्रशासन का भार पाद्री डा० सी०के० पौ-ल सिंह को सुपुर्द कर दिया गया । जब साउथ ईस्टर्न अंचल के० एस०एस० से बायकोट करके अलग हो गया, तब नोर्थ वेस्टर्न अंचल ने निर्णय लिया कि जब तक के०एस०एस० के संगठन में भंग नहीं लेंगे तबतक क्लीसिया कि अशान्ति और मूल समस्य का समाधान नहीं होगा और वह अलग हो गया । साउथ ईस्टर्न अंचल के बायकोट करने से क[illegible]सिया का एंजिन का एक पहिये एक ओर गड्हे में जा गिरा और दूसरा पहिया [illegible] और दूसरे गड्हे में जा गिरा और क्लीसियारूपी गाड़ी अटक गई । एंजिन के दो पहियों के गिर जाने से क्लीसियारूपी भवन के दो स्तम्भ जो खास खम्भे थे एक दक्खिन की ओर और दूसरा उत्तर की ओर गिरे पड़े है । तत्कालीन प्रमुख अध्यक्ष पाद्री डा० सी०के० सिंह ने परि-स्थिति का ठीक-ठीक और सही मूल्यांकन नहीं किया और बालू पर मकान बनाने का सा काम किया । तूफान आने पर वह कड़ाके का आवाज करके गिर गया और गिरा हुआ ही है । उनका काम था सभी को समझा बुझाकर एक राय में लेकर नये संविधान को लागू करना । इसने यह काम नहीं किया । नये संविधान की आवश्यकता क्यों हुई और जब बन गई तो फिर से पुराने संविधान को जीवित समझना बिलकुल गलत था । जिस रोज के एस०एस० ने नये संविधान को मंजूर किया (9-12-1974) उसी दिन से उस पुराने संविधान को मरा हुआ समझना चाहिये था । अभी वही दशा है कि न पुराना संविधान है न नया । अखण्ड के० एस०एस० का अन्तिम, मुल्यवान और सराहनीय काम यहीं 1974 को मंजूर किया हुआ संविधान है । क्लीशा की शान्ति, एकता और उन्नति इसी संविधान से हो सकता है । उसको लागू करने में बायकोट करने के द्वारा सा०ई० अंचल अपराधी है क्योंकि इसने क्लीसिया में शान्ति, एकता और उन्नति के एकलाही रास्ता को लोहे का दरवाजा लगा कर बन्द कर दिया । 31-10-1975 से लेकर क्लीसिया की शोकमय दशा साउथ ईस्टर्न अंचल के द्वारा लायी गयी और जबतक इसके विषय अपनी सफाई और माफी की अर्जी न करे उस अंचल को केन्द्रीय सभा में आने का कोई अधिकार नहीं है । उसी प्रकार पाद्री निरंजन एक्का दल को अपने तथाकथित नोर्थवेस्ट जी०ई०एल०चर्च को भंग करके और पश्चात्ताप करके फिर वापस आ जाना है ।

तथाकथित के०एस०एस०

थोड़ी देर के लिये कल्पना के दृष्टिकोण से मान लिया जाय कि दो पहियों के अलग अलग हो जाने पर भी 1960 का संविधान हो जारी है तो वर्तमान तथाकथित के०एस०एस० से हमारा कहना है कि :-

1- साउथ ईस्टर्न अंचल ने 1960 संविधान आधारित के०एस०एस० पर लात मारके बायकोट किया । इसलिये वे जो साउथ ईस्टर्न अंचल से अभी

-----7

प्रतिनिधि बनकर आये है वे नोर्थ वेस्टर्न अंचल को तंवोनार गिरा ~~दिये~~ दिये और जब नो०वे० अंचल गिर गया तब उसी के ०एस०एस० में फिर आये है । यह निष्ठुमता, अन्याय और अधर्म का काम है । उनको के०एस०एस० का सदस्य मानना अनुचित और अख्रिस्तानी है । उनके बायकोट करने ही से उरांव लोग ने एक नई क्लीसा को घोषित करने का काम किया । इस कारण साउथ ईस्टर्न अंचल इस बिभाजन का उतरदाई है । और जबतक हमारी क्लीसा के शुभ चिन्तक और निष्पक्ष न्यायक के सामने यह बात सफाई नहींहो उस अंचल से प्रतिनिधियों का आना पक्षपात ,अधर्म और छल है ।

2- इस तथाकथित के०एस०एस० में मध्य अंचल से जो सज्जन बैठते है उनके विरुद्ध पानी सान। इलाका ने आपत्ति करके उस अंचल का दो में एक इलाका इन वारों को अपने अंचल का प्रतिनिधि मानना अस्वीकार कर दिया है । आप ~~लोग~~ लोगों का उन वारों को के०एस०एस० का सदस्य मानना न्यायसंगत नहीं है ।

3- पाद्री जुनूल तोपनो जिसको अंडाण्ड के०एस०एस० में प्रमुख अध्यक्ष के पद से इस्तीफा करवाया और उसने इस्तीफा भी किया जिसे सारे क्लीसा जानती है उसका के०एस०एस० में फिर आना और सारी क्लीसा के मामलों में हाथ डालना संबिधान और न्याय के विरुद्ध है । वह के०एस० एस० ~~।~~ 1/प का मेम्बर नहीं हो सकता है ।

4- पाद्री सुरेश टोप्पो के विषय हमने आप को लिख चुके है कि उसने हमारे अंचल को छोड़ दिया । वह इस अंचल का प्रतिनिधि नहीं है । उसके विरुद्ध हमने कचहरी में मुकदमा किया है कि उसका अध्यक्ष पद का चुनाव अवैध ,अनियमित और नजायज है । उसको हम नो०वे०अंचल का प्रतिनिधि नहीं मानते है ।

5- हमने आप को लिख चुका है कि श्री पौलुस तोपनो ने इस अंचल को छोड दिया व वह हमारा प्रतिनिधि नहीं है । इसके अलावे आप ~~1980~~ 1981 पंजिका में दिखाते हैं कि श्री पौलुस तोपनो और श्री किरन तोपनो दोनो के०एस०एस० के सदस्य है । ये दोनो एकही पत्थलकुदवा मंडली के हैं । 1960 के संबिधान के अनुसार एक ही मंडली से दो लेमेन का के०एस०एस० का मेम्बर होना अवैधानिक है । आश्चर्य ~~मान्~~-बात है कि इस नियम को भी आप ने किनारे कर दिया । इसकारण न श्री पौलुस तोपनो न श्री किरन तोपनो के० एस०एस० का मेम्बर है । छोटे बड़े सभी अंचलों से चार-चार सदस्य होते है । आपने हमारे अंचल से केवल तीन रखा है सो भी अवैधानिक । हमारे सेक्रेटरी श्री जे० लकड़ा को अन्याय सेहमें बिना बताये निकाल दिया । इन तीन ~~x~~ जनों में भी जिसअंचल को उरांव अंचल माना गया है , ये अवैधानिक तो है ही और उरांव अंचल से 66 प्रतिशत मुण्डा है और 33 प्रतिशत उरांव / यह है पाद्री सोरेंग की लीला । ये सब है आप ही की पंजिका की बाते ।

-----8

और सम्भवतः श्री किरन तोपनो को तथाकथित नो0वे0 अंचल सभा में 3/4 अर्थात 75 प्रतिशत मुण्डा और 25 प्रतिशत उरांव पदधारी हैं ।

6- पाद्री मार्टिन टेटे, रांची मंडली में, रांची हाता में, और थेओलोजिकल कलिज का प्रिंसिपल रहते हुए 1960 के संविधान के अनुसार मध्य अंचल का अध्यक्ष हो ही नहीं सकता है । आप ने उसको इस पद में अन्याय से मान्यता देकर और क्लीसा के समस्त अंचलों में हाथ डालने का अधिकार देकर क्लीसा को भारी आघात पहुँचाया है । आश्चर्य की बात है कि इस मामूली सी बात में भी आप गिर गये । आप ने सारी क्लीसा और गोस्सनर मिशन, लू0व0 फेडरेशन और सरकार की आँखों में धूल फेंका है । उसका एक्स अंटो टोली दिखाना झूठ है ।

7- पाद्री सी0बी0 आईन्द का के0एस0एस0 का सदस्य बनाना संविधान के विरुद्ध है । हमलोग और अन्य लोग 1981 पंजिका में गलती बता सकते हैं पर आप लोग नहीं । आप लोगों ने उसको बनाया, छपवाया, वितरण किया । विश्वास योग्य सूत्र से पता चला है कि पाद्री सिलास कुजूर जब प्रचारक ट्रेनिंग स्कूल के हेडमास्टर थे उसको अंचल का सक्रिय पाद्री आप लोगों ने स्वीकार नहीं किया । कभी भी उस स्कूल में पाद्री मार्टिन जोजो और पाद्री डम्बलन डांग हैं । इनको भी आप लोगों ने गोविन्दपुर इलाके के पाद्री नहीं माना है (देखिये 1981 पंजिका) परन्तु पाद्री सी0बी0आईन्द जो टेकनिकल ट्रेनिंग सेन्टर फुदी का डाईरेक्टर है उसको आप लोग बुर्जु इलाके का सक्रिय पाद्री मानते हैं (देखिये उसी पंजिका को) । आप लोगों का अन्याय यहाँ बिलकुल साफ-साफ दिखाई देता है । वह किसी प्रकार क्लीसा के के0 एस0एस0 का सदस्य नहीं हो सकता है ।

बायकोट

8- बायकोट करने वाले अंचल से मिलकर असम, उड़िसा और मध्यअंचलों में मामलों की सफाई किये बिना पाद्री प्रो0 डी0 सोरेंग को उप-प्रमुख अध्यक्ष चुना, इसलिये उसका चुनाव भी अवैधानिक है । वह भी के0एस0 का सदस्य है नहीं है । 20 में 13 जनों को सदस्यता अवैध है । केवल 7 जनों से के0एस0एस0 नहीं बनता है । इसलिये के0एस0एस0 है ही नहीं । पाद्री सोरेंग का गोस्सनर मिशन, लू0व0 फेडरेशन और सरकार के साथ कारबार करना बिलकुल अवैधानिक है ।

9- पाद्री पी0डी0 सोरेंग ने घिनौने शब्दों में उरांव लोगों का अपमान किया । आप लोगों से हमें कोई सहानुभूति नहीं दिखाई दिये हैं । अर्थात आप लोग भी उसके साथ हमारी निन्दा करते हैं । (देखिये हमारे अंचल सेक्रेटरी की 12 पन्नों वाली चिट्ठी पृष्ट 10) / आप लोगों की मुण्डा और खड़िया जातियों के समान गोस्सनर क्लीसा में हमारी जाति का भी वही स्थान और सम्मान है जो आप की जातियों का / संविधान भंग करने वाला पाद्री सोरेंग, उरांव जाति को निन्दा करने वाला पाद्री सोरेंग किसी भी भांति से प्रमुख अध्यक्ष नहीं रह सकता है । इनके आफिस में देखिये रिटायर्ड श्री पी0टोप्पनो सारा कलिसिया के खजांची और जायदादों का सेक्रेटरी, कर परदाज, फिर 80 वर्ष से श्री अबिन्द हारो --

10- इसी सिलसिले में यह भी कहना अत्यन्त आवश्यक है कि यह बात सभों को दरकार मालूम हुआ है कि कलीसा के केन्द्रीय सभा में हमारी सब से विषेश ,केन्द्रीय माता मंडली जो रांची में है और हेडक्वार्टर्स कोंग्रीगेशन मानी जाती है । (देखिये नया संबिधान पृ0 16,(4) / को लेना आवश्यक है ,जैसा आप लोग अपने को दिखा रहे हैं आप लोगों को नियमावली के उल्लंघन करने का की अधिकार है तो पत्थलकुदवा के बदले रांची मंडली से लेना उचित था । इससे बिलकुल साफ है कि आप ने अपनी इच्छा को पूरी करने के लिये पक्षपात और अन्याय किया है ।

11- जुलाई 5,1 9 आपलोगों को इसी वर्तमान शासन काल में गोस्सनर मिशन से दस(10) अगुवों के पास चरवाही पत्री भेजने की आवश्यकता हुई जिन 10 में 7 आप महाशयगण हैं । भारी हृदय में पड़कर गोस्सनर मिशन हमारे शुभचिन्तक खिल्ली उड़ाते हैं ! ईश्वर से हमारी विशेष प्रार्थना है कि ईश्वर कलीसा में के सब अगुवों को अपने पवित्र आत्मा से प्रकाशमय करें ,जिससे कलीसा में शान्ति और प्रेम फिर से स्थापित हो सके ताकि छोटानागपुर और असम के सब लोग ख्रिस्तानों में शान्ति और प्रेम के आश्चर्यकर्म को देखकर प्रभु का गुणानुवाद कर सकें ।

इस प्रकार पादरी पी0डी0 सोरेंग ,2- पादरी सी0बी0 आईन्द ,3- पादरी डा0 एम0 बागे ,4- श्री सुगद बागे ,5- श्री इसहाक मिंज ,6- पादरी एम0 टेटे,7- पादरी जे0 कुल्लू ,8- श्री ए0 लकड़ा,9- श्री एल0टेटे,10- पादरी जे0 डोंगनी 11- पादरी सुरेश टोप्पो ,12- श्री पौलुस टोपनो ,13- श्री किरन हेम्ब्रोम , के0एस0एस0 के सदस्य हैं हो नहीं । केवल 7 व्यक्तियों के द्वारा के0एस0एस0 बन सकता नहीं बन सकता है । इसलिये पादरी सोरेंग को यह सभा एक प्राईवेट सभा है , यह एक पार्टी या दल है । हम इस पार्टी को के0एस0एस0 नहीं मानते हैं और नहीं मानेंगे । इस पार्टी को सब फैसलाएँ नजायज और अमान्य ठहरते है । पहिली बात तो यह है कि 31-10-75 को 1960 का संबिधान का अन्त हो गया दूसरा कि आप लोगों ने स्वंय हो 1960 ई0 के संबिधान को अपने कामों और व्यवहार के द्वारा उल्लंघन पर उल्लंघन करके रद्दी कागज के टोकरी में फेंक दिया अभी न आप का 1960 संविधान है न 1974 का / यों आप को बैधानिक अस्तित्व को आप ने स्वंय नष्ट कर दिया ।

तथाकथित के0एस0एस0(लगातार)

आप लोगों को सभा को दृश्य -पंजिका 1981 / के0एस0एस0 = कुल 22 सदस्य है । बंगाली 1/22,रौतिया-1/22,उरांव 4/22 = 27-25%, खड़िया 5/22,मुण्डा -11 /22 = 72-72%,

हम लोग इस भंगित, अवधानिक , नियमविरोधी,जातीय सभा को जो

---10

मक्खियों को छानती और ऊंटों को निगल जाती है नहीं मानते है और नहीं मानेंगे ।

साउथ ईस्टर्न अंचल का बायकोट /

इस बायकोट के कारण और द्वारा :-

1- नोर्थ वेस्टर्न अंचल के जीएसएस से निकल गया ,(2) उरांव भाईयों तथा बहिनों ने एक तथाकथित ,नोर्थवेस्ट जी0ई0एल0चर्च बना लिये और यों क्लीसा विभक्त हो गई । (3) के0एस0एस0 भंग हो गया और अभी भी भंग है । (4) क्लीसा का केन्द्रीय स्थान शून्य है ।

नया संविधान बनता तो :-

1- मुण्डा ,उरांव ,खड़िया आदि सब जाति के लोग प्रेम से एक साथ मिल जाते ,(2) ऊपर 4 को । से 4 को बातें नहीं हो पाती ।

2- सारी क्लीसा की एकता बनी रहती ।

3- आर्कडियोकिस (असम,जमशेदपुर,खूंटी,टकरमा,उड़िसा ,सिमडेगा, पत्थलगांव ,रांची और रांची हेडक्वार्टर्स मंडली (देखिये नया संविधान पृष्ट20 और 16) से ईश्वर के चुने हुए लोग सिनोडिकल सभा के सदस्य बनते और सारी क्लीसा के लिये भलाई का काम करते।रांची हाता का सुव्यवहार होता ।

4- एक मन और एक आत्मा से सुसमाचार का प्रचार अधिकाधिक किया जाता ।

5- क्लीसा के 40,000 उरांव खिस्तान खोये नहीं जाते ।

6- ऐसा होता :- क्या मनोहर भली बात,

जहाँ भाई हाथों हाथ
चलते हैं और हैं एक प्राण ,
खिस्त की आज्ञा के समान ।।
वहाँ हरएक उत्तम दान ,
शान्ति आनन्द और कल्याण ।
ओस के तुल्य उतरेगा
वहाँ आशीष बसेगा ।।

अवसर बीत नहीं गया है । निष्पक्ष अगुवे यू0ई0एल0सी0आई0 ,गोस्सनर मिशन और लूथेरान वर्ल्ड फेडरेशन से निमंत्रित किये जाय जिससे उनकी अगुवाई में 9-12-74 का नया संविधान लागू किया जाकर क्लीशा में शान्ति और एकता की पुनः स्थापना हो सके ।

-----।।

- : प्रार्थना :-

है ईश्वर तूजो जो ऐसा सामर्थी है,
कि हमारी बिनती और समझ से
कहीं अधिक काम कर सकता है,
उसी सामर्थ के अनुसार
ऐसा [illegible] कर कि
हमारी यह गोस्सनर कलीसा
जिसमें अपने महान अनुग्रह से
भिन्न-भिन्न जातियों को
एक झुण्ड में तू ने बुला रखा है
तुझ उदार और प्रेमी ईश्वर के ग्रहण योग्य ठहरे ;
इस कलीसा में और यीशु ख्रीष्ट मसीह ने
कुछ तेरी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे

T/ आमीन ... .

1- सही पाद्री मुक्तिप्रकाश एक्का, अध्यक्ष [signature]
2- सही पाद्री दानिएल मिंज, उप-अध्यक्ष Sd/- Daniel Minz
3- सही श्री जीवन लकड़ा, सेक्रेटरी [signature]
4- सही श्री मनोहरलाल लकड़ा, ऐक्टिंग खजांची, Manohar Lal Lakra
5- सही पाद्री डाक्टर जेoजेo ओपीoतिग, ओनo डाईरेक्टर [signature] 20.8.81

Attested [signature] 16/9/81

6 मरसल कुल्लू प्रचारक 22-8-81
7. B.K. Ekka 23/8/81
8 मंगलदान टोप्पो
9) [illegible]
10 David Ekka 23/8
11 [illegible]
12. [signature]
13 [illegible]
14 M. Ekka
15 [signature]
16. R. Kulla
17. मरसल केरकेट्टा प्रचारक 22-8-81
18 सुनीता एक्का
19 [illegible] 20-8-81
20 Juel Ekka
(21) [illegible]
22, सिमोन टोप्पो
23- आल्लाद तिर्की
24. [illegible]
25 Elizabeth Ekka
26 Laden Tirkey
27 Suleman Ekka
28 J Ekka
29 प्यारी तिर्की
30 Jidem Ekka

31- मुकुट तिग्गा

32 - कुरिस्ता तिग्गा

33 - मार्ग्रेथा तिग्गा

34 - नेम्हरस तिग्गा

35 · सलोमी एक्का

36 - [illegible] एक्का

37 - हेमेन एक्का

38 - [illegible] कुमार खलखो

39 Chandmani Khalkho

40 कुशल एक्का,

41 · दानियल एक्का,

42 - सुरेश लकड़ा

43 · Niranjan David Tirkey

44 मंगल दास लकड़ा,

45 जीवन लकड़ा

46 मान मोहन लकड़ा

47 · दुसिला एक्का

48 [illegible] लकड़ा

49 [illegible]

50 - मसीह प्रकाश तिर्की

51 [illegible] तिर्की

52 मर्सलिया लकड़ा

53 - दुना [illegible]

54 सहाय तिर्की

55 [illegible]

56 [illegible] लकड़ा

57 मनसीद लकड़ा

58 इवा तिर्की

59 सुरेश तिर्की

60 मुकुट तिर्की

61. डोलपोलिहेन तीगा

62 [illegible] मिंज

63 अगस्टीना तीगा

64 मेहरानी लकड़ा

Copy to:
The Secretary,
G.E.L. Church
for information and
needful.
[signature] 16/9/81

Dr. C. K P Singh

G.E.L.CHURCH IN CH.N.& ASSAM, NORTH WESTERN ANCHAL
(Registered under Societies Regn. Act)

Khorhatoly, Old H. B. Rd. P.O. Bariatu,
Ranchi-834009,
the 30th Aug. 1981

To,
1. The Rev.C.B.Aind, 2.The Rev.Dr.M.Bage, 3.The Rev.N.Kullu,
4. The Rev.Dr.C.K.P.Singh, 5.The Rev. P.D.Soreng, 6.The Rev.
Martin Tete and 7. The Rev.Junul Topno.

Dear Sirs,

We the undersigned members of the G.E.L.Church beg to draw your benevolent attention to the following situations and circumstances which obtain in our church today and the actions demanded by them.

I.Change from Democratic to Totalitarian System

As soon as Rev. P.D.Soreng took the seat of the Pramukh Adhyaksh he dissolved the duly elected Mandli Panch of our common Ranchi Headquarters Congregation and nominated Tola representatives according to his own choice.

You suspend, discharge any one at any time and the members of the Church are at a loss why this or that was done. You dismiss any member of a Sabha or a Committee at any time and the person concerned is not even told why this or that was done to him. Obviously you have suspended the Constitution, rules and regulations of the church. We have already pointed out some of such things in our previous letter. We may add that allegations were brought against Rev. P.D.Soreng for having ordained some persons without proper consultation with committees and Sabhas concerned.

For the last Refreshers' Course of the Pastors some were called and others were simply neglected. The group invited was considered to be the Ministerium of the G.E.L.Church. At the meeting of the Kalisha Sangh members were received arbitrarily and many bonafide members were denied their rights. In all the affairs, as far as we know you all have joined Rev. Soreng. This totalitarian attitude and behaviour cannot be allowed in our church.

You discharged Mr. Sushil Barla without rhyme and reason. The fault was yours and the rod was showered upon him. You had no decision of the legal Property Board and you had no clear instruction from a legal K.S.S. It was none of your business to order him to communicate any decision. Please don't misunderstand us. Here we are concerned with the rules and the procedure and not with a particular person. This shows how whimsical your actions are.

II Disregard of the Lutheran Janata

You have determined to act arbitrarily without listening to the Lutheran Janata. Please recall all the letters, representations, memorandum etc. from the Ranchi Headquarters Congregation, The Panisuni Ilaka, The Hazaribagh Ilaka. Would you kindly tell us to how many of them you have replied or have given attention to? As far as we ourselves are concerned, we ask what have you done in connection with Dr.Tiga's clarion Call, Secretary Jiwan Lakra's letter regarding Rev.Suresh Toppo, Rev.S.Mohan Md., Rev. C.H.Tirkey and Sri Paulus Topno who left the North Western Anchal Sabha in the formation of which they had full participation and then they formed an illegal, unconstitutional and rival group, Dr. Tiga's Pariwarik Patri, the Printed notice in the Chotanagpur Darshan under the signature of Dr. Tiga and Secretary Sri Jiwan Lakra calling attention of the people concerned towards proper use, control and management of the properties of the G.E.L.Church, the Cyclostyled letter of Secretary Mr. Jiwan Lakra in 12 pages, the Cyclostyled letter of 11 pages signed by five of us. May we ask if you have ever read them and given your thoughts on their contents. We have sent you other letters e.g.,

contd.

informating you about the election of an Adhyaksh in place of Dr.Tiga who resigned, appointment of representatives to fill up vacancies. Whether you have read them or not but, in the interest of the well-being of our church we have to pursue and press them at all costs.

III The Majority Community, not a friend but a Terror.

A sense of fear, distrust, insecurity, and instability is ever lurking at the doors of about 65,000 Oraon members of the G.E.L.Church living in Bihar and in its contiguous areas of the States of West Bengal, Madhya Pradesh and Orissa. The behaviour of the representatives of the Majority Community on 30.10.1975 was a clear deception which forced the members of the Minority Community (Oraons) in their dismust and utter hopelessness, deliberately to take a risk and to take a decision to take shelter under what they call the newly born North West G.E.L.Church. We would want to know how many of you and how often you being of the elder brother according to the numerical strength and more powerful in the Central Organisation of the Church, went to invite them to come back giving them an assurance of your sympathy and love ? You deputed Rev. Paulus Minz to claim paddy for you. The result was that in a clash between two groups of Oraons Reverend Paulus Minz was so severely beaten that he was almost going to die. Thanks be to the police who helped him and his life was saved. The question still remains what did you do in the matter. You sat at a distance to enjoy the scene of two groups of Oraons in a horrible conflict. If we say that the leaders of the Majority Community have made an alliance with the Kharia leaders of the Church to oust the Oraons from the G.E.L.Church Compound at Ranchi and from all the posts and possitions are we wrong ? Do you want us to prove what we say ? We are prepared for it. We do not want to indulge in talking about the communal differences. We believe that in Christ there is no difference. But we have been forced to speak out because we contend that we Oraons are not responsible for initiating any communalism in the Church. We preach the Gospel of Reconciliation and we shall continue to do that but we have our duty towards ourselves and our Community which must not be forgotten, without, of course, doing any injury to others.

IV The Dismal Situation of the Church

The fact that there is much dissatisfaction in many corners of the church cannot be denied. There is hostility, bitterness among members and many divisions. This is borne out by the fact that according to a publication in the Gharbandhu some members of the United Evangelical Lutheran Church In India were to meet with the representatives of the G.E.L.Church and help settlement of differences.

Taking recouse to hunger strike by the Principal of the Gossner High School in protest of the decision of the Church authorities right in the premises of the head office of the G.E.L.Church, Taking recourse to hunger strike by the students of the most respectable College, Gossner Theological College, are unfailing proofs of the most unsatisfactory and objectionable decisions of the authorities concerned. This dismal situation, if it is allowed to continue and if this kind of hunger strikes in protest of objectionable actions of the authorites have to be repeated we can at once see the fall of whole structure of the Church. The authorities failed to settle the matters of Headmaster of Gossner Middle School and that of the Bethesda Middle School and the matters are in the Court. If all such matters which have reference to administrative activities of the Church authorities have to go to the Court because of the failure of the authorities to do justly and uprightly without giving cause for anyone to seek protection of the Court, these do not show anything wrong with those who are aggrieved but with those who do such things which compel members to seek the help of the Law. Many other cases can be quoted to prove the dismal situation of the G.E.L.Church. The authorities have not only done injury to the prestige of the Church but they have been spending the most valuable money of the Central Funds which should have been used for the improvement and development

contd

projects. Oh! what a tragedy! Church money spent to defend the wrong and objectionable decisions of the authorities, and that in the Court.

V. Collapse of the Central Organization

The Central Organization of the G.E.L.Church collapsed on 30.10. 1975 when the South Eastern Anchal boycotted the meeting of the K.S.S. This was a great catastrophe. This rupture and destruction has never been repaired.

The Majority group has forced its way in-spite of this, without stopping to think what has happened to the Central Organization. They wrongly think that because they are the majority they can drive even the engine which is broken into pieces. And in doing so they have created an illegal body to control, manage and administer. We have already explained ~~xxx xxxxx~~ in our previous letter that in the present so-called K.S.S. 13 out of 30 have not been legally elected. Only seven (four from Orissa and three from Assam) do not make the K.S.S. The worst of all is that the election of Dr.Bage as Up-Pramukh Adhyaksh is wholly wrong and unconstitutional. In his election the North Western Anchal was deliberately excluded. There were Rev. P.D.Soreng, Rev.Dr.M.Bage, Rev. Nathaniel Kullu, Rev. Martin Tete and Rev. Junul Topno. Rev. Junul Topno and Reverend Martin Tete were not eligible to hold the Office of an Adhyaksh, Rev. P.D.Soreng could not vote, thus there remained Rev. M. Bage and Rev. N. Kullu. Dr.Bage was a candidate for the election. Hence Rev. Kullu alone made Dr.Bage the Up-Adhyaksh... Ridiculous, Absurd.

VI The pearl cast before the swines

The one and the only task entrusted to the K.S.S. of 1975 by the one undivided G.E.L.Church was to implement the New Constitution of 1974 (vide Appendix 'A' p.34 of the New Constitution). The said K.S.S. defied and disobeyed the Church. Now it is towards the end of the seventh year. Imagine all the evils which have crept in, and imagine all the boons and blessings which were to be showered upon the church by the New Constitution from the Store house of God refused and returned to the same Store house. The K.S.S. of 1975 and all the successors cast the pearl before the swine.

Amidst wranglings and fightings the only way for peace and unity in the Church found and accepted with one mind and one spirit, by the whole church is the New Constitution of 1974. It is a gift of God a miracle indeed. But alas ! You have cast it before the swines. In this way you have smitten and disfigured the Church which the Lamb has purchased by His precious Blood, the Church born out of the blood of the saints. You have closed the door for 24 representatives from Eight dioceses, one from the Central Youth Organization, one from the Central Mahila Sangh and several permanent invitees and a representative from the Ranchi Headquarters Congregation who were to be the members of the Central Organization of the Church, about 35 chosen from the whole Church who would have taken care and ministered to the entire membership of the Church. You have deprived the Church of His miraculous blessing by illicitly taking, taking upon you, just a few men grouped together unconstitutionally, the rule, control and administration of the Church. You have acted like the dog in the manger. Neither you allow others to come and do some thing good, nor you do it, rather you have been spoiling the whole thing.

VII the Valley of Death

Many sad and undesirable incidents are reported to have happened in the G.E.L.Church Compound in the recent years, This compound is immediately and directly under the control and management of the Central

authorities of the Church who live in this compound itself. Recently i. during your regime some dead bodies were found in this compound. This is something which cannot be overlooked or lost sight of. It presents a grave situation. A number of people have described this Compound tohave become a den of robbers, a valley of death. What a difference it would have made if the attention, interest and care of about 30 men of the whole Church including, especially a representative of the Ranchi Headquarters Congregation one from Youth, and one from Mahila Samgh would have been enlisted. What a difference it would have made if the Mandli Panch of the Headquarters Congregation had been entrusted with a responsibility for the properties of the Compound. You have reserved all power and authority to yourselves and you have changed the Holy Ground into unholy, and full of danger for those who have to go out or go into this Compound, especially from sunset to sunrise.

VIII The Dust of the feet

The representatives of the United Evangelical Lutheran Church in India and those of the Gossner Mission came to help solve our problems, difficulties and differences, They went back. They were not given the opportunity to perform the mission they came for. Their mission was to proclaim and establish peace in the Gossner Church, The majority Community may be feeling self-complacent thinking that the leaders of the so called North West G.E.L.Church are responsible for these well wishers going back blank. The leaders of the so-called N.W.-G.E.L.Church may be feeling self-complacent thinking that they were courageous enough to discard them. But, brethren, please don't make a mistake. The messengers of peace commissioned by the Lord and Master of the Church shook off the dust of their feet as they left the G.E.L.Church. Mind you the Lord says, "Truly I say to you, it shall be more tolerable on the day of judgment for the land of Sodom and Gomorrah than for that town." All the 360,000 members of the Church have fallen victims of this terrible declaration. No one can make an excuse. The dust of their feet has been shaken off upon the grounds of the G.E.L.Church.

IX The wise men of the Church

More than two years ago we wrote to you the wise men of the Church, to consider the injuries and injustices done to our Anchal. We gave you in details who did it and how they did it. We got neither acknowledgement from you nor our grievances were removed. On the contrary, you aligned yourselves with the wrong doers and added to our injuries and injustices. Hence we were compelled to seek the help of the Court.

X Option to seek the help of the Government on the total Situation of the G.E.L.Church.

We are citizens of India, members of the Indian Nation, and members of a Society registred under the Societies Registration Act. The Central Organization of the G.E.L.Church (vide our previous letter). Amout 3,60,000 members of the church are lost and forlorn. has collapsed

Under the circumstances if we do not get a suitable and satisfactory reply from you latest by the 25th of September 1981 we shall be compelled to appeal to the Chief Minister of Bihar in whose jurisdiction our church has been registered and to the Prime Minister of India because our members are spread out in many other states of India, to probe into the matter and to do the needful. In doing so we are sure, we shall

be within the precincts of Christian Ethics. In his Political Ethics St. Paul elucidates clearly and distinctly that the Civil Government is a Divine Institution. (Romans 13:1-7) Further, in his own case he said, "I am standing before Caesar's tribunal .... I appeal to Caesar". (Acts of the Apostles 25:10 + 11)

Yours faithfully.

1. Rev. M.P.Ekka, Adhyaksh, [signature]

2. Rev. Daniel Minj, Up-Adhyaksh Daniel Minz Rev

3. Sri Jiwan Lakra, Secret-ary [signature]

4. Sri M.Lal Lakra, Actg. Treasurer, M. L. Lakra

5. Rev. Dr.J.J.P.Tiga, Hon. Director. J.J.P. Tiga

Copy to: Rev. Niranjan Ekka
Dr. Nirmal Minj.
The Executive Secretary U.E.L.C.
Director, Gossner Mission
Dr. J. J. P. Tiga

C.N.I. Church in Chotanagpur and Assam,
North Western Anchal, Ranchi.

Khorhatoli, Old H.B.Rd.
P.O. Bariatu,
Ranchi - 834009

My dear Edwin,

This is to acknowledge receipt of your letter dated 8.9.1981. I note that your letter is not a personal or domestic. It is concerned with major issues of our church. In your letter you have not specified which group you want me to join. The group of Boycotters, the group of Seceders, the group of Betrayers - all of these are condemned. Last seven years (1975-81) the leaders of the Church have persistently defied and disobeyed Christ and His dear Gossner Church. The Church today is in more miserable and perilous condition than it was on 27.9.1977 when in the Christ Church, to about 250 members of our Church you told us that in the time of emergency even the Government recalls the retired persons for help and service. The fruit of the activities of these Boycotters and Betrayers is that the Central Administrative Organisation of our Church has collapsed.

The Church is not an earthly or human organization. It belongs to Christ. What we men cannot do He can and He will do. Nothing is impossible with Him. In Ranchi itself a mighty bishop, infront of our eyes, was dethroned and the See has been transferred into the hands of another one. Those who defy and disobey the Head of the church will have to disappear and vanish. But the Church of Christ shall remain for ever.

We cry that not a racial community nor a group of self styled persons but Jesus Christ must be hailed as Lord and Master. We want that He must be known and proclaimed as the Ruler and Administrator of His Church. We are not after any power or position. We shall be silent only when according to 1974 Constitution duly and properly elected persons will take over charge of the Church's central affairs and activities. 1974 Constitution is the door appointed by Christ the Shepherd of the sheep through His undivided Gossner Church. All those who enter into the sheepfold climbing in by another way are thieves and robbers.

I am not a Hindu to seek the life of a Sanyasi for my salvation. I am a Christian. I am willing to be a Christian Martyr in the service of my Master. I owe my service, obedience, loyalty and fidelity to Him whom my grandfather Prachin Gabriel Kristen, my father Pracharak Prabhusahay Kristen, amidst suffering and persecution accepted as their Lord and Saviour. I owe my life long allegiance to Him who

P.T.O.

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

REV. DR. C. K. P. SINGH
G. E. L. CHURCH COMPD.
P.O. RANCHI

पिन PIN 834001

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

called and ordained me to be His humble servant and a minister of His Church.

Yours Affectionately

C.C. 1. C. B. Aind (Rev).
2. Dr. M. Bage,
3. Rev. N. Ekka
4. Dr. N. Minz
5. C. K. P. Singh (Rev. Dr.)
6. Rev. P. D. Soreng.

Revid. C.K.R. Singh

CKRS

हाबिल का लोहू दोहाई दे रहा है।

हाबिल का लोहू दोहाई दे रहा है ।

गोस्सनर एवंजेलिक्ल लूथेरन चर्च इन छो० ना० एवं आसम

सेवा में,

रांची, जुलाई 20, 1981

1- पाद्री ख्रिस्त बिजय आईन्द, 4- पाद्री डा० पौल सिंह
2- पाद्री मर्शलन बागे /ST. 5- पाद्री पी०डी० म्येरेंग
3- पाद्री दानिएल कुल्लू 6- पाद्री मार्टिना टेटे

और

7- पाद्री जुब्ल तोपोनो

महाशयगण,

1935 बिशप सेन्डग्रेन कमीशन रिपोर्ट, 1946 लूथेरन वर्ल्ड फेडरेशन के रेनसन साहब के रिपोर्ट, 1960 संबिधान, 1965 कलीसा संघ, 1969 श्री सी०ए०तिर्की नियामावली कमीशन, 1978 पाद्री सी०बी० आईन्द नियमावली कमीशन, 1979 गोस्सनर मिशन क्युराटोरिम की चिट्ठी दस अगुवों के पास, ये सब दस्तावेज है जिनसे यह प्रमाणित है कि गोस्सनर कलीसा में मुंडा और उरांव लोगों के बीच जातीय अशान्ति और तनाव 1935 से आजतक चलता आ रहा है । बिशप मानीकम और बिशप मेयर 1960 की नियमावली में अल्पसंख्यक जातीयों के लिये सुरक्षा को अनिवार्य समझ कर व्यवस्था रख दिया । इससब बातों को ध्यान में रखकर सारी कलीशा को एक सिनोडिकल कौंसिल के अन्दर आठ डियोकेश में 1978 के संबिधान में आईन्दकमीशन ने रख दिया । आशा की गई थी कि इस संबिधान के द्वारा पूर्ण शान्ति और एकता गोस्सनर कलीसा में स्थायी रूप से आ जायगी । मंजूर करके भी लागू नहीं किया गया, इसके विपरीत बैरता और मारपीट होने लगी है । कचहरियों में जी०ई०एल०चर्च और तथाकथित नोर्थवेस्ट जी०ई०एल०चर्च के बीच अनेक मुकदमा है । यह कहना उपयुक्त और सकारण है कि तथाकथित ~~नोर्थ~~, नोर्थवेस्ट चर्च हानि सहेगी क्योंकि उनकी दी गई वकालती से परामर्श बहुत ही कमजोर है । परन्तु हमारे दृष्टिकोण से हमारा निशान दूसरा ही होना चाहिये । कलीसा की मंडलियों, संस्थाओं और जायदादों के लिये उन सभों से लड़ना है जो कलीसा की ~~इन सभों से~~ की इन चीजों को लेना चाहते है और हम जीतेंगे ~~भी~~ । पर उन ख्रिस्तानों की क्या दशा होगी ? 26-3-1977 को पाद्री निरंजन एक्का ने दावा किया कि उनके साथ कुल बपतिस्मा पाये हुए लगभग 76,000 प्राणी उनके साथ थी । ~~इन~~ हमलोगों के कठिन परिश्रम से सेप्टेम्बर 1978 तक में 26,960 जी०ई०एल० चर्च चर्च में लौट आये । 26,960 जनों को समझ में जब सच्ची और अच्छी बात आ गई तो और बहुतों को देखा-देखी कर समझने में आसान हो गया और मई 1979 तक में करीब 10,000 और लौट आये और लगभग 40,000 प्राणी अबतक पाद्री एन०एक्का

-----2

के साथ में है । उनके लिये जमीन जगह ,गिर्जा घर,स्कूल घर ओ स्कूल अपना है नहीं तो लूटपाट ही उनका रास्ता और उपाय रहेगा और तब वे तित्तर बित्तर हो जायेंगे । इन सब बातों को हमारी क्लीसिया को अभी ही सोचना है पर करेगा कौन और कब ? आप लोगों ने बनाने के बदले बिगाड़ा आप लोगों पर हमारी कोई आशा नहीं है । निम्नकारणों से हम आप लोगों को इस क्लीसिया के पदाधिकारी नहीं मानते हैं और जब तक इन बातों का उपयुक्त समाधान निष्पक्ष न्यायकर्ता ओ सलाहकारों द्वारा नहीं किया जायगा तबतक नहीं मानेंगे तथा । हम अपना सारा काम स्वंय ही सम्भालेंगे ।

अल्पसंख्यक वर्ग के साथ व्यवहार

1- बड़े दुःख को बात है कि 1977 मार्च के तूफान से घायल हम जो लगभग 35,000 आप लोगों के साथ जी०ई०एल० चर्च में रह गये हैं , हमारे साथ वही व्यवहार है जो पहिले से आ रहा है । आप लोगों के एजेन्ट पाद्री मनसिद्धी समद और श्री रोबिन होरो ने शान्तिपूर्वक मुण्डा ,उरांव एक साथ बरसों से एक मंडली हो उपासना कर रहे हैं उनको दो भाग कर दिये । दामो,खरसीदाग ओ टुटोहारा मंडलियों को उरांव पाद्री से छीन करके मुंडा पाद्री को दे दिया । इसमें पाद्री पी०डी० सोरेंग का बहुत बड़ा हाथ है । उसने वहाँ जातीयता का भेद भाव रोप दिया ।

2- आप लोगों ने हमारे अंचल सेक्रेटरी को जो के एस०एस० के लिये चुना हुआ प्रतिनिधि है बिना कारण दिये,बिना पूछताछ,बिना दोषारोपण ,बिना बिना न्याय के एस०एस० से निकाल दिये । आप लोगों का यह अपराध साधारण नहीं पर बहुत भारी अन्याय और अधर्म का काम है ।

3- डाक्टर तीगा ने 25-5-79 को अध्यक्ष पद को इस्तीफा दी । अंचल कार्यकारिणी ने पाद्री मुक्ति प्रकाश एक्का को चुन कर प्रमुख अध्यक्ष को तुरन्त सुचना दे दिया और अंचल की पूरी सभा के सदस्यों से डाक द्वारा स्वीकृति लेकर इसकी भी जानकारी पाद्री पी०डी० सोरेंग प्र० अध्यक्ष कोदेदिया । केन्द्रीय सलाहकारी सभा को में इनको बुलाना चाहिये था पर इस विषय में आपलोगों ने कुछ बिना लिखे या जबाब दिये इसको बुलातेही नहीं । बहुसंख्यक वर्ग ने जो चाहा वहा वही हो गया ।

4- डाक्टर तीगा प्रोपर्टी बोर्ड के सदस्य और एडुकेशन------3 बोर्ड के केवल सदस्य ही नहीं पर चुने हुए चेयरमेन हैं । आप लोगों ने उनको भी बिना दोषारोपण ,बिना न्याय,बिना दोषी पाकर भी इन दोनो बोर्डों से निकाल दिये ।

5- आप लोगों ने करकट्टा पेरिश को उड़ा दिया । यह इलाका और अंचल का काम और अधिकार को आप लोगों ने लूट लिया । आप हमारे ऊपर

 हाबिल का लोहू दोहाई दे रहा है।

अवैधानिक अधिकार जमा रहे हैं की समझ के आप बहुसंख्यक है और हम अल्प-संख्यक संख्यक ।

6- आप लोगों ने रानीखटंगा इलाका को उड़ा दिया और हमारे अंचल के अधिकार को छीन लिया । मांडर रानीखटंगा के अधीन है । रानीखटंगा इलाके के अधिकार को छीनकर आप ने अपना अधिकार जमाया और पाद्री सुरेश टोप्पो को मांडर का पाद्री बना दिया ।

7- पत्थलकुदवा मंडली रांची इलाका के अधीन है जिसका सेक्रेटरी श्री जीवन लकड़ा है । आपने अंचल सभा के अधिकार को लूट कर पाद्री सुरेश टोप्पो को वहाँ का पाद्री बना दिया । आप बहुसंख्यक और हम अल्पसंख्यक । आप ने अल्पसंख्यक को अपने काबू में रखने का काम किया ।

8- सरहापानी इलाका नोर्थ वेस्टर्न अंचल के अधीन है जिसके सेक्रेटरी श्री जीवन लकड़ा । आप ने नो0 वे0 अंचल के अधिकार को लूटकर पाद्री एम0 पी0 एक्का को सरहापानी का पाद्री दिखा दिया । आप ने अंचल पर अवैधानिक अधिकार जमाया ।

9- नोर्थ वेस्टर्न अंचल सब अंचलों से अधिक बेथेस्दा हाता के निकट है । यदि बेथेस्दा वोमेन्स कॉलिज ~~लेन को~~ जी0 ई0एल0 चर्च का है तो इस अंचल से परामर्श लेना और गबर्निंग बोडी में प्रतिनिधि लेना आवश्यक था । आप बहुसंख्यक है जो चाहते सो हो कर लेते है पर यदि बेथेस्दा वोमेन्स कालेज बहुसंख्यक दल अर्थात मुण्डा लोगों का साम्प्रदायिक कॉलेज है तो जी0ई0एल0 चर्च कम्पाउन्ड से उसको बाहर निकाल देना चाहिये । यदि जी0ई0एल0 चर्च का है तो सिर्फ श्री एन0ई0होरो को इच्छा पर नहीं पर बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक दोनो बर्गों की सामूहिक सलाह और फैसले से इस कॉलेज का प्रशासन होना अनिवार्य है अन्यथा लूथेरन हाता से निकल जाय ।

10- आप ने हमारे लोगों को अपनी ओर खींचने के लिये सरहापानी इलाका में रिलीफ, कम्बल और साड़ी का लोभ और लालच दिखाया और वहाँ की एकता को छिन्न भंग किया । वह इलाका नो0वे0 अंचल का है । आपने बहुसंख्यक होके अल्पसंख्यक को लुभावा देकर अपनी ओर खींच लिया ।

11- आपने अंचल सेक्रेटरी के बिना अनुमति या परामर्श 25-5-79 को सुरेश टोप्पो पाद्री का अवैधानिक सभा कराया जिससे हमारे अंचल को भारी धक्का पहुंचा । आप बहुसंख्यक होने का नजायज फायदा उठाने चाहे और हमारे

---4

हमारे संविधानिक अधिकार पर हस्तक्षेप किया । इस अपराध के लिये आप को क्षमा मांगना है । अल्पसंख्यक वर्ग के पुनउत्थान को देखकर बहुसंख्यक वर्ग का पादरी सी०बी०आईन्द बड़ा मुगारा लेकर 25-5-79 के अवैधानिक सभा में अल्पसंख्यक वर्ग को कुचल डालने का प्रयत्न किया । ईश्वर को धन्यवाद हो कि उसने हमारे अंचल सेक्रेटरी को बुद्धि दी और बहुसंख्यक वर्ग के इस अत्याचार के विरुद्ध कचहरी का शरण लिया । अभी मुकदमा विचाराधीन है ।

11- हेडक्वार्टर्स कंग्रोगेशन सेरंग साहब ... पर सारी क्लीसिया की एकता का चिन्ह है । वहां को मंडली पंच का चेयरमैन प्रमुख ... है कि सारी क्लीसिया की एकता का झलक और चमक वहाँ सारे दुनिया के सामने प्रगट हो परन्तु आप लोगों ने उसका रूप और चेहरा को जातीयता का रंग दे दिया है । रांची मंडली पंच की ओर से आप लोगों ने इस हाता के गाछ वृक्ष, बंगलों के विषय कई बार लिखा-पढ़ी पाया, पर आप लोगों ने उन्हें हँसी में उड़ा दिया । रांची मंडली की जनता ने आवाज उठाई पर उसको भी आप लोगों ने धुतकार दिया । रांची मंडली पंच और रांची मंडली सारी क्लीसिया की एकता का प्रतिरूप है । उसकी आवाज पर आप का हँसी उड़ाना आप की नाजायकता को दिखाता है ।

12- क्लीसिया श्री एन०ई०होरो और पादरी सी०बी० आईन्द को क्लीसिया के लिये अगुवा और आदर्श नहीं मान सकते है क्योंकि उन्होंने ... की सम्पति और बंगलों को अपना निजी ~~...~~ आवास बना रखा है । एक बंगले को नि० एन०ई०होरो की रिस्तेदारों में आबाद कर लिया है । श्री पौलुस तोपनो और पादरी सोरेंग ने वहाँ के गाछ-वृक्ष आदि को काट लिये । आप लोग रांची मंडली को इनके विषय जवाब तक नहीं देते हैं । आप जब आफिस में बैठे है तो आफिशियल व्यवहार और काम होना चाहिये था परन्तु नहीं हुआ आप लोगों ने हमारे हेडक्वार्टर्स को बर्बाद कर दिया/याद रखिये कि वह हम सभी का हेडक्वार्टर्स है ।

स्तोश हांस्टेल और रांची हाता के अन्य बंगलों के विषय अभी हो या पीछे सुअवसर पर इस समय के संचालकों से सारा क्लीसिया के सामने लेखा होगा, अच्छे कामों के लिये सराहना और बुरे कामों के लिये दण्ड देने का अधिकार क्लीसिया का है । लेखा जब देने का समय आ जायगा तब आप लोगों को लेखा देना होगा । इस समय डेम-केयर और हँसी उड़ाने से काम नहीं बनेगा ।

13- हमारा पेओलो जिक्ल कॉलेज को आप लोगों ने डुबा दिया था / धन हो हमारे हेडक्वार्टर्स के पुरुष और महिलाएँ जिन्होंने आप लोगों के विरुद्ध साहस के साथ काम किया ... और कॉलेज को, कॉलेज स्टाफ को और कालेज

-----5

छात्रों को बचा दिया । तोभी अभी भी भय और आशंका बनी हुई है कि आप लोग उस कॉलेज को बिगाड़ दीजियेगा ।

14- गोस्सनर कॉलेज जी०ई०एल० चर्च का है जिसने जमीन दो..., दी, पैसा दिया इत्यादि । वहाँ जी०ई०एल० चर्च को सदस्य को प्रिंसिपल होना चाहिऐ पर अभी तक इस विषय में आप ने कुछ नहीं किया है । जितना तक हम जानते है श्री जोनाथान होरो इस विषय में कुछ कदम बढ़ाये है । हम उसे सराहते है और उसको साथ देने के लिये तैयार है । हमारे क्लीशा की संस्थाएँ हमारी बनी रहें जैसा रानीखटं... हमारी जुएल लकड़ा हाई स्कूल हमारे कब्जे में है । याद रहे कि डा० मिंज के विरुद्ध कुछ कहना नहीं है । उसको खास जी० ई०एल० चर्च का अंग होना है ।

1974 का नया संबिधान :-

श्री सी०ए० तिर्की कन्सटीटुवेन्ट बोर्डो के कनवीनर की कुर्सी से 1969 में लिखते हैं '' द चर्च बिड्स फोर ए निव कोन्सटीयुशन '' अर्थात क्लीसा एक नये संबिधान के लिये आज्ञा देती है । एक दल या किसी नजीपर सारी क्लीसा का अनुभाव हुआ है कि अब पुराने संबिधान से कलीसा का काम नहीं चलेगा , एक नये संबिधान के लिये सर्व्वसम्मति से मांग हुई और के०एस०एस० ने एक कमीटी बनाई कि इस काम को करे / मि०सी०ए०तिर्की इसके कनवीनर नियुक्त किये गये । तिर्की कमीटि ने क्या किया मालूम नहीं । ऐसा मालूम पड़ता है कि मसौदा बनाया गया पर कचहरी से पाबन्दी का हुक्म होने के कारण अन्त तक काम नहीं हो सका / रेकार्डो से साफ बात है कि 26-3-74 को निम्न महाशयों का एक डाफ्टिंग कमीटी के एस०एस०द्वारा बनाई गई :-

1- पाद्री सी०बी० आईन्द, 2- मि० जी० मिंडु अथवा पाद्री सी०एस० बी० बारा,3- पाद्री डा० एम० बागे, 4- प्रो० पी०डी० सोरेंग,5- मि०सी०ए० तिर्की ,6- मि० एम०टी० समद,रांची ,7- मि० जेड लकड़ा अथवा श्री उरबानुस टोप्पो ,8- प्रमुख अध्यक्ष पद के हेतु , पाद्री सी०बी० आईन्द कनवीनर नियुक्त किये गये ।

संविधान तैयार होकर के०एस० द्वारा मंजूर किया जा जाकर अंग्रेजी में 44 पन्नों की किताब छप गई । 31-10-75 को 4-9 दिसम्बर 1974 के० एस० एस० द्वारा मंजूर की हुई नियमावली को लागू करने के लिये पूर्ण के एस०एस० की बुलाहट हुई । चार अंचलों से सदस्य हाजिर हो गये परन्तु साउथ ईस्टर्न अंचल से एक भी सदस्य उपस्थित नहीं हुआ । पाद्री निरंजन एक्का के लेख अनुसार साउथ साउथ ईस्टर्न अंचल का यह व्यवहार के० एस०एस० को बायकोट करना समझा गया

---6

और चारों अंचलों के प्रतिनिधियों ने सर्व्वसम्मति से आपतकालीन अवस्था (एमरजेन्सी) घोषित किया । प्रमुख अध्यक्ष, उप-प्रमुख अध्यक्ष, सेक्रेटरी और खजानची खत्म माने गये और के०एस०एस० भी भंग समझा जाकर क्लीसा की सारी जवाबदेही और प्रशासन का भार पाद्री डा० सी०के० पौ-ल सिंह को सुपुर्द कर दिया गया । जब साउथ ईस्टर्न अंचल के० एस०एस० से बायकोट करके अलग हो गया, तब नोर्थ वेस्टर्न अंचल ने निर्णय लिया कि तब तक के०एस०एस० के संगठन में भाग नहीं लेंगे जबतक क्लीसा कि अशान्ति और मूल समस्य का समाधान नहीं होगा और वह अलग हो गया । साउथ ईस्टर्न अंचल के बायकोट करने से क्लीसिया का एंजिन का एक पहिये एक ओर गड्डे में जा गिरा और दूसरा पहिया दूसरी [illegible] दूसरे गड्ढे में जा गिरा और क्लीसारुपी गाड़ी अटक गई । एंजिन के दो पहियों के गिर जाने से क्लीसारुपी भवन के दो स्तम्भ जो खास खम्भे थे एक दक्खिन की ओर और दूसरा उतर की ओर गिरे पड़े है । तत्कालीन प्रमुख अध्यक्ष पाद्री डा० सी०के० सिंह ने परि- -स्थिति का ठीक-ठीक और सही मूल्यांकन नहीं किया और बालू पर मकान बनाने का सा काम किया । तूफान आने पर वह कड़ाके का आवाज करके गिर गया और गिरा हुआ ही है । उनका काम था सभों को समझा बुझाकर एक राय मिलाकर नये संविधान को लागू करना । उसने यह काम नहीं किया । नये संविधान की जरुर आवश्यकता क्यों हुई और जब बन गई तो फिर से पुराने संविधान को जीवित समझना बिलकुल गलत था । जिस रोज के एस०एस० ने नये संविधान को मंजूर किया (9-12-1974) उसी दिन से उस पुराने संविधान को मरा हुआ समझना चाहिये था । अभी वही दशा है कि न पुराना संविधान है न नया । अखण्ड के० एस०एस० का अन्तिम, मुल्यवान और सराहनीय काम यहीं 1974 को मंजूर किया हुआ संविधान है । क्लीशा की शान्ति, एकता और उन्नुति इसी संविधान से हो सकता है । उसको लागू करने में बायकोट करने के द्वारा सा०ई०अंचल अपराधी है क्योंकि इसने क्लीसा में शान्ति, एकता और उन्नति के एकलाही रास्ता को लोहे का दरवाजा लगा कर बन्द कर दिया । 31-10-1975 से लेकर क्लीसा की शोकमय दशा साउथ ईस्टर्न अंचल के द्वारा लायी गयी और जबतक इसके विषय अपनी सफाई और माफी की अर्जी न करें उस अंचल को केन्द्रीय सभा में आने का कोई अधिकार नहीं है । उसी प्रकार पाद्री निरंजन एक्का दल को अपने तथाकथित नोर्थवेस्ट जी०ई०एल०चर्च को भंग करके और पश्चत्ताप करके फिर वापस आ जाना है ।

तथाकथित के०एस०एस०

थोड़ी देर के लिये कल्पना के दृष्टिकोण से मान लिया जाय कि दो पहियों के अलग अलग हो जाने पर भी 1960 का संविधान ही जारी है तो वर्तमान तथाकथित के०एस०एस० से हमारा कहना है कि :-

1- साउथ ईस्टर्न अंचल ने 1960 संविधान आधारित के०एस०एस० पर लात मारके बायकोट किया । इसलिये वे जो साउथ ईस्टर्न अंचल [illegible]

प्रतिनिधि बनकर आये है वे नोर्थ वेस्टर्न अंचल को तैचानार गिरा दिये और जब नो०वे० अंचल गिर गया तब उसी के ०एस०एस० में फिर आये है । यह निष्प्रमता, अन्याय और अधर्म का काम है । उनको के०एस०एस० का सदस्य मानना अनुचित और अख्रिस्तानी है । उनके बायकोट करने ही से उरांव लोगों ने एक नई कलीसिया का घोषित करने का काम किया । इस कारण साउथ ईस्टर्न अंचल इस विभाजन का उतरदाई है । और जबतक हमारी कलीसिया के शुभचिन्तक और निष्पक्ष न्यायक के सामने यह बात सफाई नहींहो उस अंचल से प्रतिनिधियों का आना पक्षपात ,अधर्म और छल है ।

2- इस तथाकथित के०एस०एस० में मध्य अंचल से जो सज्जन बैठते है उनके विरुद्ध पानी साना इलाका ने आपत्ति करके उस अंचल का दो में एक इलाका इन चारों को अपने अंचल का प्रतिनिधि मानना अस्वीकार कर दिया है । आप लोगों का उन चारों को के०एस०एस० का सदस्य मानना न्यायसंगत नहीं है ।

3- पादरी जुनूल तोपनो जिसको के०एस०एस० में प्रमुख अध्यक्ष के पद से इस्तीफा करवाया और उसने इस्तीफा भी किया जिसे सारे कलीसिया जानती है उसका के०एस०एस० में फिर आना और सारी कलीसिया के मामलों में हाथ डालना संविधान और न्याय के विरुद्ध है । वह के०एस० एस० में फिर का मेम्बर नहीं हो सकता है ।

4- पादरी सुरेश टोप्पो के विषय हमने आप को लिख चुका है कि उसने हमारे अंचल को छोड़ दिया । वह इस अंचल का प्रतिनिधि नहीं है । उसके विरुद्ध हमने कचहरी में मुकदमा किया है कि उसका अध्यक्ष पद का चुनाव अवैध ,अनियमित और नजायज है । उसको हम नो०वे० अंचल का प्रतिनिधि नहीं मानते है ।

5- हमने आप को लिख चुका है कि श्री पौलुस तोपनो ने इस अंचल को छोड दिय व वह हमारा प्रतिनिधि नहीं है । इसके अलावे आप ~~नवम्बर~~ 1981 पंजिका में दिखाते हैं कि श्री पौलुस तोपनो और श्री किरन तोपनो दोनो के०एस०एस० के सदस्य है । ये दोनो एकही पत्थलकुदवा मंडली के है । 1960 के संविधान के अनुसार एक ही मंडली से दो लेमेन का के०एस०एस० का मेम्बर होना अवैधानिक है । आश्चर्य ~~मारे~~-बात है कि इस नियम को भी आप ने किनारे कर दिया । इसकारण न श्री पौलुस तोपनो न श्री किरन तोपनो के० एस०एस० का मेम्बर है । छोटे बड़े सभी अंचलों से चार-चार सदस्य होते है । आपने हमारे अंचल से केवल तीन रखा है सो भी अवैधानिक । हमारे सेक्रेटरी श्री जे० लकड़ा को अन्याय सेहमें बिना समझाये निकाल दिया । इन तीन जनों में भी जिसअंचल को उरांव अंचल माना गया है , ये अवैधानिक तो है ही और उरांव अंचल से 66 प्रतिशत मुण्डा है और 33 प्रतिशत उरांव / यह है पादरी सोरेंग की लीला । ये सब है आप ही की पंजिका की बाते ।

-----8

और सम्भवत: श्री किरन तोपनो को तथाकथित नो0वे0 अंचल सभा में 3/4 अर्थात 75 प्रतिशत मुण्डा और 25 प्रतिशत उरांव पदधारी हैं ।

6- पाद्री मार्टिन टेटे ,रांची मंडली में, रांची हाता में, और थेओलोजिकल कालेज का प्रिंसिपल रहते हुए 1960 के संविधान के अनुसार मध्य अंचल का अध्यक्ष हो ही नहीं सकता है । आप ने उसको इस पद में अन्याय से मान्यता देकर और क्लोसा के समस्त अंचलों में हाथ डालने का अधिकार देकर क्लोसा को भारी आघात पहुंचाया है । आश्चर्य की बात है कि इस मामूली सी बात में भी आप गिर गये । आप ने सारी क्लोसा और गोस्सनर मिशन ,लू0व0 फेडरेशन और सरकार को की आँखों में धूल फेंका है । उसका एड्रेस छोटी टोली [illegible] झूठ है ।

7- पाद्री सी0बी0 आईन्द का के0एस0एस0 का सदस्य बनाना संविधान के विरुद्ध है । हमलोग और अन्य लोग 1981 पंजिका में गलती बता सकते हैं पर आप लोग नहीं । आप लोगों ने उसको बनाया, छपवाया, वितरण किया । विश्वास योग्य सूत्र से पता चला है कि पाद्री सिलास कुजूर जब प्रचारक ट्रेनिंग स्कूल के हेडमास्टर थे उसको अंचल का सक्रिय पाद्री आप लोगों ने स्वीकार नहीं किया । अभी भी उस स्कूल में पाद्री मार्टिन जो-जो और पाद्री डम्बलन डांग हैं । इनको भी आप लोगों ने गोविन्दपुर इलाके के पाद्री नहीं माना है (देखिये 1981 पंजिका) परन्तु पाद्री सी0बी0आईन्द जो टेकनिकल ट्रेनिंग सेन्टर फुदी का डाईरेक्टर है उसको आप लोग बुर्जु इलाके का सक्रिय पाद्री मानते हैं (देखिये उसी पंजिका को) । आप लोगों का अन्याय स्पष्ट यहाँ बिलकुल साफ-साफ दिखाई देता है । वह किसी प्रकार क्लोसा के के0एस0एस0 का सदस्य नहीं हो सकता है ।

बायकोट

8- बायकाट करने वाले अंचल से मिलकर असम, उड़िसा और मध्यप्रदेशों में मामलों की सफाई किये बिना पाद्री प्रो0 डो0 सोरेंग को उप-प्रमुख अध्यक्ष चुना, इसलिये उसका चुनाव भी अवैधानिक है । वह भी के0एस0 का सदस्य हो नहीं है । 20 में 13 जनों की सदस्यता अवैध है । केवल 7 जनों से के0एस0एस0 नहीं बनता है । इसलिये के0एस0एस0 है ही नहीं । पाद्री सोरेंग का गोस्सनर मिशन, लू0व0 % फेडरेशन और सरकार के साथ कारबार करना बिलकुल अवैधानिक है ।

9- पाद्री पी0डी0 सोरेंग ने घिनौने शब्दों में उरांव लोगों का अपमान किया । आप लोगों से हमें कोई सहानुभूति नहीं दिखाई दिये हैं । अर्थात आप लोग भी उसके साथ हमारी निन्दा करते हैं । (देखिये हमारे अंचल सेक्रेटरी का 12 पन्नों वाली चिट्ठी पृष्ट 10) / आप लोगों की मुण्डा और खड़िया जातियों के समान गोस्सनर क्लोसा में हमारी जाति का भी वही स्थान और सम्मान है जो आप की जातियों का । / संविधान भंग करने वाला पाद्री सोरेंग उरांव जाति की निन्दा करने वाला पाद्री सोरेंग किसी भी भांति से प्रमुख अध्यक्ष नहीं रह सकता है । इनके आफिस में देखिये रिटायर्ड श्री पी0टोप्नो सदर कलिसिया के खजांची और जायदादों का सेक्रेटरी ,कर पर दाज ,फिर 80 वर्ष से श्री अरबिन्द द्वारा --

10- इसी सिलसिले में यह भी कहना अत्यन्त आवश्यक है कि यह बात सभा को दरकार मालूम हुआ है कि कलीसिया व केन्द्रीय सभा में हमारी सब से विशेष ,केन्द्रीय माता मंडली जो रांची में है और हेडक्वार्टर्स कोंग्रीगेशन मानी जाती है । (देखिये नया संविधान पृ० 16,(4) / को लेना आवश्यक है ,जैसा आप लोग अपने को दिखा रहे हैं आप लोगों को नियमावली को उल्लंघन करने का भी अधिकार है तो पत्थलकुदवा के बदले रांची मंडली से लेना उचित था । इससे बिलकुल साफ है कि आप ने अपनी इच्छा को पूरी करने के लिये पक्षपात और अन्याय किया है ।

11- जुलाई 5,1979 आपलोगों को इसी वर्तमान शासन काल में गोस्सनर मिशन से दस(10) अगुवों के पास दरबाही पत्री भेजने की आवश्यकता हुई जिन 10 में 7 आप महाशयगण हैं । भारी हृदय में पड़कर गोस्सनर मिशन हमारे शुभचिन्तक लिखते है " ईश्वर से हमारी विशेष प्रार्थना है कि ईश्वर क्लीसिया में के सब अगुवों को अपने पवित्र आत्मा से प्रकाशमय करें ,जिससे क्लीसिया में शान्ति और प्रेम फिर से स्थापित हो सके ताकि छोटानागपुर और असम के सब लोग ख्रिस्तानों में शान्ति और प्रेम के आश्चर्यकर्म को देखकर प्रभु का गुणानुवाद कर सकें । "

इस प्रकार पादरी पी०डी० सोरेंग ,2- पादरी सी०बी० आईन्द ,3- पादरी डा० एम० बागे ,4- श्री सुखद बागे ,5- श्री इसहाक मिंज ,6- पादरी एम० टेटे,7- पादरी जे० कुल्लू ,8- श्री ए० लकड़ा,9- श्री एल०टेटे,10- पादरी जे० तोपनो 11- पादरी सुरेश टोप्पो ,12- श्री पौलुस टोपनो ,13- श्री किरन टोपनो , के०एस०एस० के सदस्य हैं ही नहीं । केवल 7 व्यक्तियों के द्वारा के०एस०एस० बन-सकता नहीं बन सकता है । इसलिये पादरी सोरेंगको यह सभा एक प्राईवेट सभा है , यह एक पार्टी या दल है । हम इस पार्टी को के०एस०एस० नहीं मानते हैं और नहीं मानेंगे । इस पार्टी को सब फैसलाएँ नजायज और अमान्य ठहरते है । पहिली बात तो यह है कि 31-10-75 को 1960 का संविधान का अन्त हो गया दूसरा कि आप लोगों ने स्वंय ही 1960 ई० के संविधान को अपने कामों और व्यवहार के द्वारा उल्लंघन पर उल्लंघन करके रद्दी कागज के टोकरी में फेंक दिया अभी न आप का 1960 संविधान है न 1974 का / यों आप को वैधानिक अस्तित्व को आप ने स्वंय नष्ट कर दिया ।

तथाकथित के०एस०एस०(लगातार)

आप लोगों की सभा को दृश्य -पंजिका 1981 / के०एस०एस० में कुल 22 सदस्य है । बंगाली 1/22,रौतिया-1/22,उरांव 4/22 = 27-25%,
खड़िया 5/22,मुण्डा -11/22 = 72-72%,

हम लोग इस भंगित, अवधानिक , नियमविरोधी,जातीय सभा को जो

मक्खियों को हांकती और ऊँटों को निगल जा[illegible] मानते है और नही मानेंगे ।

साउथ ईस्टर्न अंचल का बाफ्कोट /

इस बाफ्कोट के कारण और द्वारा :-

1- नोर्थ वेस्टर्न अंचल के एस०एस० से निकल गया ,(2) उरांव भाईयों तथा बहिनों ने एक तथाकथित ,नोर्थवेस्ट जी०ई०एल०चर्च बना लिये और या क्लीसा बिभक्त हो गई । (3) के०एस०एस० भंग हो गया और अभी भी भंग है । (4) क्लीसा का केन्द्रीय स्थान शून्य है ।

नया संविधान बाता तो :-

1- मुण्डा ,उरांव ,खड़िया आदि सब जाति के लोग प्रेम से एक साथ मिल जाते ,(2) ऊपर 4 को 1 से 4 को बाते नही हो पाती ।

2- सारी क्लीसा की एकता बनी रहती ।

3- आठो डियोकिस (असाम,जमशेदपुर,खूंटी,टकरमा,उड़िसा ,सिमडेगा., पत्थलगांव ,रांची और रांची हेडक्वार्टर्स मंडली (देखिये नया संविधान पृष्ट20 और 16) से ईश्वर क चुने हुए लोग सिनोडिकल सभा के सदस्य बनते और सारी क्लीसा के लिये भलाई का काम करते।रांची हाता का सुव्यवहार होता ।

4- एक मन और एक आत्मा से सुसमाचार का प्रचार अधिकाधिक किया जाता ।

5- क्लीसा के 40,000 उरांव खिस्तान खोये नहीं जाते ।

6- ऐसा होता :- क्या मनोहर भली बात,
जहाँ भाई हाथो हाथ
चलते हैं और हैं एक प्राण ,
खिस्त की आज्ञा के समान ।।
वहाँ हरेक उत्तम दान ,
शान्ति आनन्द और कल्याण ।
ओस के तुल्य उतरेगा
वहाँ आशीष बसेगा ।।

अवधर बीत नहीं गया है । निष्पक्ष अगुवे यू०ई०एल०सी०आई० ,गोसनर मिशन और लूथेरान वर्ल्ड फेडरेशन से निमंत्रित किये जाय जिस्से उनकी अगुवाई में 9-12-74 का नया संविधान लागू किया जाकर क्लीशा मे शान्ति और एक्ता की पुनः स्थापना हो सकें ।

-----।।

हाबिल का लोहू दोहाई दे रहा है।

- : प्रार्थना : -

है ईश्वर तुझी जो ऐसा सामर्थी है,
कि हमारी बिनती और समझ से
कहीं अधिक काम कर सकता है,
उसी सामर्थ के अनुसार
ते[illegible]ीं कर कि
हमारी यह गोस्सनर कलीसा
जिसमें अपने महान अनुग्रह से
भिन्न -भिन्न जातियों को
एक झुण्ड में तू ने बुला रखा है
तुझ उदार और प्रेमी ईश्वर के ग्रहण योग्य ठहरे।
इस कलीसा में और योशु ख्रीष्ट मसीह में
युगों तेरी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे

आमीन ... .

1- सही पाद्री मुक्तिप्रकाश एक्का ,अध्यक्ष
2- सही पाद्री दानिएल मिंज, उप-अध्यक्ष
3- सही श्री जीवन लकड़ा , से-क्रेटरी
4- सही श्री मनोहरलाल लकड़ा ,ऐक्टिंग खजांची
5- सही पाद्री डाक्टर जे0जे0 पी0तिग्गा ,ओन0 डाईरेक्टर

North Western Anchal, G. E. L. Church,
Khorhatoly, Kokar, Old Hazaribagh Road.
RANCHI-834009.

GURUKUL PERSPECTIVE

Quarter... ulletin of Gurukul Lutheran Theological College and Research Institute MADRAS 600 010

1980 SPECIAL ISSUE ON AUGSBURG CONFESSION NO. 1

A Study Guide on the Theology of the Augsburg Confession in the Indian context

Christians all over the world ...elebrating the 450th anniver- ... of the Augsburg Confession. ... original confessional document ...530 was presented as an ex- ...ion of the historical, ecumeni- ca.. faith of the church. In recent years the Augsburg Confession has become increasingly recognised "a true exposition of the Word of God" not only by the Lutheran churches but by other theological traditions as well. In particular, the Roman Catholic Church, for whom the Confession was originally presented, has expressed its interest in reconsidering the document.

In India also the ecumenical role of Lutheran theology is of primary concern. Joint theological training is in progress between Lutherans and other churches. Union negotiations have reached t...e point of a jointly agreed doct- ... statement. Practical coopera- ... at all levels of church life and ... all branches of Christendom ... in progress. Formal theolo- ...l dialogue has begun with the ...odox churches and has been ...osed with the Roman Catholic Church. Of basic interest, therefore, is the potential ecumenical acceptability of the theology of the Augsburg Confession, which represents the core of the Lutheran theological tradition.

It is for this reason that Gurukul is planning an *ecumenical theological dialogue* on the basis of the Augsburg Confession on the dates of its original presentation, 24-25 June. Five papers will be presented. The opening paper will outline the contemporary international role the Augsburg Confession is playing. The ... papers will take up the ... "The Relevance of the Theology of Augsburg Confession in the Indian Context." These papers will be presented from the Lutheran, Roman Catholic, Orthodox, and ecumenical church perspectives.

Goal of Local Church Renewal:

This anniversary year of the Augsburg Confession is not meant primarily to bring international ecumenical attention to the document. The primary purpose of the celebration is to evaluate and renew the life of the Lutheran churches in terms of their own founding confession. The Augsburg Confession has no meaningful ecumenical role in theology if it has no meaningful practical role in church life.

This task of the Augsburg Confession becomes particularly urgent in a mission situation like India. The great danger is that Lutheranism in India will be an imported institutional, historical, reality rather than a deeply rooted, living and growing reality. We must constant...uard against an institutiona... which lacks any theologi... ...tity or direction. If Lut... ...has had going struggling in history and it is ...king towar... meaning in India it is as a living guide to the life and mission of the local Body of Christ.

With this conviction Gurukul is attempting to use this anniversary *year as a year of self-reflection and renewal* for the Lutheran Churches, together with their ecumenical partners in the Gospel. The goal is that local congregation and study groups around the country evaluate their life and mission in terms of the theology of the Augsburg Confession. Certainly we will find much to rethink and repent.

Therefore, Gurukul is herewith offering a "Study Guide on the Theology of the Augsburg Confession in the Indian Context." The purpose of this guide is that small study groups in congregations and pastoral conferences, preferably ecumenical gatherings, around the country reflect on the total life and thought of the church in terms of the original Confession. Such a study enables us to evaluate our church life in the light of theological concepts which draw together the total witness of Holy Scripture. We are to be confronted anew by the enlightening, judging, and motivating Word of God.

This Study Guide is the outcome of a special *Workshop on the Augsburg Confession* which Gurukul conducted from 18-21 December, 1979. Nine Lutheran seminary professors and one CSI gathered to work through the basic theology of the Augsburg Confession to highlight the issues presented in the following study guide. Basic presentations were given by Dr. J. C. Gamaliel, Principal of Concordia Seminary, Nagercoil and by Dr. B. H. Jackayya of Tamilnadu Theological Seminary, Madurai. Background papers and excerpts from Confessional studies were discussed on the basis of study questions highlighting the important issues from our Ind[illegible] context.

Serious Reflections [illegible]

of con[illegible] ed as an attempt to stimulate and guide serious reflection on basic theological questions in our Indian context. Our basic Lutheran Conviction has always been that only clear theological thought can provide clear guidelines for Christian life and mission. The Workshop sought to identify the particular issues to be addressed, but the specific wording was left to Gurukul to formulate. The objective has not been the evolving of a new Confessional statement of faith but the applying of the historic Lutheran Confession.

The concern throughout this study guide is practical. The issues raised are not those of theoretical theology but of day-to-day life and work in the parish. Gurukul's new direction in theological education has been this application of *high-level the[illegible]gy to practical issues* of parish life and mission. S[illegible] theology is to arise from reflection on real-life questions in the light of the historic faith.

The format of the study guide, therefore, is the statement of certain current issues in the fellowship life and mission life of the Indian church. These issues are addressed in terms of the theology of the Lutheran Confessions. On some issues there was no consensus even among the Workshop participants. There will be disagreement among others where the workshop agreed. Such disagreement is well within the purpose of this study guide, for its purpose is to stimulate deep discussion of the theology of the Lutheran confessions in relation to the practical issues of our time and context. For the same reason discussion questions are provided after each major section of the guide.

Finally, we are printing along with this Study Guide the official FELCI (now UELCI) *Statement of Faith formulated in* 1951. We have felt that this statement is a [illegible] and authoritative articulation of the basic Lutheran theological position. This statement can serve as an effective review of basic Lutheran theology, which may be very useful in local congregations prior to the actual discussion of the Study Guide materials.

We offer this special issue of the "Gurukul Perspective" in the hope and prayer that this effort will help make the 450th Anniversary of the Augsburg Confession a historic moment also for local congregations and small study groups. Theology is not mea[illegible] seminaries; celebrations are [illegible] meant for church dignitaries; [illegible] the Augsburg Confession is [illegible] meant for dusty book shelves. [illegible] Augsburg Confession and [illegible] humble attempt at a S[illegible] Guide are meant for the gro[illegible] and guidance of God's People in their practical faith and mi[illegible].

THE HISTORICAL BAC[illegible] GROUND OF THE AUGS[illegible] BURG CONFESSION

The history of religion shows that rulers played a vital role in determining the religion of their subjects. Some rulers were fanatical and some were liberal. When king Asoka became a Buddhist he propagated Buddhism with fervour even outside India. So many Jain scholars were persecuted in Madurai when the king was converted from Jainism to Shivism. I[illegible] the time of Reformation subo[illegible]te rulers in Germany joined t[illegible]er against the Emperor Charle[illegible] or religious freedom. One [illegible]not belittle their efforts as [illegible]ely political, since they were [illegible]ong believers in the Christian faith. Charles V was a zealous catholic. He had the aim to restore the one catholic church in his dominion. But the princely rulers in Germany had some power in their territories. So the Emperor could not always accomplish his desires.

The Edict of Worms (1521) demanded the suppression of the Reformation. Since that year the protestant princely rulers and heads of the free towns in Germany asked for a fair dealing in matters of faith in a council or a national assembly, but in vain. Only in January 1530, after being politically successful, the Emper[illegible] invited for an Imperial Diet [illegible]neral assembly of states i[illegible] Empire, which should take in Augsburg in June 1530.

Contd. on [illegible]4

STUDY GUIDE

Confessional writings are records of the church's on-going exposition of Holy scripture. Such writings have two-fold purpose:

1. The Confession attempts to witness to the heart of Scripture, namely the basic message and mission of the church. Thus, such confession is the responsibility of the church at all times and in all places.
2. The Confession is directed against the errors current at the time and places concerned. On the one hand, this recurrent exposition of the faith protects the genuine message and mission of the Church - both for the particular period and for the future. On the other hand, the exposition in a mission context takes up points of disagreement also with people of other faiths and persuasions.

The contemporary confession of fai[illegible]ontinuation of the Scriptural confession of faith. The Holy Scripture itself arose as a record of the chur[illegible]on. Subsequent confessions of faith arise from the same motive as a the Scriptures and attempt to reflect the same tradition of faith. Paul says:

"I declare to you the gospel which I presented unto you, which also ye have received and where in ye stand... For I delivered unto you first of all that which I also received, how that Christ died for our sins according to the Scriptures; and that he was buried, and that he rose again the third day according to the Scriptures." (1 Cor. 15:3-4)

Such founding confessions of faith are repeatedly referred to in the New Testament writings: 1 Cor 2:2;11:23; Rom 1:3-4;4:25, 10:8b-9, Acts 2:36, 11 Tim. 2:8, etc. Out of these historic and contextual confessions of faith arose the life and mission of the church. Out of our attempt at faithful and relevent confession of faith today also will arise the power and direction for our life and mission.

I. REVELATION OF GOD

Issues in the Church

1. The central and full revelation of God is in the Person and work of Jesus Christ. This revelation is dynamic and authoritative in matters of faith and life in all changes of time and place. Theological formulations may differ from culture to culture and age to age, but the one revelation in Christ as witnessed in Scriptures never changes.
2. The activity and purpose of God is also to be discerned in contemporary events. We have our Lord's promise that His Spirit will lead us into all truth (Jn. 16:13), so we are obliged to seek His guidance in discerning and participating in God's on-going work in the world.
3. An on-going question for the Christian is how God's will and activity are to be discerned. Though such revelation may come directly and clearly on occasion, all discerning must be judged solely by the norm of God's will as revealed in scripture. The objective norm of Scripture will not deceive us, though our subjective gropings and experiences may.
4. In this respect the full Trinitarian function in revelation must be emphasized. The Father's will, the son's call and the Spirit's guiding are the criteria for discerning God's contemporary revelation of Himself.

Issues in Mission

1. There is a general revelation of God's powerand majesty in nature to all people. However the heart of God is revealed only in Jesus Christ. We welcome all truth found in other religions and share the clear and full revelation in Christ.
2. Christ is the revelation of God. Therefore, our witness must always be to Him. Evangelisation is not a comparison of scriptures, morality, rituals, life-styles, etc. but a pointing to the Person and Work of Christ.
3. As both Hinduism and Islam agree, there is only one God, sought in different ways and worshipped. We respect and value the piety and integrity in people of other faiths as fruits of the work of God in their lives and through their religion. Yet, this human goodness can only be properly evaluated and directed toward God's will if Christ is known and accepted.
4. The revelatory character of the Christian fellowship in a mission situation is often mentioned in Scripture (Jn. 13:34-35, 17:20-23, Acts 2:44-47, Dt. 4:6-8). The life of love in the christian fellowship is to reveal and express the character of God for all to see, comprehend and accept.

Questions for further discussions:

1. What would you say if someone formulated a concept of God's grace in terms of Hindu Bhakti philosophy and not in traditional terms of justification?
2. What is the proper Christian evaluation of the profound ethical life of Mahatma Gandhi?

3. If someone says, "I had a dream that the second coming would occur next year and that I should quit my job and tal my children out of school to fast and pray", what would be your counsel?
4. If someone says, "The Bible says nothing about joining political parties, therefore will not join. God acted direct in Old Testament times to correct political affairs, so He will do so today also if He wishes things changed", what would be your counsel?
5. If someone says, "Other religions speak about God's holiness and mercy, the need for a pure life, and the need for salvation; so what is unique about Christianity?", what would you say?
6. What is your opinion about evangelists who belittle the Hindu Scriptures and rituals, comparing the superiority of Christian Scriptures and rituals?
7. Can you give examples of how a loving Christian fello ship has attracted people of other Faiths to Christ in your area?
8. Do you agree that there is truth in Hinduism, Islam, and other religions? H [illegible] to understand this religious truth in relation to the revelation of God in Christ?

II. SCRIPTURE AND CONFESSION

Issues in the Church

1. Though the church in India is in a radically different situation than 16th century Germany or even 1st century Palestine, the Indian church must relate its faith in organic conformity with the historic faith of the universal church. A direct movement from Scripture to personal life or to the contemporary social context dangerously ignores the wisdom and guidance of the church through all ages and cultures.

2. "Magical" and "proof-text" uses of the Bible must be opposed. The only proper use of the Bible is to lead us to Christ. Luther advises us to seek in Scripture only "What promotes Christ" and to judge any unclear or "dark" passages in the light of Christ.

3. Similarly, the Scriptures are authoritative and confessions normative to us only on matters dealing with the Gospel. We are not bound by their world views, cosmology, methods of Biblical interpertation, etc.

4. Christians are bound by the Bible as their sole norm and authority in matters of faith. We must not assert more than Scripture or less. In many areas speculation beyond Scripture leads only to confusion and error, (e.g., predestination, God's activity in other religions, the "anti-Christ," the descent into hell etc.) What is clear in Scripture about our faith and life is what we trust, witness and obey. What is unclear we leave for possible future clarification.

Issues in Mission

1. There is a great need for a common public witness by Christians to the core of the Gospel. Our external disunities obscure the fact of our common faith and proclamation. The formulation of a confession for our time should be a step toward a common ecumenical witness of faith also to those outside the church. Ways must be found to implement this goal.

1. In a situation of mission the faithful confession of faith must reflect the issues of mission. The proclamation of faith must be in terms of the strivings, objections, questions, and needs of the larger society. Lesser controversies within the church may give place to greater controversies with the world.

3. In a situation of mission the faithful confession of faith must reflect the forms of the general culture. In order to be true to one's own cultural life as well as to communicate one's spiritual life to others, the expressions of Faith must be culturally rooted. The cultural confession will be in words, concepts, rituals proverbs, dance, song, gestures, etc. which reflect the total history and life of the people.

4. In formulating a confession of faith a small persecuted minority Christian community affirms its unity with the universal church. Though attacked on all sides, the church stands firm in its continuity of faith and struggle with the church of all time and place, "The gates of hell shall not prevail against it". (Mt.16:18)

Questions for further discussions:

1. One person says, "It is certain that everyone who is not baptised is damned." Another says, "It is certain that there is salvation in Christ Jesus, and this certainty I will live in and share." Which person follows the proper Confessional attitude toward Scripture? Can you give other examples?
2. Can you think of ways to express basic Christian doctrines through local proverbs?
3. What is your counsel to someone who claims a new interpretation of Scripture because of personal revelation by the Holy Spirit in his or her private devotions?
4. What would you say to someone who argued: "All western theology of the past 1000 years is irrelevant to the Indian Church. We must take the Bible afresh and interpret it directly to our contemporary Indian context"?

w do you deal with Ps.137:9 as a Christian, according to Confessional principles of Biblical interpretation? Jn. 14:28?

you think a confession of faith today in India should concentrate on issues of disagreement among Christians, on issues of disagreement with people of other faiths, or both?

III. SIN AND JUSTIFICATION

Issues in the Church

1. Justification is the one-time act of C[illegible]l humankind in the death and resur[illegible]rist and for each individual in his or her appropriation of God's through grace faith. This act of God is a fact whether acknowledged, experienced, or not. In this act God accepts us inspite of our sinfulness because of the redemptive mediation of Jesus Christ. For many in the Church justification took place through Baptism. The subsequent process of Christian life is in living out this gift of Spiritual grace and power in a transformed life.

2. Justification will be experience in this process of sanctification under the power of the Spirit. The nature of this experience will differ from person to person, but the process will be evident in the on-going life of repentance, renewal, and spiritual growth.

3. God's attitude of acceptance through justification is unbreakable. However, it is possible for Christians to reject the relationship of justification by closing their heart to the renewing work of the Holy Spirit.

4. The term "justification" has arisen from particular legal background. In each language we should find terminology which catches the content of justification in terms familiar to people's ordinary thinking.

5. Original sin has no theological relationship to the act of sex. Original sin is the recognition of the fact of the universally fallen nature of man or woman in relation to God.

Issues in Mission

1. The fact of universal justification in Christ's death and resurrection is the fundamental impetus for our evangelistic work. We present people with the gift of grace already prepared by God. We make known the unknown good news.

2. The quest for self-purification in order to gain unity with God is laudatory but misguided. God offers Himself freely and fully through faith in Christ. No human effort can gain God's acceptance. God only asks an open heart to receive His Spirit, and in the power of that Spirit we are purified before Him and in our daily life.

3. The understanding of God as a holy and righteous personal Creator is essential for a correct understanding of sin in our Hindu religious context. Sin is not a binding of person's "spiritual nature" to his or her "material nature", nor a breaking of certain social rules or ritual obligations, nor an ignorance of the spiritual essence of all things, nor a succumbing to the inevitable effect of karma. Sin is our fallen state of willful rebellion against the will of God for which we deserve His eternal wrath. This fallen state is evident in our on-going selfishness and pride, also in spiritual things.

4. Thus, acceptance even of God's justifiying love in Christ can be an assertion of human sin rather than of divinely inspired faith. To accept Christ is to accept a new life under the Spirit. If Christ is primaril viewed as a means of gaining temporal or eternal benefits, such a view is a projection of human sin ,not as our Saviour from the power of sin and our Lord for newness of life.

5. God's sacrificial offer of Himself in Christ reconciles God's love and righteousness as no other religion has. Christ's atoning death sets aside the contradiction of a righteous God condoning sin or a loving God condemning the sinner.

6. In our social action we recognise the corporate and institutional dimensions of sin and the social dimensions of Christ's redemptive work in His life, death, and resurrection. The correcting of oppressive social structure is a participation in the on-going redemptive work of God in effecting the victory won by Christ over all principalities and powers. (Eph. 1:21; Col. 2:15)

The common expression of human sin in religious life is apparent in the parallel between popular Christianity and popular Hinduism. In both popular Hinduism and much of our Christian practise the means and objectives of piety are often quite self-serving and ritualistic:

Justification	=	Performance of rituals
sin	=	failure to perform rituals.
condemnation	=	punishment for failure to perform rituals.
salvation	=	receiving blessings for performing rituals.
sanctification	=	keeping God's favour through performing rituals for on going blessings and protection.

Questions for further discussions:

1. If an evangelist says, "Accept Jesus Christ and receive God's favour. He will protect you from dangers, give you blessings and grant eternal life", is he or she giving a proper Gospel call?
2. If a person says, "I believe in Christ as my personal Saviour and I regularly receive communion, so I know my sinful life is forgiven and I need not change it," do you think that person is in a saving relationship with God?
3. If a person says, "How do I know I am saved? I had no special experience. I accept Jesus as my Saviour and try to live according to His will, but how do I know He has accepted me?" What would you counsel him or her?
4. Do you agree that working for a more just social order is based in God's act of redemption in Christ?
5. What is the understanding of sin among people of other religions around you? How would you explain our Christian understanding to them?
6. Can you think of any better terminology in your own language for the concept of "justification?"
7. Do many people in your congregations still understand original sin as having to do with sex? What can we do to correct this misunderstanding?
8. How does the objective fact of God's act of universal redemption in Christ motivate and guide our evangelism?
9. How would you explain the Christian understanding of self-purification to a Hindu friend?
10. Do you think the parallel between popular Hinduism and popular Christianity in relation to "justification and sin" is prevalent in your congregations? What is the reason for this misunderstanding? What should we be doing about it?

IV. CHURCH

Issues in the Church

1. The church is fundamentally a product of the work of the Holy Spirit inspiring faith and commitment to the Gospel. Church membership is an act of God through baptism and faith, not merely institutional allegiance to a church body. Membership in a church body by subscription or birth is not of itself membership in the church by faith and life.
2. The Church is the spiritual mother of us all, feeding us with the Gospel giving us birth in Baptism and nurturing our faith through Word and Sacrament. The life and work of the church should be looked upon primarily in terms of spiritual benefit, not for purposes of material security or social status.

Issues in Mission

1. A church alive with fellowship and mission is the strongest arm of God in His redemptive purposes. Such a Christian fellowship is a living sign of the Kingdom, a leaven in the lump and a beckoning light to the nations. On the other hand, a fellowship lacking in love and zeal is the greatest scandal to the claims and call of the Gospel.
2. Greater organizational unity among the various churchbodies is another compulsion for the sake of our mission responsibility. Our essential unity of faith as well as our practical cooperation in mission can best be clearly demonstrated and practically realised through organisational unity where this is practical and possible.

The local congregation is the church. Church bodies are not the church except in a secondary sense. All importance and recognition should be given to the vitality of each local congregation. If the life in local congregations is neglected by church leaders in favour of larger institutional interests, such leadership is destructive of the essence of the church.

4. The basic posture of the church is to be that of its head, the servant Christ. All leaders of the church and ministries of the church are to be characterised by this attitude and aim. Use of power, authority, or money in the church either for personal or institutional gain violates the essence of the church.

5. The church is brought into being and characterised by the Word and Sacraments. However, the essential marks of the living church reflect its loving fellowship and active mission. The ritualistic administration of Word and Sacrament without fellowship and mission is as "a noisy gong or a clanging cymbol" (I Cor. 13:1)

6. The function of the church discipline is to turn people with open hearts to the renewing power of the Holy Spirit. The power for renewal can only be the Holy Spirit through the means of grace, not threats or punishments. On the other hand, threats and punishments may finally be necessary to shock the unrepentant person as to the seriousness of his or her rebellious situation before God (Mt. 18:15-20).

7. The essential unity of all believers in Christ as a gift of the indwelling Spirit must be manifested to the maximum degree possible in the institutional life of the church. Doctrinal disagreements, organisational differences, institutional conflicts, historical ties, caste affiliations, leadership questions, etc. must never blunt our drive for full and complete expression of fellowship. Simply to accept church disunity is to accept a state of sin.

8. Unity of faith is the objective of inter-church theological discussion. Theological traditions, terminologies, emphases, etc. may differ and still reflect essential unity of faith. Only those differences (theological, liturgical, or organisational) that compromise the Gospel are to be objected to in unity discussions.

9. Where formal doctrinal unity has been reached in union negotiations (as in the case of the proposed Church of Christ in South India) we must determinedly and frankly identify what prevents us from further steps toward expression of unity. The primary practical question must be whether organisational unity will promote or hinder mission work.

3. The church in a mission situation must seek to embrace as much of the general culture as possible into its faith and practice. All in social customs, that promote social welfare and harmony, sociological groupings, thought-forms, worship forms, media of communication, etc. must be welcomed as good gifts of God. However any cultural forms which contradict the essence of the Gospel must be rejected. The form of faith and life in the Church should witness to the attitude of God, both positively and negatively, on the culture.

4. The church must relate itself dynamically to the other fellowships of believers in God belonging to other religious traditions. In an age of growing secularism and materialism some forum for common expression of agreement on the primacy of the spiritual calling and for common action against demonic forces should be sought. Where God is at work in fellowships outside the Christian fold, we should be prepared to work with Him toward His purposes.

5. The church must relate itself dynamically also to the other believers in Christ outside the Christian fellowship. Because of caste, family, alienation from cultural forms or financial reasons a growing number of Hindus and Muslims refuse to take baptism, though they accept Christ as their personal Lord and Saviour. On the one hand, we must recognize how our "communalisation of the Gospel" has provoked this hesitation over baptism. On the other hand, we dare not compromise the radical call of Christ to full and trusting commitment (even if we ourselves do not live up to it). Ways of ministering to and fellowshiping with these individuals and groups must be found so that we can grow together as a fellowship of faith rooted in Indian soil.

uestions for further discussions:

How necessary do you think organisational unity is for the church's growth in fellowship and strength in witness?

2. Do you think we should press for organisational union with other Christian church bodies? What would be the practical advantages and disadvantages for Christian life and mission in society?
3. Can you think of congregations which have the form of the church without the living marks thereof?
4. What is the proper way for Christians to relate to and work with Hindus and Muslims for common good causes?
5. Do you see evidence that many people in our congregations look for "secular" benefits and social gains by their church participation? What should we do about this situation?
6. Does the form of your church's life reflect the local culture in the maximum possible way? What are the dangers, obstacles and benefits in being more related to cultural forms?
7. Can you think of instances where a local congregation's life has scandalised the [illegible] local Hindus and Muslims? What was the basic cause for this situation?
8. How should our Christian fellowships relate themselves to non-baptized believers in Christ?
9. Take a specific case of church discipline and apply Mt. 18: 15–20.
10. Is the life and mission of the local congregation the prime focus of attention in all plans and workings of your church body? If Not, why Not?

V. MINISTRY

Issues in the Church

1. The congregational ministry is the function of administering the Word and the Sacraments properly and regularly to the assembly of believers for their growth in faith and life. Some understand this function to be instituted in a divinely established office of the ministry in the church. Others understand this function to be the right and responsibility of the assembly of believers to organise as best meets their needs. In either cases the functional calling of the priesthood of all believers must never be compromised. All God's people are responsible to administer His Word (and, when necessary, His sacraments) wherever and whenever it is needed.
2. In some parishes congregations do not see their pastor for months at a time. Basic teach[illegible]ing, and sacramental functions of the [illegible] are not carried out regularly because the pastor has too many congregations and other responsibilities. In such on-going "emergency situations" new forms of ministerial structure (such as licensed elders) might be developed so that the local congregations are not forbidden their right to growth in the Spirit through regular use of the means of grace.
3. The theologically trained pastor is the primary teacher in the church. All other possible responsibilities of a priestly or administrative nature must be kept secondary in importance and time.
4. The pastor's sole source of authority in the congregation should be the Word of God which that pastor fearlessly expounds and proclaims. The Pastor motivates through teaching of the Word, not through social or organisational coercion.

Issues in Mission

1. The ministry of the church is inseparable from its mission in the world. The purpose of the ministry is to equip God's saints for their work of ministry (Eph. 4:12). Every administration of Word and Sacrament is to be carried out for the sake of mission. A Ministry which does not lead to mission is a tree which does not bear fruit. (cf. Mt. 7: 15-20; Jn. 15: 1:8).
2. The pattern for the church's ministry must be that of Christ's ministry. Jesus moved among people of all levels of society. He met social, and spiritual needs. He expected persecution for righteousness, sake. He was led by the Spirit, devoted to the Father's will and trusting fully in His care.
3. The priesthood of all believers is the primary mission arm of the church's ministry. God's people at work in all parts of society are His agents of redemptive love, His spokesmen of Law and Gospel, His "sacraments" of Spiritual power. The purpose of the pastoral ministry in the church is the lay ministry outside the church.
4. The ministry of the church has a prophetic calling in society. We are to speak God's word of judgement and hope in all social affairs, both within the church and outside. As the prophets of politically insignificant Israel spoke God's word to the nations, so are we to declare His will, boldly and clearly though we are a small political minority, God's Word has its own power and authority.

The pastor is a member of the local congregation, leading in their responsibility of ministry. The pastor is called by God to their congregation and accountable first and foremost to God for them. The pastor does not primarily serve the interests of the central office, nor is the pastor an outside agent of the churchbody sent to the congregation.

6. The ministry of the church is a coordination of the total gifts of the Spirit in the congregation. The pastor has certain gifts and [illegible] others in the congregation also have g[illegible]aining. Each gift is to be recognised, cultivated and channeled into the work of the church's ministry. Organisational structures or personal prestige which frustrate the total expression of the Spirit's gifts not only limit the possible ministry of the church but provoke internal tension and strife.

Questions for further discussion:

1. How can we make mission life outside the church the purpose of ministry inside the church?
2. What is the proper cooperation between the laity and the clergy in their joint responsibility for ministry?
3. Do our pastors and our laity view the pastor as an agent of the church central office? What are the theological and practical problems with this attitude?
4. What other functions do our people expect of their pastor besides that of a teacher of the Word? Do you agree that the pastor should put everything else secondary to his/her teaching function in the congregation?
5. How should the Christian community exercise its prophetic voice in society?
6. What are some implications of the pattern of our Lord's ministry for our ministry today?
7. Do you agree that the pattern of our ministerial organisation must be altered so that all people have regular access to the Word and sacraments? If so, what suggestions do you have?
8. How should the parish pastor practically exercise the function as "coordinator of the gifts of the Spirit" in the congregation?

VI BAPTISM

Issues in the Church

1. Baptism is the gift of God through which He makes us His children in the new covenant of forgiveness of sins. It is the objective act of God in Baptism which induces us to offer it also to infants. However, infant baptism is only properly administered when it is followed by effective nurture in the faith at home and in the congregation. Serious confirmation instruction and commitment must be an integral part of responsible infant baptism.

2. The assurance of our position as justified children of God is the great benefit which we receive in God's gift of baptism. This assurance must become a central part of our people's thinking. Baptism is the act of justification from which will flow new spiritual life. Baptism which is viewed primarily as a com-

Issues in Mission

1. God's act of accepting us completely at His own initiative in Baptism stands in sharp contrast with the Hindu tradition of lifelong spiritual quest for experience of unity with God. Baptism places the spiritual quest in the realm of sanctification, and that under the power and guidance of God's previously indwelling Spirit.

2. The communalised misunderstanding and mispractise of baptism among Christians has created the impression of baptism as a kind of Christian "upanayana" rite of initiation into a caste community. Baptism has come to mean a rejection of the new convert's family fellowship and culture, aud thus, baptism has become an unnecessary stumbling-

munal rite of social identification is a "circumcision which has become uncircumcision." (Rom. 2:25)

3. Because of our people's misunderstandings and ignorance about baptism, many confusing practises have developed. Taking of rebaptism, seeking of signs, judging those who do not speak in tongues, etc. all reflect a lack of assurance which baptism should give.

4. Through baptism brings one into the spirit fellowship of the church. In many of our communities baptism also has a sociological dimension of entering a social fellowship. The effect often is that the church is viewed for social purposes primarily and the Christian community viewed by others as a separate sociological entity. When baptism has become entrance into a self-serving sociological community, it is once again like the circumcision which the Old Testament prophets condemned.

block for many people of different caste fron most christians.

3. **The place of baptism in relation to faith, life in Christ and the church must be worked out theologically i terms of the question of non-baptized believers i Christ. Faith alone saves and brings one to life i Christ, but baptism brings one into the Church.**

Questions for further discussions:

1. What are some of the superstitions and misunderstandings our people have concerning Baptism? What should be done to correct them?
2. Is Baptism-Confirmation being responsibly carried out in your congregations? If not, why not?
3. How does the theology of Baptism witness against any religion of work-righteousness?
4. Do you agree that Baptism has become a "communalised rite"? If so, how should this be corrected? How does this misunderstanding about Baptism among our own Christians cause the misunderstanding and hesitation about Baptism among other believers in Christ?
5. What is the assurance and power which our people should find in their Baptism?

VII. LORD'S SUPPER

Issues in the Church

1. The Lord's Supper is the s[illegible]rament of sanctification. Through this gift o grace God draws us close to Himself and [illegible] each other in the [illegible] [illegible]e Holy Spirit. It is not a magical "prasadham [illegible] [illegible]h automatically forgives sins. It is a gift of grace to which we must open our heart and respond in our lives for its renewing intention to be fulfilled.

2. This is a sacrament of unity. It unifies us with God and with each other. It is a celebration of the unity which God has given us in the common gift of faith and spiritual life. Therefore, this gift should be used pastorally to create and reaffirm fractured unity, not to punish or demonstrate disunity. Thus, reuniting at the altar should evoke Christian consciences to rethink and repent concerning local disharmonies group conflicts, caste feelings and denominational disunities. This sacrament should be used only for the positive intention of creating and celebrating unity, not for the negative intention of enforcing and confirm disunity.

Issues in Mission

1. **The spiritual character and power of the material elements in the Lord's Supper are an on-going refutation of the usual distinction betweem material impurity and spiritual purity. From the creation through the Incarnation to the new heaven and earth it is only through the material that God accomplishes His spiritual purposes.**

2. **It is possible that Christian groups will organise along sociological lines, especially in mission situations. However, it must be ensured that no superiority inferiority distinction is implied. Complete openness and equality at the Lord's Table must be maintained as a sign and expression of the fundamental unity of all people before God.**

This sacrament is a moment of re-acceptance by our Lord for us as we are. This holy meal is meant for sinners, clothed in the righteousness of their Lord. No one with a repentant heart need feel unworthy to accept the Lord's invitation to His table. Similarly, there is no bodily function which renders an individual "unclean" to come to the altar.

Questions for further discussion:

1. What are some superstitions and misunderstandings which many people have about the Lord's Supper? What should be done to correct them?
2. Certain Christians and many Hindus argue that the "material world" is inferior and even opposed to the "spiritual world". What is your reply to them on the basis of our theology of the Lord's Supper?
3. What is the proper role of the Lord's Supper in the quest of the church for greater unity?

VIII. LAW AND GOSPEL

Issues in the Church

1. The pastoral distinction between Law and Gospel is one of the major theological contributions of the Lutheran tradition. "Law" refers to the demand or will of God. "Gospel" refers to the new power of the Holy Spirit, the new life in Christ, "eternal life" in John's gospel, the Kingdom of God, the "new Creation." Terms should be sought in the regional languages which catch these contents so that the distinction can be readily understood and better applied.

2. Clearly there is much mixing of Law and Gospel in our parish life. Pastors use organisational authority to induce cooperation in church programmes, which should only be induced by the transforming power of the Holy Spirit through the Gospel. Excommunication is used to punish uncooperative individuals, rather than only to win unrepentant sinners in love for the Gospel. Church subscriptions are demanded for access to organisational rights, whereas church offerings should spring only from our transformed and willing heart. Certain kinds of lifestyles, dress, personal habits, etc. are set as criteria for true Christianity.

3. The "adiaphora" principle must be clearly understood and applied in parish life. Only those matters which are demanded by new life in the Gospel must be demanded of the Christian (e.g. good works, love, etc.) All other matters are areas of Christian freedom ("adiaphora") and must not be demanded as necessary for true Christian life. Thus, Christians may freely differ in their personal life and their organisational practices as long as they do not violate the call of the Gospel. In addition, if anyone demands

Issues in Mission.

1. Evangelism is begun on the basis of our common humanity and common problem of sin. The Law and Gospel proclamation are needed both by the proclaimer and the listeners. There is no place forfeelings of superiority or for threats of punishment.

2. The only proper motivation and method for evangelistic work is love. Evangelism is not an undesired obligation for the Christian but a spontaneous response of sharing the joy of what He has received in Christ. Out of deep love and respect for another person we want to share the Gospel with him.

3. In social action we recognize that the problem of sin cannot be solved only by methods of the Law in social reforms. Nonetheless, we work for forms of social order which will facilitate the free flow of the Gospel and which will better reflect the Kingdom of God.

of a Christian that which is his/her legitimate freedom he/she may refuse rather than confuse the Gospel by mixing it with the Law.

4. In preaching and teaching, the Law must be used only in service of the Gospel. The demands of God's will can only be accomplished under the transforming power of the Holy Spirit through the Gospel. The condemnation of sin is only meant to turn people to trust in the Promise of forgiveness and to open their hearts to Christ's renewing presence. Merely to make people feel guilty for their failures or to give advice for moral living is to promote a sub-christian religion of the Law.

8

stions for further discussion:

1. How would you explain the "adiaphora" principle? What examples would you give for its application to parish life? To organisational church unity? To questions of Christian faith and Indian culture?
2. Can you think of new terminology for the distinction between Law and Gospel, which would better reflect the culture of your language?
3. What is the proper distinction of Law and Gospel in evangelism? In social action? In church discipline? in preaching?

IX. TWO KINGDOMS

Issues in the Church

1. The Church is God's agent for proclaiming the Gospel. This one right it demands in society, and it is willing to obey God rather than man or woman if that right is denied or frustrated — and to suffer at the hands of the government as a consequence.
2. The Church recognizes that government is a divinely established institution. We cooperate in all God-pleasing governmental activities. We oppose any governmental activity or system which violates God's mandate to reward the good and punish evil. (cf. Rom. 13:15; I pet. 2:14). We also accept the governmental right to regulate church institutional activities, even to the extent of interfering when civil laws are violated by church practise. The government can be a corrective hand of God's mercy in other realms. Christians may and must at times withhold participate in unpleasant tasks of the Law in society. At times evil must be opposed with coercion and even violence. At other times Christians, however, must refuse to do what superiors demand if it is against their conscience.
4. The organisation and life of the church arise from the impulse of the Gospel. Forms of organisation and life may differ from that in the rest of society. When patterns of electioneering, party politics, caste, groupism, etc. are brought into church affairs, we are being conformed to the world rather than being transformed in the image of Christ. (Rome. 12:1-2)

Issues in Mission

1. Christian preaching inside the church and outside must include God's Word to His servants in "the Kingdom of the Left Hand." God's people are encouraged by His Word to work side by side with others for justice and peace in society. All are called to honesty, dedication and service in God's purposes.

2. The government, other religions, and social institution are God's agents for controlling evil and constructing as healthy a society as possible. Wherever, people respond to God's leading through nature, history and conscience, there we rejoice over the height of civil righteousness which can be attained by individuals by a religion and by a whole society. We also gladly and fully participate in every wholesome social movement. In doing so, we participate with God's on-going work of the total redemption effected on the cross.

3. In a democratic society of political parties Christians are encouraged to participate in the party system. They work for a just society, involving radical social change if necessary.

Questions for further discussion

1. If someone says, "The church has no business in politics", how would you agree with him or her and how would you disagree with him or her?
2. What should the church's reaction be if denied the legal right to freely preach the Gospel in society?
3. Can you think of instances where the government has or might rightly interfere in church affairs?
4. Can you think of instances where Christians might have to use violence in God's service in society?
5. Have you found the form and operating of our church administration are too much conformed to secular political life? Why is this? What should be done about it?
6. How does the Word of God learned by God's people in " Kingdom of the Right" aid them in their work and proclamation in "the Kingdom Left"?
7. Is it a Chrisitian resp replace an oppressive Government?

X. ESCHATOLOGY AND CREATION

Issues in the Church

1. The church is to be a present sign of God's eschatological kingdom. In all its affairs the church tries to reflect the perfect creation and community which God intended in creation and which He will restore at the end of time. The expectation is not that this new condition will take place in some millenial period but it is to be worked for now.
2. The church affirms the right of every person to a full and abundant life. As in the early church so today a prime concern in the Christian fellowship is caring for the physical needs of all. A self-sacrificial sharing among the people should be boldly and systematically encouraged. (cf. Acts. 2:44; 4:32-36, 2Cor 8:13)
3. The church also affirms the role of healing in its ministry. We minister to the total person in his or her physical, spiritual, mental, and social dimension and work for an integrated personal development. Such integrated healing services should be a regular part of the church's ministry.
4. The church is called to be a new community of women and men in Christ. Attitudes and practises of respect and equality are to characterise every aspect of christian family and church life.
5. The church encourages responsible leadership by Christians in their stewardship of creation. This stewardship includes responsible parenthood in regard to the size of families. Irresponsible practises of abortion and euthanasia are seriously questioned.

Issues in Mission

1. The eschatological vision of the "new heaven and new earth" is what inspires and guides the church in its work for the good of society and for total national development. The material world is good and "spiritual", and it is human responsibility under God to develop it for the good of all. All creation participates in the redemption intended by God in Christ. (cf. Rom. 8: 19-23; Eph. 1: 9-10)
2. Thus Christians participate with others in the cultivation of health in all creation. The prosperity and harmony of all of Nature are sought so that a total harmonious community of humankind, animals and plants is developed as God intended and will again effect. (cf. Gen.1:28; 2:15; Is. 11:6-9)
3. The Christian the on-going struggle a powers of darkness working toward the ological vision in society. Every hu action or movement or social system is permeat by sin. Yet, inspired by the vision and confident God's partnership in the cause the Christian works with all others toward a greater realisation of the "shalom" which God intends for humankind.

Questions for further Discussion

1. Do you agree that these issues of eschatology and creation should be added to our contemporary confession, though they were not part of the original Lutheran Confession?

2. Might it be part of Christian mission to work with the Association for the Prevention of Cruelty to Animals?
3. What should be the Christian position in family planning?
4. Have we done much to share financial resources within our local congregations? Do you think such an example Gospel-living would have the same effect today as it had in Acts 2:47?
5. Do you think the "new heaven and new earth" should be left for realisation at Jesus' Second Coming or should we w toward that goal now? Why?
6. What should be the role of healing in the church's ministry and mision? How can we integrate the healing of the to person into your regular church work?
7. How should the intended new community in Christ become realised in men-women relations in the church?
8. Can the Christian look forward to a "Utopia" an ideal society on earth? If not, what motivation does he/o have to work for a better social order?

Contd. from page 2.

...itation he put three aims: (i) to listen friendly to every opinion, (ii) to put away what is wrongly interpreted on both sides, (iii) through him all should accept the one and true faith. With the promise a hidden threat was connected. This situation determined the content and form of the Augsburg Confession. Because of the dangerous conflict which arose between the Protestants and the Catholics on the Imperial Diet in Speyer (1529) the Protestants had to show now their unity with the pre-reformation Church and to explain their changes only as a removal of abuses. The Elector, (One of those who had the right to elect the Emperor) John of Saxony, asked the theologians in Wittenberg to provide for him and others a confession which they could present to the Emperor in Augsburg. The main a... of the Augsburg Confession ... Philip Melanchton. Martin ... ould not come ... because he was under the imperial ban. The outline of the confession was sent to him. He wrote back that he was pleased with it and expressed that he could not write so carefully as Melanchton did.

Unexpectedly Charles V appeared very adament in Augsburg. Therefore the protestant leaders decided to stand together. Five princely rulers of German states and the heads of two free German towns signed the Augsburg Confession. Philip of Hessen, one of the princes who had signed, tried to attain that the Augsburg Confession should become the Confession of all protestant leaders. But Melanchton opposed him. The main stumbling block was the Lutheran teaching of the Holy Communion. So four towns of South Germany presented the 'Confessio Tetrapolitana' to the Emperor and Zwingli sent his own confession the 'Fidei ration.' But Philipp of Hessen was successful in his wish that Melanchton's introductory address to the Emperor should be changed. The new introduction shows clearly that the leaders undersigned would not give ... confession if the Emperor ...d use pressure.

The Augsburg Confession is written in German and Latin; both documents have to be valued as the original confession. Augsburg Confession was rea... fore the Emperor in Germa... guage on 25-6-1530 by the Chancellor of Electorate Saxony Dr. Chritian Beyer. The Emperor got both the Latin and the German document.

The special historical situation in which the Augsburg Confession was written, is the reason for the omission of some important differences such as to supremacy of the Pope, consecration of the pries... purgatory and teaching of ... Seven Sacraments. While h... not polemic against the R... Church, Melanchton stressed ... much the differences with ...e protestants of South Germany and Switzerland and with the Anabaptists. Because of this limitation, Augsburg Confession alone cannot be considered to be a sufficient representation of the teaching of the Reformation. Nevertheless because of its content it got high respect in all protestant churches of Germany: Lutherans, Reformed and United Church of Germany, and later in the Lutheran churches all over the world.

Edited and Published by J. Adiss Arnold for Gurukul and Printed at SIGA Madras - 600 010

GURUKUL
PERSPECTIVE

GURUKUL
KILPAUK
MADRAS - 600 010.

PRINTED MATTER

FOR PRIVATE CIRCULATION ONLY.

AC/BATTERY
SOLID STATE

23-4
D. P. ELECTRON
2/B, Chittaranjan A
CALCUTTA-

MULTI[illegible]POSE AC/BATTERY

ALL-TRANSISTOR 2-SPEED CAPSTAN DRIV[illegible]

PORTABLE TAPE-RECORDER

Model CTR-3050

CROWN

ALL-TRANSISTOR 2-SPEED CAPSTAN DRIVE AC/BATTERY TAPE RECORDER

Model CTR-3050

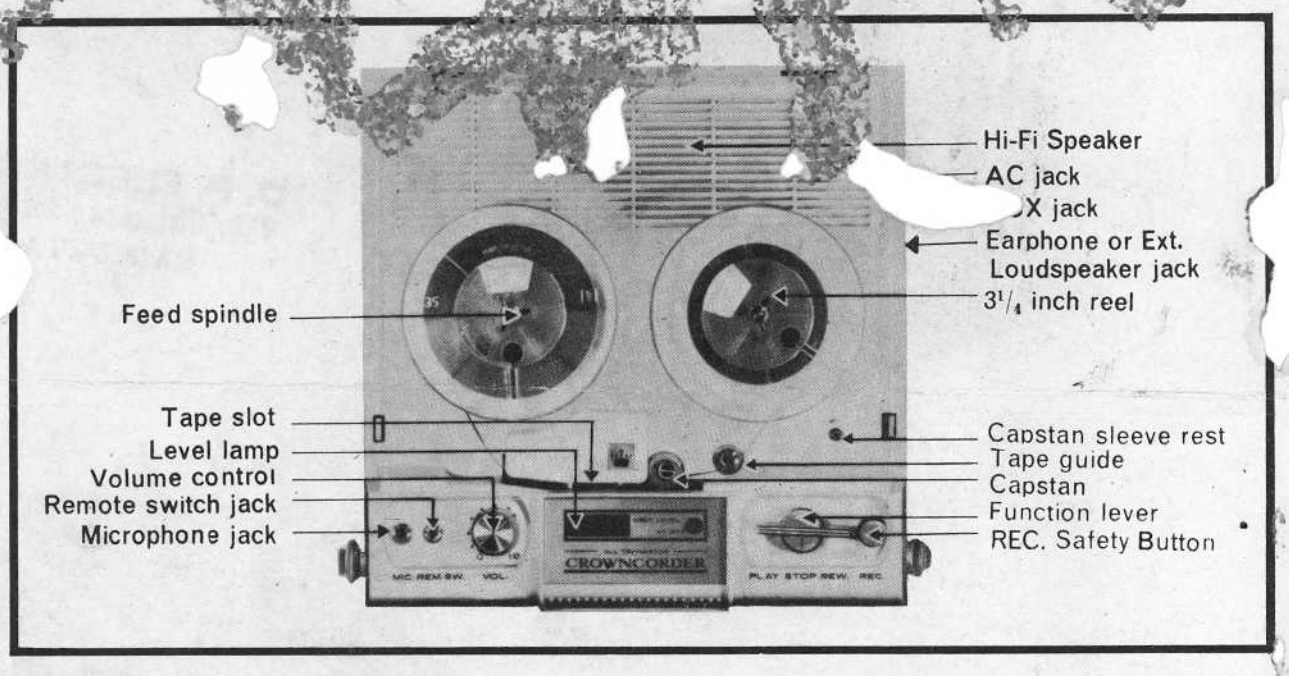

FEATURES

(1) Battery or AC powered
CROWNCORDER CTR-3050 can be operated on four flash light batteries (950 or 1050) or on domestic AC Supply.

(2) Long 1 Hour 20 Minutes Recording and Sound Reproduction.
CROWNCORDER is a double track recorder with 3$\frac{1}{4}$ inch reel, 1 hour 20 minutes operation with 25 μ tape.

(3) Complete Recording & Clear Sound Quality.
CROWNCORDER is equipped with a precision balanced motor, narrow gap heads, ultra sensitive remote controlled dynamic micropho[illegible] nd a hi-fi, hi-flux loud speaker resulting in a very fa[illegible] crisp and lively reproduction of sound.

[illegible] choic[illegible] ting current and universal [illegible] enables it to [illegible] position and anywhere—even in moving auto[illegible].

TIME CHART (with 3- ¼ inch (8cm) reel)

SPEED / TAPE LENGTH	3·3/4ips (9.5cm/sec.)		1·7/8ips (4.75cm/sec.)	
	Single Track	Double Track	Single Track	Double Track
25μ (1.0mil) 125m (400feet)	20min.	40min.	40min.	80min.
35μ (1.4mil) 93m (300feet)	15min.	30min.	30min.	60min.
50μ (2.0mil) 62m (200feet)	10min.	20min.	20min.	40min.

SPECIFICATIONS

Type :	2 speed (3$\frac{3}{4}$ & 1$\frac{7}{8}$ in./sec.) 5 transistors AC/Battery tape rec	
Freq. range :	100-7500 c/s	
Recording system :	Double track	
Driving system :	Capstan drive	
Power output :	800 mW	
Speaker :	Hi-fi & Hi-flux density	
Dimensions :	8$\frac{11}{16}$ × 8$\frac{9}{16}$ × 3$\frac{7}{16}$ inches (22·0 × 21·8 × 8·7 cm)	
Weight :	4·2 lbs. (1·92 kg.)	
Power source :	4 self contained 950 or 1050 flash light batteries or 220-230 Volts AC 50 c.p.s.	
Standard Accessories :	Dynamic Microphone	1
	Microphone bag	1
	Earphone	1
	3$\frac{1}{4}$ inch Audition tape	1
	3$\frac{1}{4}$ inch Empty reel	1
	Radiogram chord	1
	Mains Chord	1
Addl. Accessories :	Telephone record microphone	1

Price with Standard Accessories ... Rs. 750.00
Telephone Recording Microphone ... Rs. 30.00
(taxes extra)

Pioneer Electronic Corporation
Under Technical Collaboration With
Crown Radio Corporation, Japan

Mehra Of[illegible] ess, Agra

N CAL SPECI ATION

1500 VA Ge

This Set will comprise

ENGINE

VILLIERS type Mark 25, air cooled petrol engine capable of developing 3.4 B.H.P. when running at 3000 R. P. M. as per BS. 765/1961 under N. T. P. conditions. This engine will be complete with all standard accessories and fittings and will be suitable for starting by hand rope on pulley.

ALTERNATOR

KIRLOSKAR type CMA screen protected, drip proof Alternator capable of giving an output of 1500 VA when running at 3000 R. P. M. and wound for 230 volts single phase 50 cycle system.

CONTROL PANEL

A compact Control Panel mounted on top of the Alternator together with antivibration mountings will comprise of

1 - Miniature circuit breaker or double pole fuse switch with H. R. C. Fuse.
1 - Ammeter of suitable range
1 - Voltmeter of suitable range
2 - Terminals for power offtake

ARRANGEMENT

The Engine and Alternator are close coupled t a monoblock construction and together with th control pan commo will form a compact arrangement in ubular structu easy handling.

NOTE

The output of the above Set indicated as 1500 VA will be under N.T.P. conditions 12 hour rating.

Please consult us if you require this set for more arduous duties and also for inductive loading.

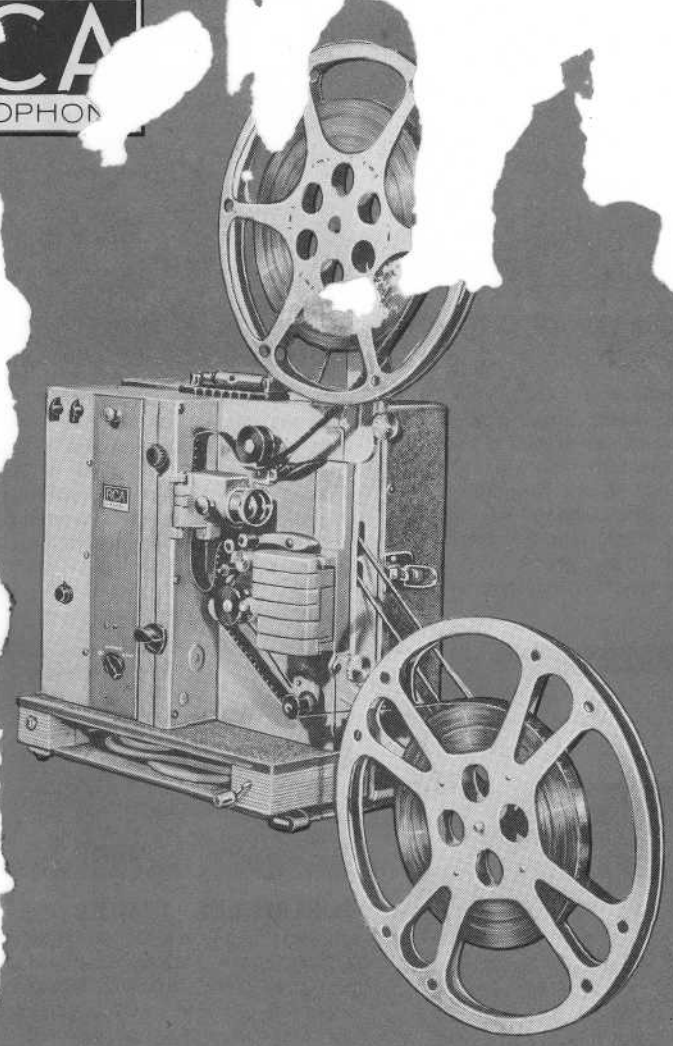

LIFE TESTED* TWO-CASE 16 mm Sound Projector, Type 415

RCA's unparalled research facilities and PHOTOPHONE's years of experience in Sound and Electronics brin- you the RCA PHOTOPHONE "Lif- ested" 16mm optical sound/sil- rojector in two carrying cases. e houses the sturdy projec- hanism and the new power- watt amplifier. The second cally-designed carrying case a heavy-duty RCA American aker. Specially recommended fo rofessional quality sound and pic reproduction of 16mm films, the A PHOTOPHONE is ideal for , education, publicity, commu- elopment and entertainment.

RCA PHOTOPHONE 16mm Projectors are used by Government Departments in their publicity, health, community development, educational, family planning, small savings and defence programmes.

Many school teachers become experts in teaching the audio-visual way. It is so much easier with an RCA PHOTOPHONE—even a student can set up the projector in minutes. School principals and teachers specify the RCA PHOTOPHONE because it is the simplest projector to use and the lightest in weight.

For training workers in the factories, for field publicity, for entertaining labour in the mills—and friends at home—RCA PHOTOPHONE 16mm Sound Projector is most popular with business executives and is widely used by major commercial and industrial organisations.

** Rigid endurance standards have been set for RCA PHOTOPHONE "Life-Tested" Projectors. Individual components as well as finished projectors are subjected to continuous testing to evaluate the durability and efficiency of all operating parts. "Life-Tested" means better and more reliable performance from RCA PHOTOPHONE Projectors.*

SPECIFICA'`ONS

PRO. 350

Pro. o: up t
mediu used (7
AC P irement (w
950 ts (105-125 volts, 50 c
60 cy projectors also a
Projection Lens 51mm; (cc
Film Capacity: 610 metres),
(500 metres (1600') spool su,p.ed).
)perating Speed: 24 frames (sound), 18
ames (silent) per second.
er Cable: 3 metres (10') cable with plug.
r: Induction type
eight: 19 Kg. (41 lb.)
Weight: 22 Kg. (48 lb.)
ions: 42 cm (15½") long, 41 cm (15")
5 cm (10") wide.

PLIFIER (Built into Projector)
ic-Input Gain: 112.5 db. Mic-Phono.
Input: High impedance.
Power Output: 15 watts at less than 5% distortion.
Tubes: 1-7025, 1 ECC 83/12A X 7
3 EL 84/6BQ5
Neon Lamp: 1 NE 2,
Photocell, 1-921
Silicon Rectifier: 2 IN 3194.

SPEAKER IMI 35014

Voice Coil Impedance: 16 ohms.
Field: Ceramic Permanent Magnet
Cone Diameter: 250 mm (10")
Cable: 15m (50 ft.) Two Cond. Cable with Phone Plugs.
Net weight: 8.25 Kg. (19 lb.)
Shipping weight: 11.5 Kg. (26 lb.)
Dimensions: 50 cm (19-5/8") long, 42 cm (15-5/8") high, 23 cm (9¼") wide.

PHOTOPHONE STEP DOWN TRANSFORMER IMI 15008

An ultra light step down Tra er in its capacity range which co to relevant BSS and ISI specificat
Primary voltage: 185—200—21 d

itch—1. OFF plus 5 positions
dary voltage: 115V 50 cycle.
acity: 1500 V.A.
ndary voltage regulation—better than 2.5%. No load to full load.
Meter—0-150v (moving iron)
Weight—12 Kg. (26 lb.)
Shipping Weight—14 Kg. (30 lb.)
Dimensions—17 cm x 18 cm x 23 cm (7" x 7" x 9")

RCA PHOTOPHONE IBA-103 15 W BOOSTER AMPLIFIER

Designed for higher Audio Output of the system in cases where larger audience coverage is required, 30 Watts of Audio power can be obtained by using 1 RCA Photophone IBA-103 Booster Amplifier and one extra RCA Photophone IMI 34014 Speaker Cabinet, in conjunction with the RCA Photophone 16mm projector. Works off the same step-down Transformer as the Projector.

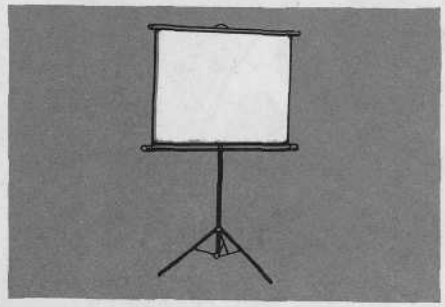

PEARL SCREEN Pearl Screen 132 cm. x 178 cm. (52" x 70") is a portable model with a collapsible tripod. The exclusive "Pearl Finish" screen fabric shows brilliant pictures. An exclusive screen tensioning device is built-in for drum-tight projection surface.

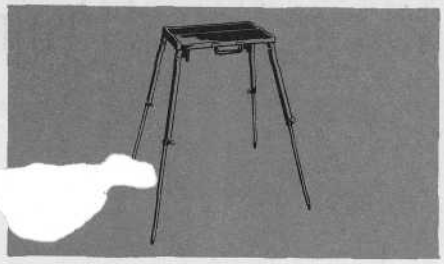

PROJECTOR STAND Designed according to the suggestions of professional users of projectors, the portable stand has adjustable legs which screw-on easily. The complete stand is flat to carry when the legs are strapped for transportation. It is extremely light in weight yet sturdy in construction.

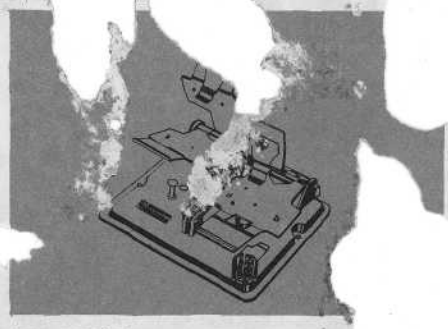

OR YOU C

LPL SPLICER This imported built instrument assures perfect y with easy operation in the spli and cementing of 16mm films. It ke ps the spliced edge narrow to prevent projection irregularities, scrapes film emulsion quickly and easily, gives a smooth finish to the cemented part.

PHOTOPHONE TRAILER For e publicity programmes, this traile e attached to a Jeep or a bullock is designed to house Audio-Visual eq ent, including projector, screen, generat ilms, etc. Sturdy construction ensures dependability. When use of Audio-Visual equipment is not required, it can be detached from the Jeep, which is then free for other uses.

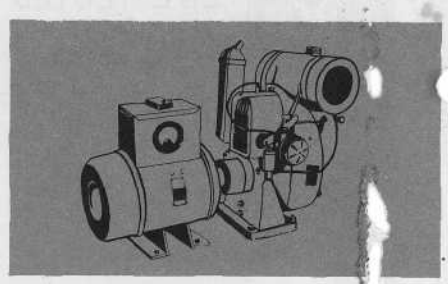

GENERATOR 1.5 KW 230 volts 50 cycles Generating Set comprises of 1½ KW Alternator coupled with Petrol Engine dev loping 4 HP. Switch Box comprises of Vo meter, Voltage Regulator, etc. Weight 0 Kg. approximately.

PHOTOPHONE EQUIPMENTS LIMITED

A SUBSIDIARY OF RADIO CORPORATION OF AMERICA

532 Sardar Vallabhbhai Patel Road, Sandhurst Bridge, BOMBAY 7 WB, INDIA | 4850 Ansari Road 24 Daryaganj, DELHI 6 INDIA

EXPORT DISTRIBUTORS

RCA INTERNATIONAL DIVISION

NEW YORK, U.S.A.

Specifications subject to change without notice.

LEGRAM
EEAREY"

Telephor .23.6038
23.3260

T IONA & F
enera

an S
ALCUTT

Price ist of 16mm e
n 22.9.19

RECOMMENDED ITEMS A COMPLET MM PROJECTION UNIT

following quantities and items are recommended by us for comfor operation and to avoid any possible breakdown for immediate v eplaceable spares. It is also recommended that the stock of se consumable spares may be replenished as and when they are used

Qty.			Unit rate Rs. Ps.	Total Rs. Ps.
1	pc.	RCA 16mm projector with amplifier & speaker suitable for 115 volts A.C.	4,250.00 ~~3,975.00~~	4,250.00 ~~3,975.00~~
1	pc.	RCA variable stepdown transformer 1.5 KVA, input 135 to 245 volts, output 115 volts AC, with voltmeter and tap changing switch	400.00 ~~375.00~~	400.00 ~~375.00~~
	pc.	Portable projector stand	200.00	200.00
	c.	Pearlite plastic screen. 70"x52" with tripod for indoor projection	350.00	350.00
		Cloth screen, cellular, mercerised with eyelets for outdoor projection :-		
1	pc.	12 feet x 9 feet	125.00	125.00
1	pc.	10 feet x 8 feet	95.00	95.00
1	pc.	8 feet x 6 feet	75	75.00
1	pc.	6 feet x 4½ feet		45.00
1	c.	16mm rewinder	65.00	65.00
4	cs.	16mm reels and cans, 1600 ft.	40.00	160.00
2	cs.	16mm reels and cans, 1200 ft.	35.00	70.00
2	cs.	16mm reels and cans, 800 ft.	30.00	60.00
	cs.	16mm reels and cans, 400 ft.	12.50	25.00
	c.	16mm splicer	175.00	175.00
	c.	16mm 16mm tool kit	24.00	24.00
	s.	Exciter lamp 4 volts .75 amps DCPF	12.00	36.00
		Projection lamp		
	s.	1000 watt, 115 volts, P.F. Japanese make	60.00	360.00
	s.	750 watt, 115 volts, P.F. Japanese make	48.00	288.00

Contd.......2.

Qty		Unit [illegible]te Rs. [illegible]s	[illegible] Rs. [illegible]s.
1 bot.	16mm projector oil 4 oz.bottle	4.00	4.
1 bot.	16mm film cement 8 oz.bottle	10.00	10
	OR		
1 bot.	16mm film cement 16 oz.bottle	16.00	16.
2 pcs.	Lower spring belts 219770-L	8.00	16.[illegible]
2 pcs.	Upper spring belts 219769-L	7.00	14.[illegible]
1 copy	service manual for RCA 16mmprojector	15.00	15.[illegible]

RCA MAGNETIC TAPES :

600 feet in 5" reels	40.00	each
1200 feet in 7" reels	60.00	"
1800 feet in 7" reels	80.00	"

OTHER ITEMS FOR AUDIO-VISUAL EDUCATION :

KLEERTONE 35MM FILM STRIP/SLIDE PROJECTOR, TYPE KLSE-300 WITH 300 WATT LAMP AND COOLING ARRANGEMENT .... 445.00 each.

SALES TAX @ [illegible] AND PACKING, FORWARDING, FREIGHT & INSURANCE CHARGES WILL BE CHA[illegible] EXTRA.

[illegible] ct to [illegible]ior sale and availability and the prices are liable t[illegible] changed without notice.

PKN:srd.
23.9.1969.